जमाव मँगवा कर अदालत हाय मु-तअल्लका मे रवाना कर देते। नक़लें जमाबंदियात् को अपने सामने तक़सीम कराते और अपने बक्स में कुल नक़ल तयारशुदा रखते थे, इससे कोई इख़्तयार नक़लनवीस ख़्वाह रजिष्ट्रार क़ानूनगो को तक़सीमनक़लों में बाक़ी न रहा जाँच जमाबन्दियात् के वास्ते इस त-हसील में यह दस्तूर था कि पटवारी लोग बुलाये जाते थे और जब तक वे लोग रजिष्ट्रार की ख़िदमतगुज़ारी न कर लेते बिचारे बला में मुब्तिला रहते। दियानतहुसैन ने इस दस्तूर को भी बन्द कर दिया और पटवारियों को बज़रिये डांक काग़ज़ात भेजने की इजा-जत दी इसमें दो फ़ायदों की उम्मेद थी, अव्वल तो जब रजिष्ट्रार को याफ़्त की उम्मेद जाती रही तो वह दुश्मन की निगाह से जमाबंदियाँ जांच करेगा और ज़रूर ग़लतियां वगैरह निकालेगा इस वजह से काग़ज़ात सहीह और अच्छे दाख़िल होंगे, यह न होगा कि अंधाधुन्ध जैसा पटवारी ने दाख़िल किया रजिष्ट्रार ने पास कर दिया, दूसरे जब पट-वारियों को यह मालूम होगा कि रजि-ष्ट्रार हमारी फ़िक्र में है तो वे भी अपना काम चौकस करेंगे।

मुहर्रिर मुतफ़र्क़ात की आमदनी का इंसदाद।

इस तहसील में यह आम दस्तूर था कि ज़िमींदारान् जब मालगुज़ारी दाख़ि-ल करने आते तो वह क़ब्ल ख़ज़ान्ची के पास जाने के मोहर्रिर मुतफ़र्क़ात् के पास जाते और जबतक मोहर्रिर मुतफ़र्क़ात् अर्ज़ इर्साल पर दस्तख़त न करते थे ख़ज़ान्ची रुपया दाख़िल न करता था मीर दियानतहुसैन ने कतई इस कार्र-वाई को रोक दिया और कोई ज़िमीं-दार मोहर्रिर मुतफ़र्क़ात् के पास नहीं जाने पाता था; दस्तक के तल्बाना का वज़अ करना वासिल बाक़ीनवीस का ख़ास काम था, उसके मुतअल्लिक़ कर दिया गया, दूसरा काम उसके पास तामीरात का था जिसमें बहुत कुछ मिल ने का सहारा था। सड़कें पुल मदर्से उसी के एहतिमाम मे तामीर होते थे, वह हरसाल सदहा रुपये उसमें खा जाता था। अगर दो चार रुपये ख़र्च होते तो सैकड़ों का फ़र्ज़ी हिसाब मुर-त्तब होकर रवाना सदर किया जाता। इस रक़म मे पिछले तहसीलदार भी शरीक थे क्योंकि तनख़्वाह मोहर्रिर मुत् फ़र्क़ात और चपरासियान ऐसी भारी रक़म मुश्किल से हज़म कर सकते थे। मीर

दियानतहुसैन ने अपनी तहसील के लिये दो मंजूरशुदा ठीकेदार कर लिये और तमाम काम अमानी में कराना बन्द कर दिया, सब काम ठीकेदारों के ज़रिये से बनवाना शुरू किया और आम हुक्म दे दिया कि ठीकेदारों को रुपया देने में ज़रा देर न की जावे और वे किसी तरह तङ्ग न किये जांय। उनके काम की निगरानी की दार्ख्वास्त मेम्बरान् डिष्ट्रिक्ट बोर्ड से की जिन्होंने बड़ी मसर्रत् से मंजूर किया और खुद भी काम देखना शुरू किया, इस तरह इस रकम का भी इंसदाद किया।

इसके अलावा और भी मुत्फ़र्रिक रकमें थीं मसलन् नीलाम मवेशियान् या तहरीर इज़हारात बमुकद्दमा दुरुस्ती जमाबन्दी, यह सब काम मीर दियानतहुसैन ने अपने रूबरू कराना शुरू किया, इससे अगर बिलकुल इंसदाद नहीं तो बिला शुबहा मुहर्रिर मुत्फ़र्क़ात् की आमदनी कम होगई। एक रकम मुहर्रिर मुत्फ़र्क़ात् की यह भी थी कि चपरासियान को तकसीम अहकाम में अच्छे बुरे का लिहाज़ रखना था जिन अहकाम में कुछ मिलनेवाला होता ज्यादा उन्हीं चपरासियान को देता था जो इससे मिले हुये थे और जो काफी कीमत उनकी पहले से दे देते थे और खुश्क हुक्मनामे आम चपरासीयों को मिलते थे। यह काम मीर दियानत हुसैन ने जमादार तहसील के सुपुर्द किया और जमादारी का काम हर महीने में बज़रिये कुर्रा अंदाज़ी उन्होंने चपरासियान से लेना शुरू किया, लिहाज़ा इसतरह से इस रकम का भी इन्सदाद हुआ—

वासिल बाकीनवीस की रकम और उनका इन्सदाद।

वासिलबाकीनवीस की तहसील में वाकई इस किस्म की आमदनी है कि जिसका इन्सदाद बड़ी मुश्किल से हो सकता है फ़ी मौजा एक रुपया हर किस्त में वासिलबाकीनवीस को ज़रूर मिलता है और यह रकम इतने ज़माने से जारी है कि अब उसका नाम "हक" पड़ गया, और मामूली हालात के ज़िमेदार तक उससे इनकार नहीं करते। अर्ज़ इसील मुरत्तब करना वासिलबाकीनवीस का काम है जबतक दस्तखत वासिलबाकीनवीस का न हो तहवीलदार रुपया ले नहीं सकता और जिन दिनों थोड़ा काम हो कुछ निगरानी भी वासीलबाकीनवीस

को हो सकती है, मगर जिस के ऐयाम में जब दो दो तीन तीन सौ आदमी एक दिन रुपया दाखिल करने टूट पड़ते हैं तब कोई इन्तिज़ाम मुमकिन नहीं हो सकता, क्योंकि वासिलबाकीनवीस सिर्फ़ तनहा अहलकार मिन्जानिब गवर्मेण्ट मुकर्रर है। न उसको कोई मददगार दिया गया है न नायब, इस भीड़ में वह बहुत वाजिबी जवाब हरएक शिकायत का जो मिन्जानिब ज़िमीदारान् पेश हो दे सकता है। मीर दियानतहुसैन ने निहायतही ग़ौर के बाद हसबज़ैल इन्तिज़ामात तजवीज़ किये।

औव्वल यह कि ज़िमीदारान् को इजाज़त दी जावे कि वे अपना रुपया मालगुज़ारी बज़रिये मनीआर्डर, डांकखाने भेजा करें और उसकी निस्बत पूरी तवज्जह मीर दियानतहुसैन ने की, और वाकई यह तरीका हुक्काम को ऐसा पसन्द हुआ कि बहुत अज़लाअ मे जारी हो गया। ममालिक मगरबी व शुमाली में पंडित सालिकराम साहब बहादुर की कोशिश से यह महकमा बहुत उरूज पर है और मि: दियानतहुसैन की कोशिश से फ़ीरोजनगर भी इस्से मुस्तफ़ीद हो चला। दूसरे ऐय्याम किस्त में तीन चार मददगार रकम तलबाने से मुकर्रर करने की उन्होंने इजाज़त हासिल की और दिन भर में चार मर्तबः वह अपने इजलास से उठकर सिरिश्ते वासिलबाकीनवीस में जाते और ज़िमीदारान् से दर्याफ़्त करते कि कोई बेउनवानी तो नहीं हुई। अगर कोई शिकायत करता उसका फ़ौरन् बन्दोबस्त करते और सिवाय पुराने फ़ैशन् के ज़िमीदारान् के और सब ने यह रकम देना बन्द कर दिया, अर्ज़ इसाल छपी हुई सर्कार से मुफ़्त मिलती थी उनकी क़ीमत ली जाती थी वह भी रोक दी गई।

स्याहानवीस और तहवीलदार।

स्याहानवीस और तहवीलदार के हाथों गरीब रेआया के बचाने की बहुत आसान तदबीर थी। औव्वल यह कि तहवीलदार को अमलों को कर्ज़ न देने दे और न तहसीलदार खुद कभी हीलतन् या शरीहतन् तहवीलदार से एक हिब्बा कर्ज़ ले—दूसरे तहवीलदार और स्याहानवीस और पुलिस गार्ड में जहां तक मुमकिन हो इत्तिफ़ाक न होने दे इस्से एक दूसरे के खौफ़ से कोई बेउनवानी की सूरत नहीं हो सकती। तीसरे दिन में दो तीन मर्तबः तहसीलदार

को वक़्त् फ़ वक़्त् खज़ाने में जाकर रुपया शुमार करना चाहिये, अगर हिसाब से एक पैसा भी ज़्यादा निकले तो तहवीलदार से वाज़पुर्स करना चाहिये क्यों कि तहवीलदार लोग हररोज़ थैली की थैली पैसे बांधकर घर ले जाते हैं। चौथे स्याहानवीस और ज़िमीदारों में सिर्फ़ ताल्लुक रसीद का है उसको निस्वत डांक में रसीद भेजने का बन्दोबस्त करना चाहिये ताकि बिचारे मालगुज़ार रसीद के इन्तिज़ार में तबाह न हों और यही एक ज़रिया है जो स्याहानवीस के ज़ुल्म का बाइस है।

मि: दियानतहुसैन ने बहुत ग़ौर के बाद ये कुल इन्तज़ामात शुरू किये और वह इसमें बहुत कामयाब हुये।

मोहरिर जुडिशियल।

इस तहसील में मोहरिर जुडिशियल वाकई ग़ज़ब अंधेर मचाये हुआ था, इस्का सबब वही था जो पहिले हम कह चुके हैं। कोई दर्खास्त जबतक मोहरिर जुडिशियल और इसके मोहरिरान की भेंट के साथ न पेश की जाय गुज़रना दुश्वार था किसी मुकद्दमे की तारीख जबतक एक रुपया भेंट न दी जाय किसी अहल मुकद्दमें को मालूम होना ग़ैरमुम्किन था, जो ग़रीब नहीं देते थे उनके मुकद्दमे में ग़लत तारीख बतला देता था और तारीख मुआइना पर अदमपैरवी या एक तर्फ़ा फ़ैसले मुकद्दमात हो जाते थे, उसका इन्सदाद ब आसानी मुम्किन था यही मीर दियानतहुसैन ने किया, यानी काज़ (Cause List) मुकद्दमात की नक़ल रोज़ बरोज़ दरेअदालत पर शीशे के सन्दुक में लटकी रहती थी और सब मुकद्दमें की तारीख अहल-मुकद्दमा और वकीलों को बिला तवस्सुत मोहरिर जुडिशियल मालूम हो सकती थी और उसपर सख़्त ताकीद की गई कि कुल्ल मुकद्दमात रोज़ रोज़ उसमें दर्ज हो जाया करें। इजलास पर मोहरिर जुडिशियल का बैठना मीर दियानतहुसैन ने बन्द करवा दिया, सब इज़्हार अपने हाथ से लिखते तमाम इस्तिग़ासा अपने हाथ से लेते थे और तारीख खुद मुक़र्रर करते थे, अमानत लगान के बौचर खुद मुरत्तब करते और अपने रूबरू रुपया तक़सीम करते थे। मीर दियानतहुसैन ने कोई रसूख मोहरिर जुडिशियल को नहीं होने दिया और तमाम रिआया पर साबित कर दिखाया कि उसको कोई अख़्तियार नहीं है। बावजूदे कि मीर दियानत हुसैन की

इस कद्र एहतियात और कोशिश थी लेकिन मोहरिर जुडिशियल साहब की इनायत से वह भी न बचे। मीर दियानत हुसैन फौजदारी मुकद्दमात खारिज बहुत करते थे; मुकद्दमा पेश हुआ और दीवानी की हिदायत करदो। जब मोहरिर जुडिशियल ने यह रङ्ग देख लिया तो मुल्ज़िमान से ठहराना शुरू कर दिया और उसकी वजह यह थी कि अहलमामला बहुत बरसों से मुहरिर जुडिशियल के वाकिफ़कार थे, उनको ज़रा तामुल इसमें नहीं हुआ। चूंकि ऐसे मुकद्दमात थे खारिज तो कर देतेही थे अब भी हस्ब मामूल वे मुकद्दमात खारिज हो गये। इससे ज़िमीदारों को शक हुआ कि मोहरिर जुडिशियल की मार्फ़त शायद तहसीलदार भी लेते हैं, जब इस्की इत्तला उनको हुई फ़ौरन् मोहरिर जुडिशियल को तबदील करा दिया, तब बहज़ार खराबी किसी कद्र रिश्वत का तहसील में इन्सदाद हुआ, यह सब तो हुआ लेकिन् इसका नतीजा क्या हुआ। मीर दियानत हुसैन ने आपको बत्तीस दांतों में ज़बान बना लिया, तमाम अमले तहसील उनके जानी दुश्मन हो गये। एक दिन हनोज़ वह कचहरी न आये थे कि अमलों में यह बात चीत हुई—

वासिलबाकी नवीस—यार आजकल तो ज़माना बहुत नाजुक हो रहा है, लौंडे ने तो आफ़त् ढाह दी।

स्याहानवीस—गंगा कसम पेशाब पाखाना बन्द कर दिहिस, अस तो कतौं न होत होई।

रजिष्ट्रार कानूनगो—"सब्र तलखस्त वलेकिन बरेशीरीं दारद" देखो तो क्या होता है।

मोहरिर मुतफ़र्क़ात्—भाई जान चढ़त हाकिम उतरत गिरह बहुत कठिन होत है।

स्याहानवीस—मुद्दा अखीर इतना है कि शिरिस्तेदार साहब से उनसे नाही बनत, जब मौका मिली वह गबुआ देइहै कि मियां का सुथना ढिला होय जाई।

वासिलबाकी नवीस—भाई चुप रहो ज़माना नाजुक है देखिये इस इनकिलाब का नतीजा क्या होता है।

रजिष्ट्रार—नतीजा क्या है दो चार रोज़ में कोई गुल खिलेगा—

मोहरिर जुडिशियल—मेरी तकदीर देखिये मुझको क्या दिखलाती है, अच्छा

खासा हिसामपुर में था, अब इस बला में मुब्तला हूं—खुदा इज़्ज़त आबरू से निबाह दे तो बहुत ग़नीमत है—

स्याहानवीस--अगर हम सब एक दिल हो जांये तो मियां को एक दिन चलना दुश्वार हो जाय, मुद्दा यह हम लोगों में इत्तफ़ाक़ तो हुई नहीं, देखो शेखसादी क्या कहगये हैं कि - 'दो दिल एक शवद् बिशकुनद् कोह रा'।

वासिलबाकी नवीस--आप इस क़द्र घबड़ाते क्यों हैं। हम लोगों की मदद को तो शिरिस्तेदार साहब तयारही हैं।

मोहरिर मुल्फ़कात्--तो यही बात ठहरी कि उनसे सलाह ली जाय और जो वह हुक्मदें किया जाय।

—***—

बीसवां बाब।

मिः ह्यारिसन् का फ़िरोज़नगर आना।

मि: पिटर्सन के जाने के दो रोज़ बाद सुबह की गाड़ी में मि: ह्यारिसन् तशरीफ़ लाये, किसी को ठीक तारीख मालूम न थी, इस वजह से कोई इस्तकबाल को नहीं गया था। पवनलाल इत्तफ़ाकन् उस दिन किसी ज़रूरत से ष्टेशन को गये थे और जैसेही ह्यारिसन् साहब रेल से उतरे फ़ौरन् जाकर सलाम किया और यह फ़साद लगाया कि सब को आपकी इत्तला थी मगर कोई नहीं आया।

साहब—और तहसीलदार भी नहीं आया?

शिरिस्तेदार--वह जेण्टलमेन हैं उन को इस्तकबाल वगैरह से नफ़रत हैं उन का कौल है कि कलेक्टर और हम सब मल्का मुअज़्ज़मा के नौकर हैं फिर क्या फ़र्क़ है?

साहब--क्या नाम उसका?

शिरिस्तेदार--दियानत हुसैन, उन का बाप बाग़ी सर्कार था।

साहब--कितने रोज से तहसीलदार है?

शिरिस्तेदार--अभी हाल में तो हुये हैं और बड़ी आफ़त् मचा रक्खी है, काम भी अच्छी तरह नहीं चलता। इस फ़िक़रे का मि: ह्यारिसन् के दिल पर इतना बड़ा असर हुआ कि वह उसी वक़्त से दियानतहुसैन के खिलाफ़ हो गये। रास्ते में जा बजा उन्होंने वह तख्तियां देखीं

औ मि: पिटर्सन की जुदाई में लगाई गई थीं रास्ते मे एक जगह उनकी नज़र से यह तख़्ती गुज़री कि 'हमको सिवाय मि: पिटर्सन के कोई नहीं चाहिये'। साहब ने अपनी गाड़ी रोक ली और पूछा कि किसका मकान है—इत्तफ़ाक़ से यह तख़्ती मीर दियानतहुसैन के मकान के क़रीबही लगी हुई थी। इसको सुनकर साहब और भी दिल में नाराज़ हुये। बँगले पर पहुँचतेही चपरासियों से दियानतहुसैन के हालात दर्याफ़ किये चपरासी उनसे जैसे ख़ुश थे वह ज़ाहिरही है। कभी एक पैसा किसी चपरासी को इनाम नहीं दिया और हमेशा बहुत ही ज़िल्लत से चपरासीयों से पेश आते थे।

चपरासी—हुज़ूर वह अभी लड़के हैं बीस बाइस बरस की उम्र है, पिटर्सन साहब की मिहर्बानीसे तहसीलदार हो गये। मिज़ाज में ग़ुरूर बहुत है किसी को कोई हस्ती नहीं समझते और अपने को लगाते बहुत हैं—

साहब—वेल् रामजियावन तुम सब हाल ज़िला का हम को बतलाया करना हम बहुत ख़ुश होता है।

रामजियावन—बहुत अच्छा ख़ुदा वन्द न्यामत।

क़ब्ल इसके कि और हालात बयान हों हमको वाजिब है कि हम मि: हारिसन् के ख़ुल्क़ी आदात नाज़रीन से बयान करें—

मि: हारिसन् एक नौजवान तेज़मिज़ाज अंग्रेज़ थे, इख़्लाक़ बहुत वसीह था लेकिन किसी क़द्र नातजरुबाकार थे—आम राय का बहुत ख़्याल रखते थे और उसके दर्याफ़ का ज़रिया वह हर शख़्स से मुलाक़ात और सरगोशी को समझते थे। चपरासियों की बहुत ख़ातिर करते थे और अपनी नेकी के सबब से उन्हें इतना माद्दह न था कि झूठ सच को तमीज़ कर सकते, उनके मिज़ाज में उजलत् बहुत थी और इसी वजह से अकसर ऐसी बेढंगियां कर बैठते थे कि जिस्से लोगों को बहुत नुकसान पहुँचता था—चूंकि ज़िले का काम कभी किया न था इस वजह से यह अपने शिरिस्तेदार के भी हमेशा पंजे मे रहा करते थे और पर्वनलाल की रेलवाली मुलाक़ात का उनके दिल पर इतना बड़ा असर हुआ था कि उनके ज़ेहन में पर्वनलाल से ज़्यादा किसी की वक़त न थी। रफ़ा रफ़ा मि: हारिसन् की मुख़बिर-पसन्दियां मशहूर हुईं और अब हर शख़्स को उनके यहां जाने की ज़रुरत हुई

और ओक ओक मुलाकाती जाने लगे। दूसरे रोज़ बहुत से मुलाकाती आये और हसब जेल मुलाकातें हुईं।

अव्वल डिप्टी शौकतहुसैन साहब मिले—

साहब—वेल् डिप्टीसाहब आप कितने दिनों से इस ज़िले में हैं?

डिप्टीसाहब—हुजूर फ़िदवी साढ़ेचार बरस से यहां है।

साहब—इस ज़िले में बहुत गड़बड़ है?

डिप्टीसाहब—फिर हुजूर तो वाकिफ़ही हैं मैं क्या इल्तिमास करूं।

साहब—हम सुनता है कोई तहसीलदार यहां बहुत गुरूरी है!

डिप्टीसाहब—हुजूर हां, यह जबसे बिचारे कुदरतहुसैन मुब्तिलाये आफ़त हुये मियां दियानतहुसैन कायममुक़ाम किये गये, अभी मिज़ाज में लड़कपन है और मैं क्या अर्ज़ करूं।

साहब—मगर शिरिस्तेदार यहां बहुत अच्छा मालूम होता है।

डिप्टीसाहब—हुजूर हां, मुंशी पर्वनलाल बहुत लायक आदमी हैं—उनकी क्या बात है।

साहब—अच्छा हम सब इन्तिज़ाम दुरुस्त कर देगा।

डिप्टीसाहब—बेशक हुजूर से यही तवक्क़ः है।

डिप्टीसाहब रुखसत हुये और मुंशी चिरौंजीलाल साहब तहसीलदार हिसामपुर पहुंचे इनसे भी मामूली बातचीत हुई और मौका पाकर उन्होंने भी दियानतहुसैन की शिकायत की। अलग़र्ज़ उस दिन जितने आदमी मिले सभों ने दियानतहुसैन की शिकायतें कीं और उसका बहुत बड़ा असर मि: ह्यारिसन पर पड़ा। शामत अमाल से जिस दिन मि: ह्यारिसन आये उसी दिन दियानतहुसैन को बुखार आगया और ऐसा सख़्त बुखार था कि वह पांच छ रोज़ घर से बाहर नहीं निकले। मि: ह्यारिसन् रोज़ चपरासियों से पूछते थे कि तहसीलदार नहीं आया। चूंकि यह लोग दियानतहुसैन से ईनाम न पाते थे सब नाराज़ थे, उन्हीं ने जड़ दिया कि वह हुजूर को क्या समझते हैं, वह तो पिटर्सन साहब के घमण्ड पर फूले हुये हैं। उसने मि: ह्यारिसन् को और भी दियानतहुसैन से कशीदा कर दिया। चपरासियों ने पर्वनलाल से कुल हालात् बयान किये। पर्वनलाल बहुत

हो खुश हुये और उन्होंने आपस में यही सलाह की कि किसी तर्कीब से साहब को और भी उनसे बर्हम् करना चाहिये और चपरासियों ने वादा कतई कर लिया था कि बहुत जल्द सब इन्तिज़ाम दुरुस्त कर दिया जायगा, साहब को आये अभी एक हफ़्ता भी न गुज़रा था कि रामजियावन चपरासी पर्वनलाल शिरिस्तेदार और मुंशी शौकतहुसैन डिप्टी कलेक्टर साहब के मुंहलगुओं में शुमार होने लगे और यह बात आम तौर पर मशहूर हो गई कि उन्हीं तीनों आदमीयों को साहब के मिज़ाज में दख़ल है बाक़ी अल्ला अल्ला ख़ैर सल्ला—

—***—

इक्कीसवां बाब।

दियानत हुसैन और मि: ह्यारिसन् की मुलाकात।

दस बारह रोज़ बाद जब किसी कद्र मीर दियानतहुसैन अच्छे हुये तो ह्यारिसन साहब की मुलाकात को गये बरामदे तक अपनी गाड़ी ले गये और चपरासी को अपनी मुलकात का कार्ड दिया कि साहब को दे दो—रामजियावन ने कार्ड को फाड़ कर फेंक दिया और कहा कि अभी ठहरिये साहब दो घण्टे में मिलैंगे और उसने यह भी कहा कि तहसीलदार साहब अब पिटर्सन साहब का राज नहीं है—उनको इस बात पर बहुत गुस्सा आया और फौरन् बगैर मिले हुये चले गये और कचहरी में आकर इस मज़मून की चिट्ठी ह्यारिसन् साहब को लिखो—

साहब मन्—

मैं आज आपके बँगले पर मिलने को गया था, रामजियावन चपरासी ने निहायत गुस्ताखी से मेरा कार्ड आपतक पहुंचानेसे इनकार किया और इस वजह से मैं बमजबूरी वापस आया मैं शुक्रगुज़ार होऊँगा अगर आप मुझसे मिलने का कोई वक्त मुकर्रर फर्माइये और उस चपरासी को इस हर्कत की भी कोई सज़ा तजवीज़ फर्माइये। हिन्दुस्तानी शरीफों के साथ ऐसी बेतहज़ीबी चपरासियों को मुनासिब नहीं और इससे हम लोगों को बहुत सदमा पहुँचता है"

आपका फ़र्माबर्दार

दियानतहुसैन।

इस चिट्ठी के पातेही साहब ने लाला पर्वनलाल से मुख़ातिब होकर यों गुफ़्तगू की।

साहब—वेल् पर्वनलाल यह तहसी-

लदार कैसा आदमी है हमारे मिलने को गया और बग़ैर मिले लौट आया।

पर्वनलाल—हुजूर आदमी तो लायक है मगर मिजाज़ मे किसी क़द्र मशीखत ज़रूर है।

रामजियावन चपरासी—जिस वक्त तहसीलदार साहब आये थे हुजूर गुस्लखाने में थे, ताबेदार ने हर्चन्द कहा कि एक लहमा भर ठहर जाइये मगर एक न माना और फ़ौरन् लौट गये और आज उन्होंने हुज़ूर एक ऐसी नई बात की है जो कभी नहीं हुई।

पर्वनलाल—हां ताबेदार ने भी सुना कि वह गाड़ी लिये बरामदे तक चले गये ऐसी गुस्ताखी तो डिप्टी लोग भी नहीं करते है।

रामजियावन—आखिर हुजूर डिप्टी शौकतहुसैन भी तो है वह बिचारे अहाते बाहर गाड़ी से उतरते है।

साहब--हम सब शेखी निकाल देगा अच्छा तुम इस चिट्ठी पर यह हुक्म फार्सी में लिख दो।

हुक्म हुआ कि "बवापसी इसके तहसीलदार को लिखा जाय कि वह कल साढ़े दस बजे हमारे बँगले पर हाज़िर हो और ऐसी खफ़ीफ़ बात लिये के उनकी चपरासी की शिकायत करना जेबा नहीं था।

इस हुक्म को पाकर मिर दियानत हुसैन बहुतही खफ़ीफ़ हुये—तमाम शहर में तरह तरह से इसका तज़किरा हुआ पर्वनलाल वगैरह बग़लैं बजाते थे और मीर दियानतहुसैन इतने रंजीद: थे कि शायद अगर वह नोकरी-पेशा न होते और कोई भी जायदाद उनकी होती तो वह इस्तीफा दे देते, मगर मजबूर थे बिचारे से कुछ करते धरते न बनता था दूसरे दिन साढ़े दसबजे साहब से मिलने गये।

दियानतहुसैन--आदाब अर्ज़।

साहब--सलाम साहब—वेल् आप तहसीलदार है?

दियानतहुसैन--जी हां।

साहब--आप मुझसे मिलने क्यों नहीं आया?

दियानतहुसैन--मुझे बुखार आ गया था इस वजह से मैं हाज़िर नहीं हो सका था—

साहब—अच्छा आप हर रोज़ दस बजे हमारे बँगले पर आया कीजिये और शहर की सफ़ाई की बाबत रिपोर्ट किया कीजिये—

दियानतहुसैन—बहुत बेहतर।

साहब—अच्छा, अब आप रुख़सत हों और पिटर्सन साहब को जो कोई चिट्ठी लिखियेगा तो हमरा सलाम लिख दीजियेगा।

मीर दियानतहुसैन वहां से रुख़सत हुये मगर इस अख़ीर फ़िक़रे को बहुत देर तक सोचते रहे कि यह लफ़्ज़ किस मतलब से इस्तियामाल किया गया। उन ग़रीब को ख़बर न थी कि यार लोगों का पूरा जोड़ चल चुका है और अब मि: ह्यारिसन् से दूध का पानी करना निहायत मुश्किल काम था।

—❊❊❊—

बाईसवां बाब।

दियानतहुसैन और इन्सदाद रिश्वत।

जैसेही मीर दियानतहुसैन अपनी तहसील में हसबुलख़्वाह रिश्वत की रोक कर चुके उनको यह शौक चर्राया कि तमाम ज़िले में रिश्वत का इन्सदाद हो जाय। उनके ख़्याल में यह कोई बहुत मुश्किल और ना-शुदनी अम्र न था। मि: डिलन असिष्टेण्ट कमिश्नर उनके हमख़्याल थे और गो मि: पिटर्सन मौजूद न थे लेकिन् उन्हे यह पूरा भरोसा था कि वह भी इसमें उनके शरीक होंगे उन्होंने अख़ीर हफ़्ते के लिये एक नोटिस शाया किया कि टौन-हाल में सब साहब तशरीफ़ लायें और चन्द अमूर निस्बत इन्सदाद रिश्वत पेश किये जाँयगे चुनांचे ब वक़्त मुआइना टौन-हाल में बहुत लोग जमा हुये तमाम मुअज़्ज़ीन शहर के वकील और रईस लोग हुक्काम हिन्दोस्तानी तशरीफ़ रखते थे, और लाला पर्वनलाल, डिप्टी ब्रजलाल और डिप्टी शौकत हुसैन और मि: डिलन् साहब बहादुर भी रौनक अफरोज़ थे। मि: ह्यारिसन् बावजूद इत्तला तशरीफ़ नहीं लाये थे; सबसे पहिले मीर दियानतहुसैन साहब उठे और उन्होंने हस्ब ज़ैल तकरीर की—

जेण्टिलमेन! आज हमलोग इस ग़र्ज़ से यहां जमा हुये हैं कि अपने मुल्क की दुश्मन, क़ौम की दुश्मन, तरक़्क़ी की दुश्मन् एतबार की दुश्मन्, रिश्वत के इन्सदाद की कोई तदबीर बाहमी सलाह से निकालें। इसमें कुछ शक नहीं कि यह एक बहुत मुश्किल काम है और ग़ालिबन्

मेरे बहुत दोस्त मेरी इस कोशिश को जनून या मालीखौलिया समझे होंगे मगर जेण्टिलमेन न मैं सिड़ी हूं न सौदाई न मुझे जनून है न मालीखौलिया—अलबत्ता मुझे एक दिली रंज है जो अपनी कौम की रिश्वतसतानी सुन कर व देख कर पैदा हुआ है और जो अब जनून की हद तक पहुंच गया है, मगर यह वह जनून है कि जिसको मैं हज़ार अक्ल से अफ़ज़ल और हज़ार सेहत से बेहतर जानता हूं। मैंने एक ऐसे काम का बीड़ा उठाया है जिसको मैं खुद जानता हूं कि चलनेवाला नहीं लेकिन इससे क्या यह ज़ुरूर है कि मैं अपनी हिम्मत हार जाऊँ और पैरों को तोड़कर चुपचाप हो बैठूं? नहीं हर्गिज़ नहीं; जेण्टिलमेन यकीन कीजिये कि अगर आप लोग मेरी मदद फर्मायें और सब मेरे हमख्याल हों जांय तो यह रिश्वत इस तरह दूर हो जाय कि गोया कभी थी ही नहीं; हिम्मत अजीब चीज़ है और किसी एशियाई शायर का यह शेर बेशुबहा काबिल क़द्र है कि—"ब हर कार कि हिम्मत बस्त: गर्दद, अगर खारे बूद गुलदस्ता गर्दद"। यह मैं तसलीम करता हूं कि रिश्वत एक ऐसी पुरानी चीज़ है कि जो इब्तिदाये दुनिया से अब तक मुख़्तलिफ़ रंगों में मुख़्तलिफ़ पैराइयो में रायज़ रही हज़ारों फ़ौजी अफ़सरों ने रिश्वत लेकर अपने बादशाहों के मुल्क खो दिये, हज़ारों गुनहगार रिश्वत के सबब सज़ा पाने से बच गये, हज़ारों बेगुनाह रिश्वत की बदौलत फांसियां पा गये, हज़ारों अमीर ग़रीब हो गये और हज़ारों मोहताज रिश्वत की बदौलत अमीरुल उमरा बन गये। यह सब कुछ तो हुआ लेकिन क्या इससे यह ज़ुरूर है कि हम इसको क़दीम समझकर कोई अच्छी बात समझ लें और इसके बजिन्स रहने की तमन्ना करें? नहीं २ जेण्टिलमेन! मैं कोई वाअज़ या मौलवी नहीं हूं जो ऐसे जल्से में मज़हबी दलायल से रिश्वत की बुराइयां साबित करूं मगर इतना ज़ुरूर कहूंगा कि हमारे खुदा और सब दीन के पेशवाओं ने रिश्वत को मायूब और बुरा लिखा है और राशी और मुर्तशी दोनों को जहन्नुमी बतलाया है। मैं पूछा चाहता हूं कि कोई मज़हब या मिल्लत फिर्का या गरोह ऐसा है कि जिसमें रिश्वत की सख़्त ममानियत न हो? कभी नहीं अब सिर्फ़ देखना यह अम्र है कि हिन्दोस्तान में रिश्वत क्यों ज्यादा रायज है—उसके असबाब चन्द हैं। अौव्वल

यह कि हम लोगों में सोसाइटी का कोई कानून नहीं है, सब लोग आपस में बिला इम्तियाज़ ग़ैर व शक़र है। उसके सबब से बहुत नुकसानात् पैदा होते हैं। सोसाइटी का डर एक अजीब डर है। फ़र्ज़ कीजिये मुसल्मानों में मैख़्वारी ख़ुदा के जुर्म के इलावा सोसाइटी का भी जुर्म है इसलिये उसके करने में हर शख़्स परेज़ करता है; और अगर करता भी है तो छुपाकर। रिश्वत अभी तक हमारी क़ौम में सुसाइटी का जुर्म ख़्याल नहीं किया जाता और यही सबब है कि उसके करने में किसी को कुछ रोक नहीं है। अदने से अदने दर्जे के अहलकार रिश्वत की वजह से शान व शौकत से रहते हैं और सोसाइटी के कोई कानून न होने से हर जल्से में शरीक होते हैं, फिर उनकी क़ौम सबब मानह हो सकता है कि वे रिश्वत न लें। जेण्टिलमेन ! हम हिन्दोस्तानी सब एक जिस्म हैं और उनका रुपया हम सब का ख़ून है पस एक हिन्दोस्तानी भाई से रिश्वत लेना वैसाही शर्मनाक है गोया हम अपने एक भाई की बोटियां नोंच नोंच खाते हैं (बड़े ज़ोर से और चारों तरफ़ से, शर्म शर्म) मैं अपनी तक़रीर को गो मुझे बहुत कुछ कहना बाक़ी रह गया है तूल न दूंगा और मैं यह पहिला रेज़ूलूशन तजवीज करता हूं कि सब अहल्कारान् सर्कार ख़ाह हिन्दू हों या मुसल्मान, काले रङ्ग के हों या गोरे चमड़े के, किरानी हों या डिप्टी कलेक्टर हलफ़ उठायें कि वह आइन्दा से क़तई रिश्वत न लेंगे और जो शख़्स रिश्वत लेता हुआ बाद इस हलफ़ के पाया जावे उस्से क़तई आमदरफ़ खाना पीना तर्क कर दिया जाये; यह हलफ़ कोई मामूली हलफ़ न होगी बल्कि हिन्दुओं को गऊ और मुसल्मानों को सूअर रिश्वत की निस्बत कहना होगा। जेण्टलमेन सबसे पहिले मैं हलफ़ लेता हूं और दुआ करता हूं कि ऐ ख़ुदा मेरी इस क़सम को मज़बूती दे (बुलन्द चीयर्स)।

इस तक़रीर का ख़तम होना था कि मि: डिलन् ने बड़े ज़ोर से तालियां बजाईं और तमाम कमेटी में एक खड़मण्डल मच गया, सब के चेहरों पर हवाइयां छूटने लगीं और अजब शश व पञ्ज में लोग पड़ गये। अगर क़स्में नहीं खाते हैं तो मि: डिलन् सबको बेईमान समझते हैं और अगर क़स्में खाते हैं तो काम चलने की उमेद नहीं है—

मीर दियानतहुसैन के बाद बड़ी बहादुरी से लाला बैजनाथ साहब मुंसिफ उठे

और उन्होंने भी कसम खाई और इतना ईजाद किया कि वकील और मुख़ारों को भी हलफ़ उठाना चाहिये कि वह लोग भी अमलों को रिश्वत न दिलायें।

बहुत लोगों ने शौक से और बहुत लोगों ने शर्मा शर्मी अपनी अपनी मज़हबी क़स्में खाईं और कमेटी 'तारकुल रिश्वत' के मेम्बर बने। डिप्टी ब्रजलाल साहब ने भी हलफ़ ले लिया औ उसी रोज़ से रिश्वत तर्क कर दी, लेकिन मुंशी शौकतहुसैन साहब डिप्टीकलेक्टर और पर्वनलाल सिरिश्तेदार कलेक्टरी ने हलफ़ नहीं उठाया और यह उज़्र किया कि वे लोग आज बग़ैर गुस्ल के हलफ़ उठाने से मजबूर हैं। जब जल्सा करीब खतम था मि: डिलन् ने एक बहुतही पुरअसर तक़रीर की और मीर दियानतहुसैन की काबलियत और ईमान्दारी की बड़ी तारीफ़ की और उनका शुक्रिया तजवीज किया; चुनांचे बाद अदाये शुक्रिया जल्सा बर्खास्त हुआ।

इस जल्से ने सोने में सोहागे का काम किया और मीर दियानतहुसैन से तमाम लोगों को और भी बदहमी पैदा हो गई। उन्होंने भी क़तई तौर पर राशियों के यहां आना जाना बन्द कर दिया। उसी दर्मियान में डिप्टी शौकतहुसैन साहब के लड़का पैदा हुआ और इस तक़रीबमें उन्होंने एक आम दावत की। तमाम हुक्काम ज़िला यानी यूरोपियन अफ़सरान् तक का डिनर था। बहादुर दियानतहुसैन उसमें भी शरीक नहीं हुये और नेवते की फिहरिस्त पर लिख दिया, 'चूंकि डिप्टी साहब ने अभी तलक हलफ़ नहीं उठाया है इसलिये अदब के साथ मुझको इस जल्से की शिर्कत से इन्कार है"—इस तहरीर को देख डिप्टी साहब बहुतही बिगड़े और शेर कालीन बनकर दियानतहुसैन को बहुत कुछ बुरा भला कहा। लाला पर्वनलाल से भी बहुत देर तक इस मामले में सर्गोशी रही, और रामजियावन चपरासी भी बुलाया गया और उससे भी कुछ बातें हुईं।

—***—

तेइसवां बाब।

लाला पर्वनलाल की सिरिश्तेदारी।

मि: ह्यारिसन् के आतेही ज़िले का रङ्ग बदल गया। या तो ज़िले में दियानतहुसैन थे और अब पर्वनलाल की तूती बोलने लगी। तमाम अम्माल दो वक़्त दर्बारदारी करते थे, डिप्टीकलेक्टर तक बराबर पर्वनलाल के यहां आते जाते थे, त-

माम ज़िले के तहसीलदार व इस्लिसनाये दियानतहुसैन के सर्गर्म ख़ुशामद थे। घी, चावल, तख़, कुर्सियां, पलँग सभी चीज़ें सौग़ात में तहसीलदारों के पास से आने लगीं और अब लाला पर्वनलाल सिरिश्तेदारी के ज़ोर दिखाने लगे। तमाम अम्माल की तकर्र्री और तबदीली मि: हारिसन् ने पर्वनलाल के हाथ में दे रक्खी थी और पर्वनलाल तमाम ज़िले को आंख बन्द करके लूटते थे। रामजियावन चपरासी और डिप्टी शौकतहुसैन पर्वनलाल से मिले हुये थे। हमेशा साहब से औरों की बुराइयां करके पर्वनलाल की तारीफ़ कर दिया करते थे और यह तारीफ़ गोया आयते हदीस हो जाती थी। पर्वनलाल ने थोड़ेही ज़माने में यह रङ्ग जमा लिया कि जब कोई जगह ख़ाली होती उसका नीलाम किया जाता, जो उम्मेदवार ज़्यादा क़ीमत लगाता वही कामयाब होता। यह मुम्किनहीं न था कि बग़ैर लाला पर्वनलाल के पूजे कोई शख़्स ज़िले में घुसने पाये। मि: हारिसन् कुछ ऐसे मोम की नाक बन गये थे कि पर्वनलाल जिधर चाहता उनकी तबीयत फेर देता था और सब तहसीलदारों ने पर्वनलाल को दे लेकर राज़ी कर लिया था, लेकिन बिचारे दियानतहुसैन अपनी दियानत और रास्तबाज़ी की बदौलत हारिसन्-गर्दी में बहुतही परेशान थे। कोई उनकी रिपोर्ट ऐसी न होती जिस पर टेढ़ा हुक्म सदर से न आता हो। इसी वजह से दियानतहुसैन ने आम तौर पर सब मुआमलात में और ख़ासकर नौकरी चाकरी के बारे में सिफारिश करना तर्क कर दिया था—पन्द्रह दिन की भी अगर एवज़ी ख़ाली होती तो वह लिख देते थे कि तहसील में कोई उम्मेदवार ऐसा नहीं है जो मुकर्रर हो सके, सदर से एवज़ी तजवीज किया जाय—

पर्वनलाल का आफ़ताबे अक़बाल इस हद को उरूज पर पहुँचा कि आज उनका मिस्ल लियाक़त् ज़ेहानत् और हाकिम की इनायत में दूसरा नज़र न आता था। इत्तफाकिया इस ज़िले की दो तहसीलों में इतना पालापड़ा कि फसल मारी गई–फ़ीरोज़नगर और हिसाम पूर में मि: हारिसन् ने खुद फस्ल देखने का इरादा किया और इस वजह से इन दोनों तहसीलों में दौरा किया। पहिले तहसील हिसामपूर में दौर किया, यहां मुंशी चिरौंजीलाल साहब तहसीलदार थे। उन्हों-ने हरतरह अम्माल और चपरासियों की

खिदमतगुज़ारी की और सब अम्माल मे एक एक महीने की तनख्वाह चन्देसे वसूल करके २००) जनाब शिरिश्तेदार साहब के नज़र किये और इसीतरह सब चपरासियान और मुलाज़िमांन ने साहब कलेक्टर बहादुर की दावत में हस्ब हैसियत नज़र किया। रामजियावन चपरासी का ज़ोरभी काबिलदीद था, वहभी एक खुदाई फ़ौजदार बनाहुआ था, तमाम लोग तहसीलदार व पेशकार सब उस्से डरते थे उसका सबब यह था कि मि: ह्यारिसन् ने अपने सीधेपन से उसको इस दर्जा सिर चढ़ा लिया था कि उसने सब की आफियत तङ्ग कर दी थी। लाला चिरौंजीलाल साहब के इजलास पर एक दिन वह किसी ज़रूरत से गया। तहसीलदार साहब ने सरे इजलास कुर्सी पर बिठलाया और सर्वकद ताज़ीम की। जितने दिन साहब कलेक्टर का लश्कर हिसामपूर में रहा बिचारे चिरौंजीलाल की ग़ज़ब में जान थी, मेहमानी करते २ उनका नाकों में दम हो गया लेकिन उनकी मेहनत ठिकाने लगी और सबलोग हिसामपूर से राज़ी गये और सब ने मौका मौका चिरौंजी लाल की सना व सिफत भी मि: ह्यारिसन् तक पहुंचाई और उसका यह असर हुआ कि बावजूदे कि चिरौंजीलाल की निस्बत मि: पिटर्सन बहुतही ख़राब लिख गये थे लेकिन ह्यारिसन् साहब ने कुछ भी ख्याल न किया। वहां से कूंच होकर साहब डिप्टीकमिश्नर का लश्कर बमुकाम कर्नलगंज आया, यह मुकाम तहसील फ़ीरोज़नगर में एक मशहूर जगह थी और ऐयाम शाही में भी यहां चकलेदार और नाज़िम सब ठहरा करते थे। मि: दियानतहुसैन का पूरा इरादा था कि वह खुद कर्नलगञ्ज न जांय लेकिन दफ़तन् साहब कलेक्टर का पर्वाना आया कि जिसका मज़मून यह था कल "हमारा मुक़ाम कर्नलगञ्ज में होगा, तहसीलदार खुद मय सुपर्वाइज़र कानूनगो लश्कर में हाज़िर हो" इस सबब से यह मजबूर हुये और अलस्सबाह रवाना कर्नलगञ्ज हुये—

उधर सवेरेही से लश्कर के लोग आने शुरू हुये, चपरासियों ने सब सामान जमा कर रक्खा था, हर शै इफ़रात थी सबको बहुत सेर चश्मी से दी गई, हरचन्द सब चीज़ें मौजूद थीं मगर शागिर्दपेशा लोगों ने पर्वनलाल की शह पाकर हुल्लड़ मचा दिया।

भिश्ती—"हुजूर हमारी मशक टूट गई है एक मोची बुलवा दीजिये"—

बेयरा--साहब का बूट मैला हो गया है बूट की स्याही कहीं से मँगवा दीजिये।

खानसामा--शक्कर बावर्चीखाने में नहीं है, शाहजहांपूर का कन्द मँगवा दीजिये—

रामजियावन--साहब ने हुक्म दिया है कि इस वक्त चार कोड़ी मेड़ें भाखा मँगवा दीजिये और जो दाम हो दिया जायेगा—एक मिनट में चार फ़र्मायशों की भरमार बिचारे दियानतहुसैन पर हुई; हनोज़ वह इसका बन्दोबस्त भी न कर चुके थे कि साईस दौड़ा हुआ आया और कहा कि "हजूर, साहब की टमटम का बम् टूट गया है, एक हुसियार बढ़ई और लोहार और सुन्दरी की लकड़ी फौरन् मँगवा दीजिये कि जिसमें आज शाम तक तैयार हो जाय"—

मीर दियानतहुसैन के आये हुये हवास ग़ायब हुये और वह बेचारे इस फ़िक्र में हुये कि ऐ खुदा क्योंकर आज बेड़ा पार होता है—उनको हैरत् थी कि एक बार्गी यहीं सब आफ़तें नाज़िल हुईं, मशक भी फट गई स्याही की डिबिया भी जाती रही, भेड़ों की भी आजही ज़रूरत हुई, शक्कर भी आजही कम हुई, और सब पर तुर्रा यह कि टमटम का बम् भी आजही टूटा। दियानतहुसैन चपरासियों को बुलाकर बम् के लिये हुक्म दे रहे थे कि रामजियावन ने डांट बताई कि तहसीलदार साहब ज़रा जल्दी कीजियेगा, यह पिटर्सन साहब का ज़माना नहीं है, हमारे साहब तहसीलदारों को कान पकड़ कर निकाल देते हैं। यह फ़िकरा सुनकर जो रंज मीर दियानतहुसैन को हुआ होगा उसको नाज़रीन बखूबी अंदाज़ा कर सकते हैं लेकिन बेचारे करते तो क्या करते? उनके मुकद्दर की तरह सारा ज़माना उनसे फ़िरण्ट था, बत्तीस दांतों में ज़ुबान हुये थे। ऐसी हालत में सिवाय इसके कोई चारा न था कि या बर्दाश्त करते और या तर्क ताल्लुक करदें। नौकरी के सिवाय कोई माश न थी, इसलिये बेचारे सब अगेज़ करते थे और हँसकर टाल देते थे। उधर तो यह इन्तिज़ाम में मसरूफ़ थे और वहां का क़िस्सा सुनिये। मि: हारिसन् अपने शामियाने में बैठे हुये कुछ लिख रहे थे कि रामजियावन चपरासी, बुरऊ बेयरा और रमज़ान खां खानसामा तीनों कनात के पास बैठे और इस तरह बातें शुरू कीं कि मि: ह्यारिसन् अच्छी तरह सुन सकते थे—

घुरऊ बेयरा--आज तो खानसामा जी, बड़ा ग़ज़ब हो गया था, बड़ी ख़ैर हुई, नहीं रामजियावन खोपड़ी तोड़ डालता –

ख़ानसामा—गुस्सा तो मुझको ऐसा आया था कि मैं आपे में न रहा था, मगर साहब के मिज़ाज को डर गया –

रामजियावन—भई तुम्हीं इंसाफ़ करो मेरी क्या॰ ख़ता थी, जब हमारे साहब को जिनकी॰बदौलत हम ऐश करते हैं, हमारे बाल बच्चे पर्वरिश पाते हैं, उनको कोई विलायत का भङ्गी बताये तो हमको कैसे गुस्सा न आये?

घुरऊ—नहीं, वह अपने को लगाते भी बहुत हैं अपने बराबर किसी को समझते नहीं।

ख़ानसामा—अजी वह राजा हैं तो अपने घर के, लाठ हैं तो अपने घर के, हम तो जिसका निमक खाते हैं वही हमारा लाठ है।

रामजियावन—अगर मुंशी पर्बनलाल यहां न होते तो बड़ा ग़ज़ब हो जाता, पर्बनलाल को भी बडा रंज हुआ देखो कैसे आदमी हैं किसी से एक क़दाम नहीं लेते–भई धीमे धीमे बातें करो, नहीं साहब न सुन लेवें नहीं तो ग़ज़ब हो जावै।

मि: ह्यारिसन् ने इस गुफ़गू को बहुत ही कान लगा कर सुना, उनसे इतना भी ज़ब्त न हो सका कि कुछ भी सकूत करते उन्होंने फ़ौरन् आवाज़ दी कि 'यहां आओ'–

रामजियावन– हाज़िर गरीब पर्वर!

साहब– वेल् तुमसे आज किस्से लड़ाई हुआ?

रामजियावन--हुजूर किसी से नहीं।

साहब– वेल् सच बतलाओ, कुछ डरने का बात नहीं–

रामजियावन– (बहुतही ख़ौफ़ज़दा सूरत बनाकर और थर थर कांप कर) हुज़ूर मेरी आदत किसी की चुगली की नहीं आज २५ बरस हुजूर लोगों की अर्दली में गुज़रा किसी की लगाई बझाई नहीं की, आगे हुजूर मां बाप हैं।

साहब– वेल् हम पूछता है और तुम नहीं बतलाता, बोल हरामज़ादा स्टुपिड फूल –

रामजियावन — हुजूर मालिक हैं मैं क्या बताऊं, राजा लियाकतहुसैन के बेटे जो तहसीलदार हैं हुजूर को विलायत का भङ्गी बताते हैं और कोई अंगरेज़ी किताब पढ़ पढ़ कर सुनाते थे कि साहब उस देस के मेहतर हैं। तावेदार और मुंशी पर्वनलाल को बुरा मालूम हुआ, मुद्दा हुजूर के डर से चुप चाप हो रहे, अब हुजूर हुक्म दें तो तावेदार अपना खून और उनका खून एक कर दें—

साहब —ओ अच्छा! कुछ पर्वाह का बात नहीं अब अगर वह यहां आवे तो तुम उससे साफ़ कह दो कि वह राजा का बेटा है भङ्गी साहब से उसका मिलना कुछ जुरूर नहीं, या नहीं तुम अभी उससे जाकर कहो कि हमारे लश्कर से चला जावे—

मि: ह्यारिसन् को इस बात का इतना रंज हुआ कि वह अपने खेमे में टहलने लगे और बार बार दांत पीसते थे। बेशक अगर उनका बस चलता तो उसी वक्त दियानतहुसैन को गोली मार देते। मि: ह्यारिसन् के रंज के दो सबब थे, अौव्वल तो वह किसी क़द्र जल्द यक़ीन कर लेनेवाले शख्स थे जो जिसने कह दिया फ़ौरन् यक़ीन कर लिया और दूसरे वह अपनी इज्जत बहुत चाहते थे। इस तरह एक हिन्दुस्तानी का उनको ज़लील बतलाना सख्त नागवार हुआ।

उधर रामजियावन शेर की तरह उहकता हुआ उछलता कूदता पहिले मुंशी पर्वनलाल की छोलदारी में गया और उनसे कुछ कान में कहा कि जिस पर एक बड़े ज़ोर से कहकहा लगा और उसके बाद तहसीलदार साहब के पास आया और कहा कि 'आप इस वक्त तहसील चले जाइये यहां चपरासी लोग सब बन्दोबस्त कर लेंगे और साहब ने कहा है कि इस वक्त हमसे मिलने की कुछ जुरूरत नहीं'। इन ग़रीब को क्या ख़बर थी कि यह जोड़बाजियां हो रही हैं, ये तो इस रुखसती को बहुत गनीमत समझे कि चोरों ने गठड़ी ली बेगारियों ने छुट्टी पाई। ये फ़ौरन् उसी वक्त फ़ीरोजनगर चले आये और कानूनगो को इन्तिज़ाम रसद के लिये छोड़ आये, जैसेही दियानतहुसैन सवार हुये रामजियावन साहब के पास वापस आया—

रामजियावन—हुजूर कह दिया।

साहब—फिर वह कुछ बोला?

रामजियावन — अब हुजूर खोद न पूछें उनके तो पर निकले हैं।

साहब—वेल् क्या कहा ? तुम हमारा डर मत करो साफ़ साफ़ बतलाओ।

रामजियावन—कहिन् क्या घोड़े पर सवार हुये चले गये, इतना अलबत्ता बोले कि हम ह्यारिसन् की क्या पर्वाह करते हैं विलायत के मेहतर यहां जो चाहैं हुकूमत कर लें, विलायत में मल्का टूरिया का पाखाना साफ़ करते २ हाथ घिसते होंगे।

साहब— अच्छा हम समझ लेगा ! रामजियावन अब तुम पूरा पूरा हाल इस बदमाश तहसीलदार का बतलाओ।

रामजियावन—बहुत खूब हुजूर—

नाज़रीन इसको खुद समझ सकते हैं कि इस तहसील में सिरिश्तेदार या चपरासी किसी को कुछ न मिलता था और सब लोग इस सर्द-मेहरी से और भी दियानतहुसैन के खिलाफ़ हो गये थे॥

—***—

चौबीसवां बाब।

दियानतहुसैन मुसीबत में।

दफ़तन् जमाने ने पलटा खाया और एकबारगी दियानतहुसैन और मिस्टर ह्यारिसन् की अन बन की खबरें मशहूर हो चलीं। दियानतहुसैन चन्द मर्तबः साहब डिप्टी कमिश्नर से मिलने गये लेकिन वह हमेशा इन्कार कर देते थे और इन गरीब का सलाम तक न होता था। उनके हर काम पर ऐतराज़ात शुरू हुये। उनका हर फ़ैसला मंसूख होना शुरू हुआ। कोई सीधी बात भी यह करते तो उसपर सदहा एतराज़ होते थे—ये रंग देख कर उनके अम्मास भी उनसे फ़िरण्ट हो गये। अौव्वल तो योंही उनसे नाराज़ थे उसपर तुर्रा यह कि मि: ह्यारिसन् की नाराज़ी ने और भी सब को गुस्ताख़ और बेख़ौफ़ कर दिया। चपरासी तक उनका हुक्म न मानते थे और जब ये किसी पर नाराज़ होते तो वह ऐसा गुस्ताख़ जवाब देता कि यह बिचारे अपना सा मुँह लेकर रह जाते, न उनको यह उम्मेद थी कि उनकी कोई शिकायत असरपिज़ीर होगी न उनको यह तवक्क़ह थी कि उनकी किसी रिपोर्ट पर कोई तवज्जह होगी। उन्होंने अपनी इन सब मुसीबतों का हाल मि: पिटर्सन् को लिखा था मगर उन्होंने यही जवाब दिया कि "सचाई हमेशा फ़तहयाब रहती है तुमको ज़रा भी इस इन्क़िलाब से मुत-

फ़क़ीर न होना चाहिये, खुदा तुम्हारे साथ होगा"।

बिचारे ऐसे परेशान थे कि न उनका कोई यार मददगार था न कोई दोस्त ग़मख़्वार।

तहसील, मुन्सिफ़ी, पुलिस, कलेक्टरी फ़ौजदारी हर महकमे के लोग उनकी दियानत के सबब से उनके जानी दुश्मन और तिश्नाखूं हो रहे थे, मि: हारिसन् भी उनसे सख़्त नाराज़ थे और इस नाराज़ी के सबब से मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर वह मीर दियानतहुसैन को ज़िल्लतें दे चुके थे। मि: डिलन् से उनको किसी क़द्र सहारा था, यह भी उस ज़माने में रुख़सत पर जानेवाले थे, यह एक दूसरा खदशा उनके वास्ते पैदा हो गया था। उससे अच्छा मौक़ा दुश्मनों को अपनी दिली अदावत निकालने का मिल गया था, लिहाज़ा एक दिन लाला पर्वनलाल के मकान पर एक कमेटी हुई। शेख़ कुद्रतहुसैन तहसीलदार मौक़ूफ़ शुदा, मौलवी शौकतहुसैन डिप्टी कलेक्टर, लाला पर्वनलाल साहब सिरिश्तेदार, लाला प्रभुदयाल साहब स्याहानवीस तहसील, ये चारो आदमी एक तख़्लीये में बहुत देर तक बातें करते रहे; थोड़ी देर के बाद प्रभुदयाल वहां से निकले और एक चपरासी को भेजा कि बख्तासिंह ज़िमींदार शरारतपूर को बुला लाओ—बख्तासिंह उस तहसील में एक मशहूर शरीर आदमी था, सदहा बदमाश उसके अख़्तियार में थे, जो चाहता सो करवा लेता था, दूर दूर उसके गरोह के लोग चोरियां करने जाते और सदहा रुपया मार लाते थे। अलावा इसके आपस में जहां किसी से लाग डाँट हुई पचास पचास रुपया रोज़ पर बख्तासिंह की गोल मदद के लिये जाती थी। बख्तासिंह ऐसा शरीर आदमी था कि उसको अपनी आबरू खो देने में कुछ दरेग़ न था और जरी भी इतना था कि उसको अपनी जान की भी पर्वाह न थी। राजा लियाक़तहुसैन खां और बख्तासिंह में एक क़दीम अदावत बाबत ज़िमींदारी के थी और अकसर राजा साहब मरहूम उससे खौफ़ खाया करते थे और वह राजा साहब से—दियानतहुसैन जब तहसीलदार हुये तो बख्तासिंह बहुतही डरा कि यह कहीं अपने बाप के वक़्त की कसर न निकालें, मगर दियानतहुसैन इस दियानत के आदमी न थे कि वह कोई इस क़िस्म का फ़ेल करते जो ख़िलाफ़ ईमान होता।

थोड़ी देर में बख्तासिंह आया और उससे भी तख़लीये में कुछ बातें हुईं और लुटिया में गंगाजल मँगवाया गया—मालूम नहीं कि किसने किसने हलफ़ लिया, थोड़ी देर में सब लोग अपने २ घर चले गये।

दूसरे रोज़ ग्यारह बजे दिन को जैसे ही साहब मजिस्ट्रेट के इजलास में सवालखानी हुई, मिन्जुम्ला और दर्खास्तों के एक यह भी अर्ज़ी निकली।

बख्तासिंह साकिन मौज़े शरारतपूर थाना फीरोज़नगर मुस्तग़ीस—बनाम राजा सैय्यद दियानतहुसैन तहसीलदार फ़ीरोज़नगर थाना फ़ीरोज़नगर मुल्ज़िम जुर्म दफ़ा ३२५ तारीख़ वकूआ जुर्म ११ माह दिसम्बर सन १८ ई० वक्त नौ बजे दिन—

गरीबपर्वर सलामत—

सराहत इस्तग़ासा यह है कि मुस्तग़ीस मौज़े शरारतपूर का ज़िमींदार और नम्बरदार है, चुनांचे मुस्तग़ीस ने अपने ज़िम्मे की मालगुज़ारी बाबत एकसात नवम्बर व दिसम्बर बज़रिये मनीआर्डर तहसील में भेज दिया जिसकी रसीद पास मुस्तग़ीस के मौजूद है मगर मुलज़िम ने जो कि तहसीलदार फ़ीरोज़नगर का है बावजूद अदाये मालगुज़ारी मुस्तग़ीस को चार मज़कूरियां इत्तलामालूम को भेजकर पकड़वा बुलाया और मुबलिग ५१॥)। मालगुज़ारी तलब की। मुस्तग़ीस ने उज्र किया कि मैं आठ आने का लम्बरदार हूं अपने ज़िम्मे की कुल मालगुज़ारी बज़रिये मनीआर्डर के इर्साल कर चुका हूं दूसरे से मुझ से वास्ता नहीं इस पर मुलज़िम ने मुझ से तंगतलबी की, मुस्तग़ीस ने देने से लाचारी ज़ाहिर की इस पर मुलज़िम को गुस्सा आया उठकर दो तीन घूंसे इस ज़ोर से मुस्तग़ीस को मारे कि दो दांत मुस्तग़ीस के टूट गये और शाम तक हिरासत में बेआब व दाना बैठा रक्खा। शाम को जब चपरासियांन व मज़कूरियान तहसील अपने खाने पकाने में मसरूफ़ हुये, मुस्तग़ीस वहां से अपनी जान बचाकर थाने में आया और थाने में जब समाअत न हुई तब बज़रिये दर्खास्त हाज़ा नालिशी हूं कि तदारुक मुलज़िम हस्ब दफ़ा ३२५ ताज़ीरातहिन्द फ़र्मायाजावे अर्ज़ी फ़िद्वी बख्तासिंह, मुवर्ख़ा १२ दिसंबर।

साहब मजिस्ट्रेट बहादुर ने इज़हार तहरीर फर्माया और चिट्ठी के ज़रिये से डाक्टर के पास वास्ते मुलाहिज़ा के

भेजा। इत्तिफ़ाक़ की बात देखिये कि डाक्टर मैकंजी उसी रोज़ शिकार का गये थे और असिस्टण्ट सर्जन इन्चार्ज था, उससे और पवनलाल से निहायत दोस्ती थी और उसको भी दियानतहुसैन से बुग्ज़ हद था, यह मौका उन लोगों को बहुत अच्छा हाथ लगा और असिस्टण्ट सर्जन से रिपोर्ट हस्ब दिलख्वाह लिखवाई—

रिपोर्ट डाक्टर।

"मैंने बखासिंह को मुलाहिज़ा किया, उसके दो दांत साम्हने के टूट गये हैं और यह चोट साम्हने की है और किसी ताक़तवर आदमी के घूंसे की है और दिमाग़ में भी कुछ सदमा पहुंचा है और होठ $\frac{१}{२}$ इंच चौड़ा, $\frac{१}{४}$ इंच गहिरा और १ इंच लम्बा फट गया है यह ज़ख्म हमारी राय में संगीन है"—

साढ़े तीन बजे डाक्टर की रिपोर्ट पहुंची, जब तक अस्पताल से रिपोर्ट नहीं आई मि: ह्यारिसन् ने दो तीन मर्तबः उसको दर्याफ़्त किया और जिस वक्त से यह दर्खास्त गुजरी वह मारे खुशी के फूले नहीं समाते थे, अब रिपोर्ट आई उसको बहुत ग़ौर से पढ़ा 'वेल् यह तो बड़ा भारी मामला है, सिरिश्तेदार से कहा और दूसरे दिन सुबह के लिये हस्ब दफ़ा ३२५ पिनलकोड मीर दियानतहुसैन को बज़रिये सम्मन् अपने इजलास में तलब किया और गवाहान सुबूत के लिये कोर्ट इंस्पेक्टर को हिदायत की कि हाज़िर करे। यह सम्मन साढ़े पांच बजे शाम को उसी रोज़ मीर दियानतहुसैन पर तामील किया गया। उसको देखते ही दियानतहुसैन को सख़्त हैरत हुई, पहिले यह समझे कि यह सम्मन किसी और के नाम का है, धोखे से उनके पास लाया गया है लेकिन जब ग़ौर से पढ़ा तो मालूम हुआ कि नहीं उन्हीं के नाम है, मुस्किराकर सम्मन ले लिया, और दूसरे पुश्त पर दस्तखत कर दिये। अब तमाम शहर में दूसरे दिन सुबह के लिये तैय्यारियां हो रही हैं। मीर दियानतहुसैन सख़्त तरद्दुद में थे कि खुदावन्द यह क्या मामला है, वह खूब समझते थे कि न उन्हों ने किसी को मारा न किसी के दांत तोड़े। इतने में उनके चन्द अहबाब आये—

एक— जनाब सैय्यद साहब! कुछ सुना आपने! आपपर एक नालिश हुई।

दियानतहुसैन— हां भई, मेरे पास अभी सम्मन आया है मगर इसरार कुछ समझ में नहीं आता!

दूसरे— किब्लः ये फ्रीमेशन के से भेद हैं, भला बख्तासिंह की यह मजाल थी कि वह कोई हर्कत इस किस्म की करे? मगर— "कोई माशूक है इस पर्दये ज़ंगारी में" वल्लाह! अब भी होशियार हो जाइये—

तीसरे— यह मुकद्दमा डिप्टी शौकत-हुसैन और पर्वनलाल की सलाह से हुआ है—

दियानतहुसैन— नहीं जी, उनको भला कौन ऐसी ग़र्ज़ थी कि वह ख़ाहमख़ाह ऐसा तूफ़ान खड़ा करते—

तीसरे— जनाब आपतो इन्हीं बातों से ख़राब होते हैं, आप इतना नहीं समझते कि बख्तासिंह की इतनी जुरत हो सकती है?

एक— हज़रत! आप किसी को वकील करने की फ़िक्र कीजिये, साहब ज़िला आपसे बरहम् हैं, ख़ुदा ख़ैर करे।

दियानतहुसैन— भाई साहब, सचाई हमेशा फ़तहयाब रहती है, हक़ का राज़ी अल्ला है, मैं अपने मामलात में हमेशा ख़ुदा को वकील किया करता हूं—

दूसरे दिन दस बजे, मि: हारिसन् अपने इजलास पर आये और आतेही बख्ता सिंह बनाम सैय्यद दियानतहुसैन वाला मुकद्दमा पेश हुआ। मिन्जानिब बख्तासिंह, मि: लोअर बैरष्टर ऐटला, लाला मदनमोहन सहाय, लाला गौरी लाल, बाबू अम्बाप्रशाद वगैरह वगैरह करीब तीस चालीस आदमीयों के वकील व मुख़्तार थे। ग़रीब दियानतहुसैन की तरफ़ से उस वक्त कोई न था, सिर्फ़ दो तीन मुसलमान ख़ुदापरस्त इधर उधर लगे हुये थे कि अगर ज़रूरत होगी तो फ़ौरन् मुख़्तारनामा दाख़िल करेंगे। तमाम कचहरी वकीलों से खचाखच भरी थी और यह अजीब बात थी कि बुरी ख़बर उतनी जल्द मशहूर होती है जो समझ में नहीं आती। बहुत से दूर दूर के ज़िमींदार और रईस इस मुकद्दमें की ख़बर सुन कर आये थे और सब कचहरी के गिर्द जमा थे। आम लोग बख्तासिंह पर लानत मलामत करते थे। फ़ीरोज़-नगर की अदालत मजिष्ट्रेटी में यह दूसरा थियेटर था जिसमें एक तहसीलदार ष्टेज पर आता है, लेकिन इस थियेटर और उस थियेटर में ज़मीन अस्मान का फ़र्क़ था। उसमें एक बेईमान, ज़ालिम,

राशी तहसीलदार मायूब था और उस्की ज़िआनें देख देख कर पब्लिक को खुशी होती थी और इसमें एक आली-खानदान तालीमयाफ़ा मुह्ब्बिकौम और मुतदैय्यन शख्स मुलजिम है और उसकी बेकसी पर तमाम ज़माना रो रहा है उसमें ष्टेज मेनेजर एक मुनसिफ़ मिजाज और समझदार शखस था जोअपनी खिदमत से वाकिफ़ था और इसमें एक नातजरुबाकार गुस्सावर आदमी है कि जिसको यह भी नहीं मालूम कि किस तरह ऐकटरों से सलूक किया जाता है।

ग्यारह बजे मुस्तग़ीस का इज़हार शुरू हुआ उसने बड़ी काबलीयत से अपने इस्तग़ासे के मुताबिक इज़हार दिया, उसके बाद लाला प्रभुदयाल स्याहानवीस रामानन्द मुहर्रिर मुतफ़र्कात् और पण्डित काशीनाथ नायब तहसीलदार और चन्द चपरासियान तहसील का बतौर गवाहान सुबूत इज़हार हुआ; उन लोगों ने भी बड़ी तर्रारी से गवाही दी, जब पण्डित काशीनाथ का इज़हार हुआ तो उस वक्त मीर दियानतहुसैन अलबत्ता किसी क़दर बदहवास हुये और वह अब समझे कि यह क्या हो रहा है और कहां तक उस का नतीजा होगा। उनको बदहवास देखकर बाबू कीरतचन्द्र घोस वकील हाईकोर्ट और मौलवी कमरअली वकील ने फौरन् मीर दियानतहुसैन की तरफ़ से वकालतनामा दाखिल किया और इस तरह से सवालात जिरह किये कि बिलकुल शहादत एक दूसरे से मुख़्लिफ़ हो गई और पण्डित काशीनाथ के इज़हार से यह बात भी अच्छी तरह साबित हो गई कि उन लोगों को मिः ह्यारिसन् की नाराजी का और डिप्टी शौकतहुसैन की खफ़गी का पूरा पूरा इल्म है। डाक्टर के बयान से भी यह अम्र मशकूक हो गया कि सैय्यद दियानतहुसैन के जिस्म व कूवत का आदमी ऐसी चोट नहीं पहुंचा सकता था, मगर साहब मजिष्ट्रेट की राय में फ़र्द जुर्म मुरत्तब करना ज़रूरी मालूम हुआ और उन्हों ने सैय्यद दियानतहुसैन का जवाब तहरीर करना शुरू किया।

"मैंने हर्गिज़ बख्शासिंह को नहीं मारा, बख्शासिंह मेरी तहसील में मालगुज़ार ज़रूर है लेकिन उसने इस्साल अपनी मालगुज़ारी बज़रिये मनीआर्डर नहीं भेजी बल्कि उसने खुद २४ नवम्बर को तहसील में दाखिल किया उसका दूसरा पट्टीदार निहालसिंह भी अपनी माल-

गुज़ारी २८ नवम्बर को दाखिल करचुका ११ दिसम्बर को मैंने हर्गिज़ बखासिंह को नहीं तलब किया, और न मैंने उसको देखा। ११ वीं दिसम्बर को मैं सुबह से दो बजे तक मि: डिलन् के साथ था, उन की रवानगी का इन्तिज़ाम करता रहा। और रेल तक उनको पहुँचाने गया था। हुज़ूर आली यह इस्तग़ासा मुझ पर मिन्जानिब बखासिंह नहीं है बल्कि इसकी वजह मेरी बदकिस्मती और हुज़ूर की नाराजी और मेरे हमकौम दोस्तों की मिहर्बानी है—

साहब— वेल हम ग़ैरमुत्तल्लिक बात नहीं सुनना चाहता—

दियानतहुसैन— बहुत अच्छा आप न सुनिये, मैं आपके कानोंको बिला वजह अपनी फ़र्याद से तकलीफ़ देना नहीं चाहता—

साहब— वेल् तुम्हारा कौन गवाह है?

जवाब— बाबू केशवचन्दर सेन ष्टेशनमाष्टर व मि: डिलन् असिष्टण्ट कमिश्नर और जुम्मन खां होटल कीपर।

अलगर्ज़ मीर दियानतहुसैन ने इस्म-नवीसी गवाहान सफ़ाई दाखिल की, और उसमे मि: डिलन् असिष्टण्ट कमिश्नर बाबू केशवचन्द्रसेन ष्टेशनमाष्टर और जुम्मन-खां होटल कीपर फ़ीरोज़नगर का नाम लिखवाया। साहब मजिष्ट्रेट ने निहायत बेरुखी से मि: डिलन् का तलब करना नामञ्ज़ूर किया और कहा कि साहब पहाड़ पर है आप मुकद्दमे को मत बढ़ाइये हम मि: डिलन् के बुलाने से इन्कार करते हैं क्योंकि कोई फ़ायदा नहीं मालूम होता; अच्छा ष्टेशनमाष्टर और जुम्मन-खां खानसामां तलब किये जांय, और मुकद्दमा कल फिर पेश हो, और मुलज़िम ५००) की ज़मानत पर रिहा रहे। उसी वक्त ५००) की ज़मानत बाबू कीर्तिचन्दर घोश ने करली और सबलोग अपने अपने घर गये—

दूसरे दिन जब मीर दियानतहुसैन का मुक़द्दमा पेश होनेवाला था उसीदिन सुबह को मि: ह्यारिसन् से मिलने को बहुत लोग गये, मीर दियानतहुसैन के मुक़द्दमे का सबसे तज़किरा रहा, जो कोई जाता मि: ह्यारिसन् खुद बखुद पूछते थे कि तहसीलदार वाले मुक़द्दमे की असलीयत क्या है? उनके मिलनेवालोंने जो को बतलाया हम बिल्-तफ़सील ज़ैल में बतलाते हैं—

डिप्टी शौकतहुसैन-- हुजूर मुकद्दमे के सच होने में ज़रा शक नहीं; मीर दियानतहुसैन गो बहुत लायक और ईमान्दार आदमी हैं लेकिन खुदावन्द हद से ज्याद: मग़रूर हैं और समझते हैं कि 'हम चु मन् दीगरे नेस्त'। लड़के तो हैंही गुस्से में मार बैठे, ऐसा नहीं चाहिये था। खुदावन्द न्यामत हिल्म अजब चीज़ है, हुजूर खुद गौर फ़र्मायें कि मुंशी पर्वनलाल साहब कैसे माकूल और लायक़ शख्स हैं तमाम ज़माना उसका मद्दाह है, और मीर दियानतहुसैन से मालूम नहीं क्या सबब सभी शाकी हैं।

पर्वनलाल--हुजूर ताबेदार ने सुना कि हाईकोर्ट में हुजूर की शिकायत का तार दिया गया था और कई कौंसली बुलाये गये है, ताबेदार ने यह भी सुना कि मीर दियानतहुसैन, हुजूर पर हतक इज्ज़त की, अगर मुकद्दमे से बरी होगये तो नालिश करनेवाले हैं। खुदावन्द न्यामत! दियानतहुसैन बड़े लायक और बड़े रईस है अफ़सोस गुरूर ने उनको चौपट कर दिया।

शेख बदरुद्दीन--(लोकल फण्ड कलेक्टर) मैंने हुजूर कुछ नहीं सुना लेकिन हुजूर ने बग़ैर अस्लीयत सम्मन काहे को जारी किया होगा--"ता न बाशद् चीज़ के मर्दुम न गोयद् चीज़ हा"

करम खां--(इंस्पेक्टर डाकखाना)--हुजूर को पक्की खबर मिली, तहसीलदार साहब ने मारा ज़रूर, और हुजूर अगर न मारते तो इतना बडा मुअज्ज़िज़ ज़िमींदार ऐसी नालिश करके अपनी बेइज्ज़ती किस लिये कराता; हुजूर के इन्साफ़ की शहर में धूम है मगर हुजूर के सिरिश्तेदार ईमानदार आदमी हैं।

पुलिस इन्स्पेक्टर फ़िरोज़नगर--

हुजूर को बड़ा सच्चा मुक़द्दमा मिला, तहसीलदार साहब ने ज़रूर मारा, उन का घमण्ड ही बहुत था, क्या किसी को कुछ समझते थे, हुजूर यह हिन्दोस्तानी जितने अंगरेज़ी कपड़े पहनते है अपने बराबर किसी को नहीं लगाते। ऐसेही कायमगंज में मियां दिलदारअली तहसीलदार भी बहुत बांके टेढ़े रहते थे कार्माइकेल साहब नाराज़ हुये, फ़ौरन् जेलखाने भेज दिया सीटफ़टाक भूल गये। हुजूर अब लाला पर्वनलाल को तहसीलदार कर दें, उनसे बेहतर दूसरा शख्स ज़िले में नहीं है।

नाज़रीन् ख्याल करने का मुकाम है कि किस तरह हिन्दोस्तानी लोगों ने मि: ह्यारिसन् की महज़ झूठी खुशामद में पर्वनलाल की तारीफ़ और ग़रीब दियानतहुसैन की बुराई की। मि: ह्यारिसन् को पूरे तौर पर मुकद्दमें की असलीयत का यकीन हो गया; इंस्पेक्टर साहब पुलिस ने सज़ा भी समझा दी और तहसीलदारी का इन्तिज़ाम भी कर दिया, करमखां इंस्पेक्टर डाकखाना और इंस्पेक्टर पुलिस से किसी तरह मीर दियानतहुसैन को कोई अदावत या लाला पर्वनलाल से कोई तखमीस न थी लेकिन यह 'फ़ैशन् आफ़ दी डे' हो रहा था कि लोग मि: ह्यारिसन् से मिलने जाते थे और उनके खुश करने को हस्ब मन्शा उनकी बातें कर आते थे।

इस मुकद्दमे की घर घर चर्चा होती थी और हज़ारों आदमी रिआया और रऊसा दस्त बदुआ थे कि खुदा दियानतहुसैन का साथी हो, उनकी बेकसूरी हर शख्स के ज़बांज़द थी, लेकिन तमाम आला व अदने मुलाज़िमान सरकार को यह फ़िक्र थी कि यह वार खाली न जावे। बाबू कीरतचन्द्र ने मीर दियानतहुसैन को सलाह दी कि मुकद्दमा मुन्तकिल करा लिया जाय, गो मीर दियानतहुसैन यह कहते थे कि सचाई हमेशा कामयाब होती है—

तु पाक बाश बिरादर् मदार अज़ कस बाक
ज़नन्द जामये नापाक गाज़ुरां बर सङ्ग।

लेकिन बाबू साहब ने यह फ़र्माया कि दुनिया आलम असबाब है इस कलयुग में हमेशा सचाई नहीं चलती, हाकिम आप से नाराज़ है मुकद्दमें का मुन्तकिल हो जानाही बेहतर है। चुनांचे इसी फ़िक्र के लिये बाबू साहब ने इन्साफ़नगर जाने का कस्द किया जैसेही स्टेशन पर पहुंचे रेल छूट गई और उस वक्त जो सदमा कीरतचन्दर को हुआ वह शायद उनको कभी नहीं हुआ था, फ़ौरन् बाबू साहब ने साहब सेशन जज के यहां तार दिया जिसका मज़मून यह था "दियानत हुसैन तहसीलदार बिला कुसूर मुब्तिलाये मुसीबत है, मि: ह्यारिसन् उनसे नाराज़ है; मुकद्दमा मुन्तकिल कर दीजिये"—इस तार का यह जवाब आया—"तार की दर्खास्त पर मुकद्दमा मुन्तकिल नहीं हो सकता है; सायल को अपील का हक़ हमेशा हासिल है"।

दूसरे रोज़ फिर १० बजे मुकद्दमा पेश हुआ, इस रोज़ का हुजूम तामाशाइयों

की रेल पेल देखने से तालुक रखती थी। बिचारे मीर दियानतहुसैन की वालिदा खुद पालकी में सवार होकर कचहरी आई थीं। हरचन्द दियानतहुसैन ने मना किया था लेकिन उन्होंने न माना; पालकी एक दरख्त के नीचे रक्खी हुई थी, हज़ारों आदमी दस्त बदुआ थे कि ऐ खुदावन्द इस रईसज़ादे पर रहम कर–साहब के आतेही मुक़द्दमा पेश हुआ– पहिले बाबू केशवचन्द्र का इज़्हार शुरू हुआ–

मैं फ़ीरोज़नगर का ष्टेशन मास्टर हूं– ११ दिसम्बर को मि: डिलन् दो बजे की रेल में सवार हुये थे और १ बजे ष्टेशन आये थे। सैय्यद दियानतहुसैन और मि: डिलन् एकही गाड़ी में आये थे और जब तक मि: डिलन् सवार नहीं हुये थे ष्टेशन पर रहे उससे पेश्तर का मैं कुछ हाल नहीं जानता।

खानसामा ने भी यही बयान किया, बाद इख़्तिताम शहादत गवाहाने सफ़ाई वकलाये फ़रीक़ैन ने तक़रीरें कीं–

मि: लोअर बहुतही थोड़ी देर गुफ़्तगू करके बैठ गये और लोगों से आहिस्ते से यह कहा कि एक बेगुनाह के मामले में मजबूर हूं ज़बान यारी नहीं देती–

इसके बाद मि: कीरतचन्द्र ने बड़ी फ़साहत के साथ दो घण्टे तक बहस की और हर पहलू से मुक़द्दमे को बनाया हुआ साबित किया, लेकिन हुज़ूर मि: हारिसन् साहब बहादुर से लोगों ने मुक़द्दमें की असलीयत इस तरह यक़ीन दिलाई थी कि वह कुछ भी ख्याल न करते थे और आखिरकार फ़रीक़ैन की बहस सुनकर उन्होंने सैयद दियानतहुसैन को मुजरिम क़रार दिया और एक साल क़ैद सख्त और ५००) जुर्माने की सज़ा दी, और यह हुक्म सुनाकर फ़ौरन् गाड़ी पर सवार होकर बँगले चले गये–

—***—

पचीसवां बाब।

क़ैदी दियानतहुसैन।

नाज़रीन्, एक मुसन्निफ़ के लिये यह बहुत सख्त मुक़ाम है, अफ़सोस वह रईसज़ादा जिसके हाथों में फूलों का ज़ेवर बार हो वह डेढ़ पाव की वज़नी हथकड़ियां पहने! जिसके पैरों में सोने के कड़े भी बोझ थे उन्हें वज़नी बेड़ियां जकड़ी हुई हैं। यह नौनिहाल गुलशन् जिसका बाप अमीर इब्न अमीर, और जिसका दादा उसी शहर का हाकिम

हो, वह इन्क़िलाब ज़माने की बदौलत इस बेकसी से जेलखाने जाता है। जिस की शादी की तैयारियां थीं उसके जेल-खाने की बारात सज रही है। हज़ारों बुड्ढे जवान औरत मर्द सभी सुसराल पहुँचाने को हमराह हैं और तुर्ही के बदले हर तरफ़ शोरो बुका है और हर शख्स शकल अखगर खाक आलूदा है जो है फ़र्तसीनाज़नी से सीना कबूद है, आतशबाज़ी के बदले चेहरों पर हवाइयां शहनाई के एवज़ लबों पर वावेला है और गीतों के एवज़ सब लोग नालाकुनां हैं। हैं है वह शख्स जो आज के एक दिन पहिले इस शहर का हाकिमि फौज-दारी था जो खुद मुजरिमों को जेलखाने भेजता था आज खुद कैदी बना हुआ जा रहा है।

मीर दियानतहुसैन ने जिस वक्त से क़ैद का हुक्म सुना एक सकते की हालत में थे, न रोते थे न चिल्लाते थे, न बातें करते थे न शोर व गुल मचाते, चुपचाप सकूत के आलम में बराबर अपने तईं देखते थे और खुदा की क़ुदरत पर ग़ौर करते थे। जिस वक्त उनको जेल ले जाते थे लाला पर्वनलाल के इशारे से पुलिस ने उनको शहर में होकर ले जाना चाहा हनोज़ थोड़ी दूर ले चले थे कि हज़ारहा आदमियों का हजूम हुआ और बराबर फूलों की बारिश उन पर होने लगी, जिस रास्ते से निकले सदहा गुलदस्ते उन पर फेंके जाते थे; गवर्मेण्ट कालेज के तालिबइल्मों ने उस वक्त मातमी लिबास पहिने और नंगे पैर जेल तक पहुंचाने को उनके हमराह हुए। तमाम बाज़ार वालों ने दुकानें बन्द कर दीं, शहर में एक क़यामत बर्पा हो गई, तमाम रऊसाय शहर इस मज़लूम क़ैदी के साथ थे, कचहरी कलेक्टरी से जेल के दर्वाज़े तक आदमियों का तांता लगा हुआ था। जेल के फाटक पर बाहर मीर दियानत-हुसैन ने सब को आंसू भरी आंखों से देखा और यह कहा कि—

अब तो जाते हैं बुत्कदे से मीर
फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया।

नाज़रीन यों तो वह कौन फ़र्द बशर था कि जो इस बेगुनाह क़ैदी से पूरी हमदर्दी नहीं रखता था। वह कौन इन्सान था जिसने इस मुसीबत पर रंज नहीं किया वह कौन सी आंख थी जिस ने उस ग़म में आंसू नहीं बहाये, वह कौन सा जिगर था जो इस नागहान आफ़त पर शक नहीं हुआ—उनकी मां

की मुहब्बत भी क़यामत की मुहब्बत हुई है और बड़ी रानी साहबा का हाल भी एक अजीब हसरतनाक वाकया है। जैसे रानी साहबा ने अपने बावक़ार बेटे के क़ैद होने का हाल सुना गश आ गया, बेहोश हो गई—तमाम मामाओं ने पालकी के गिर्द एक अजीब शोर व फ़ुगां बर्पा किया। थोड़ी देर में खुद बखुद होश में आई और यों रोना शुरू किया—

रानी साहबा—मेरी जान मेरे लाल अम्मां तुम पर वारी, ऐसी बेमुरौअती इख़्तियार की कि ज़िन्दान सिधारने से पहिले बुढ़ी अम्मा के दीदार से भी महरूम रक्खा! बेटा मेरी ज़िन्दगी के दिन पूरे हो गये! मेरा जीना तुम्हारे दम तक था! तुम्हारे अब्बा के मरने के बाद तुम्हें देख देखकर अपना कलेजा ठंढा करती थी! है है मुझ रांड दुखिया को आज बेवारिस भी होना पड़ा! अरे लोगों मेरे लाल को मुझतक तो ले आओ! कह दो कि अम्मा गोर किनारे है! आख़िरी दीदार तो दिखा जाँये—दूल्हा देखने की अर्मान तो रही सही क़ैदी के लिबास में तो अम्मां को दीदार दिखा जाओ! लोगों दिन दिहाड़े मल्का के राज में मेरी छब्बीस बरस की कमाई लुटी जाती है! मेरे ख़ानदान का नाम ख़ाक में मिला जाता है! क्या लोगों क़ैदी होने से बाल भी सुफ़ेद हो जाता है, मेरा लाल मुझे देखने नहीं आया"—

हरचन्द सब लोग समझाते थे लेकिन बड़ी रानी साहबा का बुरा हाल था—उनके बैन ज़मीन हिलाये देते थे—इतने में मीर दियानतहुसैन ने लोगों से कहा कि मुझे मेरी मां को दिखला दो। पहिले लोगों ने पशोपेश किया मगर फिर कुछ रहम आया और मीर दियानतहुसैन को पालकी के पास जाने की इजाज़त दी—जैसेही मीर दियानतहुसैन वहां पहुंचे रानी साहबा ने पालकी से निकलकर अपने लख़्तजिगर को चिपटा लिया और इस तरह रोना शुरू किया कि उफ़! उफ़!—बेटा तुमतो ज़िन्दान सिधारते हो मुझ नसीबोंजली को किसके सुपुर्द किया! मेरी कौन खबर लेगा! मैं किसको देखकर अपना कलेजा ठंढा करूंगी! मुझे कौन सुबह उठकर सलाम करने आयेगा! है है यह गर्मी यह लू तुम जेलखाने सिधारो—बेटा मुझको भी साथ लेता चल—

दियानतहुसैन--अम्मा सब्र करो, ख़ुदा मालिक है जिसने यह मुसीबत

डाली है वही उसकी दफ़ा भी करने वाला है, अम्मा खुदा के लिये पालकी में जाओ—तुम्हारा इस तरह बाहर निकल आना मुझे हमेशा खून रुलायेगा—

रानी साहबा—जब तुम्हीं ज़िन्दान सिधारते हो तो मैं मूये पर्दे को लेकर क्या करूंगी—मेरी इज्ज़त आबरू आज जब सभी का खातमा हुआ जाता है तो एक अकेला पर्दा रहा तो क्या!—

इतने में कांष्टेबों ने ज़बरदस्ती मीर दियानतहुसैन को वहां से हटा लिया और जेल ले चले—फिर तो उस वक्त रानी साहबा ने जिस तरह से क़यामत बर्पा की है ख्याल करने से आंसू निकल पड़ते हैं—

मामाओं ने बहज़ार खराबी पालकी में बिठलाया और तमाम लोगों ने खास कर राजा मुनौअर अलीखां साहब ने हाज़िर होकर दस्तबस्ता उनकी तशफ़्फ़ी की और उनको यक़ीन दिलाया कि आप ज़रा न घबरायें मीर दियानतहुसैन ज़रूर बरी हो जांयगे। रानी साहबा बहज़ार दुश्वारी मकान गईं—उस रोज़ उनकी हालत देखकर हर शख्स बिलबिला उठा। थोड़ी देर में सैय्यद दियानतहुसैन को जेल में ले गये। जब वह अन्दर जाने लगे सब लोगों ने उनकी पूरी तस्कीन की, बड़े ज़ोर से उनकी रिहाई की दुआयें मांगी गईं॥

छब्बीसवां बाब।

दियानतहुसैन जेलखाने में।

जिस वक्त सैय्यद दियानतहुसैन जेल में पहुंचे तमाम कैदियों में हलचल पड़ गयी और हर शख्स उनको देखने दौड़ा। जेल में यह दस्तूर है कि जब कोई नया कैदी आता है उसको सब कैदी मिलकर बिलावजह गालियां देते हैं मारते हैं और तरह २ की अज़ीयत पहुंचाते हैं लेकिन मीर दियानतहुसैन से इस क़िस्म की कोई बेउनवानी किसी कैदी ने नहीं की बल्कि सब अश्ख़ास ने उनकी अफ़सोस-नाक हालत पर इज़हार तास्सुफ़ किया।

थोड़ी देर में उनके बाल काटे गये सचाई के ईनाम में जो सर्कार से ख़िलअत अता हुआ था यानी लिबास-ज़िन्दान वह उनको पहिनाया गया और एक बारिक में रहने को जगह दी गई—

दियानतहुसैन के जेल में आते ही अहलकारान जेल में अजब ख्याली पुलाव पकने लगे—

दारोग़ा—वल्लाह! बाद मुद्दत यह

सोने की चिड़िया हाथ आई है जितनी ही अज़ीयत इसको आज पहुंचेगी उतनाही कल फ़ायदा होगा।

जुम्मन् बर्कन्दाज़—दारोग़ा साहब! आप ज़रा आंख बदल लीजिये फिर देखिये क्या होता है, पूरा एक तोड़ा न वसूल हो तो मेरा नाम जुम्मनखां न रखिये—

मदारखां बर्कन्दाज़— नहीं हुज़ूर ऐसा न फ़र्माइये, यह बड़े रईस का बेटा है, आज उनका दिन बिगड़ गया तो थोड़ा रहम करना चाहिये—

दारोगा— अजी कैसा रईस! उसका सा पाजी दूसरा देखा भी है? तमाम ज़माना सर पर उठा लिया था। पूछिये दुनिया रिश्वत लेती थी उसके बाप का इजारा था, उस मर्दूद से मैं जब तक अच्छी तरह न ले लूंगा हर्गिज़ न मानूंगा—

जुम्मन्— अजी क्या यह पिटर्सन् साहब का राज है! दारोगा साहब! आप बे लिये न छोड़ियेगा।

दारोगा— अजी देंगे और बेंच खेत देंगे, नहीं तो कलही चक्की पर लगा दूंगा सब राजकी भूल जायगी।

ये बातें हो रही थी कि इतने मे राजा मुनौवर अली खां साहब आये और दारोगासाहब को अलहिदा ले गये—

राजासाहब— दारोगा साहब! आप जानते हैं कि आज आपके ज़िन्दाम में हमारा यूसुफ़ आया है, उसकी इज़्ज़त उसका वक़ार, उसकी बेमुजरमी उसकी बेक़ुसूरी कौन कौन बात को रोऊं। आप को मालूम है कि तमाम खिलक़त उसके ग़म में आज मातमी है और मैं यक़ीन करता हूं कि आपको उनसे हमदर्दी होगी, बहरहाल ऐसा इन्तिज़ाम कीजिये कि उनको तकलीफ़ न होने पाये।

दारोगा साहब—राजा साहब! आप जानते हैं कि हालही में पिटर्सन् साहब तमाम जेलको दर्हम् बर्हम् कर चुके हैं; मि: ह्यारिसन् साहब की जो बरहमी तहसीलदार साहबसे है वह मोहताज बयान नहीं, ऐसे वक्त में जनाब आप मुझको माफ़ कीजिये, बन्दा अपनी नौकरी मीर दियानतहुसैन पर निसार नहीं कर सकता—

राजा साहब— ऐसा ग़ज़ब न कीजिये, है है आप को तर्स नहीं आता।

दारोगा साहब— सुनिये जनाब

हम लोग बगैर अपना हक़ लिये इस किस्म की कोई बात नहीं कर सकते, हम लोगों को याफ़्त आपही लोग जब फंस कर आते हैं तब होती है। अगर आप को मंजूर है कि दियानतहुसैन साहब आराम से रहें तो एक हज़ार रुपया पहिले को नजर कीजिये वर्ना कल से चक्की का काम उनसे लिया जायगा।

राजा साहब को इस बेहूदा तक़रीर पर इस दर्जा गुस्सा आया कि उनकी आंख से आंसू गिर पड़े लेकिन बेचारे करते तो क्या। करते फिक्र के हो के सिफ़ारिशी बनकर और अहलमन्द, होकर वह जेल के मालिक के सामने गये थे, सिवा इस किस्म के जवाब के और क्या तवक्क़ो रख सकते थे। उन्होंने बहुतही भर रुंधे दिल और पुरआब चश्म से यों जवाब दिया—

राजा साहब—दारोगा साहब! मुसीबत के दिन हमेशा नहीं रहते—

दारोगा--जनाब हम चन्दही रोज़ में काम तमाम करदेंगे।

राजा साहब-जनाब खुदा न करे इसकी नौबत क्यों आने लगी- मैं जो आपने फ़र्माया है देने को हाज़िर हूं और यह ५००) नजर है क़बूल फ़र्माइये।

दारोगा साहब ने खुशी खुशी राजा साहब का अतीया क़बूल किया और राजा साहब को इतमीनान दिलाया कि मीर दियानतहुसैन को किसी किस्म की तक्लीफ़ न होगी, और बाद इसके दारोगा साहब अपने दफ़्तर में फिर आये।

उम्मन कहिये जनाब क्या ठहरी?

दारोगा-- कुछ भी नहीं, हमारी राय में भी बिचारे तहसीलदार वाजि-बुलरहम हैं।

नायब दारोगा— इसमें कुछ शक नहीं राजा साहब औव्वल तो रईस दूसरे नेकबख्त हम सबको उनकी खिदमत करना चाहिये।

दारोगा-- नेकबख्त तो न कहो, है तो एकही मूजी लेकिन हमसे क्या मतलब। हमारी खातिरदारी तो अच्छी तरह हो गई, अब हम तकलीफ़ न देंगे।

नायब दारोगा--खातिरदारी क्या मानी, आप उनसे कुछ मुतवक्क़ह हैं?

दारोगा-- मुतवक्क़ह! वाह इसको देखो (नोट दिखलाकर) लेभी आये और लुत्फ़ यह कि लेभी लिया और फिर भी नाकों चने न चबवाऊँ तो सही—

नायब दारोगा — दारोगा साहब! मीर दियानतहुसैन से लेना शरीफ़ का काम नहीं और वल्लाह आप यह रुपया फेर दीजिये नहीं तो मेरे आपके रंज हो जायेगा –

दारोगा — तो क्या आप मुखबिरी कीजियेगा?

नायब — अब मैं क्या अर्ज करूं कि क्या करूंगा, गजब खुदा दियानत हुसैन से रिश्वत लीजाय तोबा!! तोबा!!

अलगर्ज़ अहलकारान् जेल में गो अकसर मूज़ी बदज़ात बेरहम थे लेकिन नायब जेलर और दो चार खुदातर्स बर्कन्दाज़ दियानतहुसैन के हमदर्द भी थे।

चुनांचे नायब दारोगा और बर्कन्दाज़ मीर दियानतहुसैन के पास गये, देखा कि यह ज़मीन पर बैठे चुप चाप रो रहे हैं, आंसू बेइख्तियार जारी हैं और रोते रोते आंखें सुर्ख़ हो गई हैं बकौल कुल्क–

रोते रोते सुझाई हैं आंखें।
कोई जाने कि आई हैं आंखें।

नायब जेलर — तहसीलदार साहब आप हर्गिज़ रंज मत कीजिये, यह सब मुसीबत कट जायगी, हम सब आपकी खिदमत को तैयार हैं, अब को ग़रीबखाने से जो कुछ नान निमक आये उसको नोश फ़र्माइये और पलङ्ग मैं भेज दूंगा उसपर आराम कीजिये –

बर्कन्दाज़ — हुज़ूर को देख २ हम सब रंजीदा हैं खुदा अपना रहम करेगा।

दियानतहुसैन — मैं आप लोगों का अज़हद शुक्रगुज़ार हूं कि मुझ बेकस मुसीबतज़दा को आप इस गाढ़े वक्त में भी मेहमानदारी फ़र्माते हैं लेकिन आप ख्याल कीजिये कि अगर मेरी किस्मत में यह मुसीबत न होती तो मैं जेल क्यों आता? मैं खुदा से लड़ना नहीं चाहता जो उस्की मर्ज़ी है वह मैं ज़ुरूर बर्दाश्त करूंगा।

नायब जेलर--अजी जनाब यह आप क्या फ़र्माते हैं इस में कुछ हर्ज नहीं है सुबह को पलंग उठवा दिया जावेगा। डाक्टर साहब के आने तक आपको क़ैदी की तरह रहना होगा, उसके बाद आप बराबर आराम से रहिये और राजा मुनौअरअली खां साहब भी आये थे और सब इन्तिज़ाम कर गये हैं।

दियानतहुसैन--मुंशी साहब यह कितनी शर्म की बात है कि आदमी

जिस हाल में हो उससे चोरी कोई काम करे, जिस तरह सब कैदी रहते हैं उस तरह मैं भी रहूंगा, अगर वह जौ की रोटी और बैंगन खांयगे तो मैं भी वही खाऊँगा – मुझ से सड़क कुटवाइये सड़क कूटूंगा चक्की पिसवाइये चक्की पीसूंगा, अब तो मैं कैदी हूं ज़रूर कैदी बनकर रहूंगा और कैदी की तरह रहूंगा।

सब लोग उनकी दर्दनाक तक़रीर सुनकर रोने लगे और निहायत इसरार किया कि आप खुदा पर भरोसा रखिये वह ज़रूर रहम करेगा –

यहां लाला पर्वनलाल से किसी ने खबर पहुँचा दी कि राजा मुनौअरअली खां मीर दियानतहुसैन के आराम का जेल में इन्तिज़ाम कर आये हैं। वह फ़ौरन् साहब मजिस्ट्रेट के पास दौड़े गये और उनसे इत्तला की कि हुजूर मुझको मोतबिर तौर पर मालूम हुआ है कि सैय्यद दियानतहुसैन ने बहुत सा रुपया जेल में बांटा है और उनके आराम का सब बन्दोबस्त हो गया है, पलंग पर सोये हुये हैं –

मि: ह्यारिसन् को उसका पहिले से शक था वह फ़ौरन् जेल चले आये और फाटक खुलवाकर दियानतहुसैन के पास गये देखा कि वह बदस्तूर रो रहे हैं --

मिः ह्यारिसन्--वेल् आप मजे में आराम से है ?

दियानतहुसैन--जी हां बहालत मौजूदा मुझको कोई तकलीफ़ नहीं है खुदा का शुक्र है।

मिः ह्यारिसन्--अब आप समझा विलायत का भङ्गी क्या कर सकता है ? अच्छा आप मज़े से यहां रहिये, लिखना पढ़ना तो आप जानता था सड़क कूटना चक्की पीसना भी अब सीख जाइयेगा, गुड नाइट !

यह कह कर मि: ह्यारिसन् वापस आये और जेलर को बुलवाकर यह हिदायत की कि अगर ज़रा भी खता पाई जाय तो दियानतहुसैन को पूरी सज़ा की जाय –

दारोगा--हुजूर बहुत बेहतर – हुजूर ने बड़ा इंसाफ़ किया, बड़ा पाजी था।

अलकिस्सा सैय्यद दियानतहुसैन ने बड़ी बहादुरी से जेल के मुसीबतों को बर्दाश्त किये और उसी हालत में उन्हीं ने कुछ अशआर अपने हस्ब हाल लिखे थे उन में से चन्द हम ज़ैल में रक़म करते हैं –

ताज़ीर फ़लक ने यह बढ़ाई।
सोने को मिली है यक् चटाई॥
खाने को चने की सूखी रोटी।
कपड़ों के एवज़ मिली लँगोटी॥
चादर है यहां न है दुशाला।
कम्बल मिला यक् काला काला॥
सागर के एवज़ मिला है लोटा।
वह भी मिट्टी का टूटा फूटा॥
डर है कि मरूं जो इस मह्न् में।
कम्भल न मिले कहीं कफ़न् में॥
हूं दफ़न् बगैर गुसल बेहतर।
नहलायें न लाश मेरी मेहतर॥
अल्लह रे मेरी बेहयाई।
इस पर भी न मौत मुझको आई॥
अब तो दिया ऊखल में सर है।
मूसल् से नहीं हमें खतर है॥
फ़कड़ छूटेंगे हम सरे राह।
देखेंगे जो कुछ दिखाये अल्लाह॥

—***—

सत्ताईसवां बाब।

दियानतहुसैन की रिहाई।

उधर जेलसे लौटतेही तमाम रऊसा और रिआया ने जा बजा कमेटियां कीं और आठ बजे शब तक मीर दियानत हुसैन की अपील के लिये दसहज़ार रुपया चन्दा जमा होगया और उसी वक्त साहब सेशन जज और नवाब लफ़टेनेण्ट गवर्नर बहादुर के पास तार दिये गये। वाकई फ़ीरोज़नगर के लिये यह पहिला दिन है कि ऐसा आम सदमा किसी वाका: की निस्बत कभी हुआ हो। उसी दिन शबकी रेल में बाबू कीर्तिचन्द्र राजा मुनौअरअलीखां और नीज़ बहुत से रऊसा और महाजन अपील व रिहाई की गर्ज़ से अज्जी को रवाना हुये। दूसरे दिन दर्खास्त ज़मानत बइजलास साहब सेशन जज बहादुर दाखिल की गई, और साहब जज ने बाबू कीर्तिचन्दर की ज़बानी कुल हालात सुने और इलावा इस के कचहरी आने के पहिलेही वह कुल किस्स: सुन कर बहुत अफ़सोस कर चुके थे। फिल् फ़ौर पच्चीस रुपये मुचलके पर रिहाई का हुक्म दिया और एक हफ़्ते में अपील दाखिल करने की हिदायत की। यह हुक्म बाबू कीर्तिचन्द्र के हाथ उसी वक्त रवाना ज़िला किया गया, चुनांचे दो बजे की ट्रेन में बाबू साहब मौसूफ़ व तमाम मुअज़्ज़ीन फ़िरोज़नगर वापस आये और साढ़े तीन बजे दिन को मीर दियानतहुसैन पच्चीस रुपये के मुचलके पर रिहा हुये। उनके जेल से लाने के पहिले बड़ी तैयारियां की गईं और सबलोग

बाजा बजाते और गीत गाते उनको जेल से घर तक लाये साहब जज्जके इस मुन्सिफ़ाना हुक्म की शहर में बड़ी क़द्र व मंज़िलत की गई। मुख्तलिफ़ अखबारों में इस्का तज़किरा छपा और आम तौर पर अंगरेज़ी हिन्दी व उर्दू अख़बारात में मीर दियानतहुसैन को बेगुनाह और इस मुकद्दमे में को बिलकुल बनावट बतलाया और मि: हारिसन् हर फ़िर्के में इस बेइन्साफ़ी की बदौलत् जो हिन्दोस्तानियों के बहकाने से उनसे सर्ज़द हुई थी निहायत ही हिक़ारत की निगाह से देखे जाने लगे। मीर दियानतहुसैन जेल से आतेही पहिले अपनी मां के पास गये उनके गोया तने बेजान में जान आ गई उसके बाद अपने तमाम दोस्तों से मिले और सब लोगों को जिन्होंने उनसे हमदर्दी की थी निहायत शुक्रगुज़ारी की। बड़ी कोशिश से तीन दिन में नकल तज्वीज दस्तयाब हुई जिस्का तर्जुमा हस्ब ज़ैल है —

तर्जुमा —

बहासिंह एक मुअज्जिज़ जिमींदार फ़ीरोज़नगर को सैय्यद दियानतहुसैन तहसीलदार हुजूर तहसील ने बेसबब इस बेरहमी से मारा कि दो दांत टूट गये। डाक्टर की शहादत से यह अम्र साबित है कि यह दोनों दांत हाथ की चोट से टूटे हैं और अहलकारान तहसील और मोहर्रिर मुतफ़र्क़ात् व नीज़ पंडित काशीनाथ नायब तहसीलदार के बयानात से बखूबी साबित होता है कि ज़रूर दियानतहुसैन ने बहासिंह को मारा और दियानतहुसैन का जवाब है कि वह तारीख मुतनाज़ाको मि: डिलन् के रुखसत करने को स्टेशन पर गया था और उसने मि. डिलन् को तलब् कराना चाहा लेकिन हमारी राय में यह तलबी महज़ ऐयाम गुज़ारी की गर्ज़ से है लिहाज़ा हमने इन्कार किया। स्टेशन माष्टर और होटल के खानसामा के बयानात से दियानतहुसैन की कोई सफ़ाई नहीं होती. मुम्किन है कि मि: डिलन् के पहुंचाने को बाद इर्तिकाब इस जुर्म के दियानतहुसैन गयाहो। दियानतहुसैन एक निहायत मग़रूर बदमिज़ाज और बदचलन आदमी है। हम उस्से बहुत दिनों से नाराज़ हैं और तमाम अहलकारान ज़िला फ़ीरोज़नगर उसके शाकी हैं, हम ऐसे आदमी के साथ कोई रियायत करना पसन्द नहीं करते, लिहाज़ा हम हुक्म देते है कि वह एक साल कैद

सज़ा रहे और पांच सौ रुपया जुर्माना दे वर्ना छ माह दीगर –

यह तजवीज़ ऐसी कमज़ोर और पुर अज़ तास्सुब थी कि जिसके देखते ही वकला ने मीर दियानतहुसैन को मुबारक बाद दी और सबको कामिल यक़ीन हो गया कि अगर खुदाने चाहा तो यह फ़ैसला ज़रूर मंसूख़ हो जायगा। हनोज़ अपील दायर नहीं हुई थी कि मिः पिटसन् और मिः डिलन् दोनों ने मीर दियानतहुसैन को हमदर्दी के तार भेजे और मिः डिलन् ने यहभी लिखा कि आप मुझको जज साहब के इजलास में तलब कराइये मुझको खूब याद है कि आप ११ दिसम्बर को सुबह से दो बजे तक मेरे साथ रहे और बल्कि हाज़िरी भी आपने मेरेही बँगले पर खाई थी। इन तारों की वजह से और भी तक्वीयत हुई और बड़ी धूम धाम से अपील दायर की गई। वजूहात अपील मिः साइक्स बैरिष्टर और बहुत से वकलाये हिन्दोस्तानी के मश्वरे से लिखे गये और उसमें मिः डिलन् पर मुकद्दमें का ज्यादा ज़ोर दिया गया और डाक्टर की शहादत और गवाहान के बयानात के इख़्तिलाफ़ात और मिः हारिसन् को खुद नाराज़ी सब अमूर अच्छी तरह दिखलाये गये थे।

तारीख़ पेशी के रोज़ मिः साइक्स और जुम्ला वकलाये अपीलान्ट ने बड़ी लियाक़त के साथ बहस की और मीर दियानत हुसैन का बत्तीस दांतों में ज़ुबान होना कमेटी इन्सदाद रिश्वत करना और राशियों से परहेज़ करना जुमला हालात को बहुतही शरह और बस्त के साथ बयान किया और जो तार मिः डिलन् ने बनाम सैयद दियानतहुसैन भेजा था वह भी जज साहब को मुलाहिज़ा कराया और इलावा इसके बहुत से अख़बारात अंग्रेज़ी हिन्दी और उर्दू मुलाहिज़ा कराये गये जिनमें इस मुकद्दमे के मुफ़स्सल हालात शाया हुये थे जिससे अदालत अपील को पूरा इत्मीनान बेजुर्मी सैय्यद दियानतहुसैन का हो गया और कोई ज़रूरत ज्यादा कारवाई की न देखकर सैय्यद दियानतहुसैन को काबिल इज़्ज़त बरी किया, अख़ीर फ़िकरा उनकी तजवीज़ का हम नाज़रीन के मुलाहिज़े के लिये नकल करते हैं –

"इसमें कुछ शुबहा नहीं कि दियानत हुसैन पर जो ज़ुल्म वहां की हिन्दोस्तानी सोसाइटी की बदौलत हुये हैं यह एक ऐसी मिसाल है जिससे सब मुत्तदैय्यन् लोगों को सबक लेना चाहिये। दियानत

हुसैन के वाकिआत बेशक बहुतही का-बिल इबरत हैं और जिस बेईमानी से फ़ीरोज़नगर के लोगों ने इस मुकद्दमें को मुरत्तब किया वह बहुत कुछ काबिल त-वज्जह गवर्मेण्ट है। मुझको मि: ह्यारिसन् जैसे लायक और तजरुबेकार मजिस्ट्रेट से बहुत ताज्जुब है कि वह क्यों ऐसे फ़रेब. में आ गये और अपने हाथसे एक ऐसा जुल्म किया कि जिस्की दूसरी नज़ीर शा-यद इस अमलदारी में मुशकिल से मिल सके; हम उनसे ख़ाहिश करते हैं कि वह अपनी पहिली फ़ुर्सत में इन मामलात में अज़ सरे नौ तहकीकात करें और उन बेईमान अशखास को जिनके सबब से एक मग़रूर मुत्तईयन् को इसकद्र तकलीफ़ और बेइज़्ज़ती गवारा करनी पड़ी सज़ा दें। हम खुश होंगे अगर लच्छासिंह पर दफ़ा २११ ताज़ीरात हिन्द और उसके मदद-गारों पर अयानत दफ़ा मज़कूर और गवा-हान पर दफ़ा १८३ का जुर्म कायम करके मिन्जानिब सर्कार पैरवी की जाये—

इस हुक्मके पहुँचने पर मि: ह्यारिसन् को बहुतही शर्म हुई और उन्होंने फ़ौरन् दियानतहुसैन को बहाली का हुक्म दिया और मुकद्दमें में पूरी तफ़तीश का वादा किया। उसी दिन शबको मि: ह्या-रिसन् के यहां डिनर था।—डाक्टर मै-क्रेडी, मि: हावर्ड, मि: जोज़ेफ़ और पादरी साहब शरीक थे और वहां इसी मुकद्दमे का कुछ तज़किरा हुआ—

डाक्टर— ह्यारिसन् इसमें शक नहीं कि तुमसे यह बड़ी गलती हुई, दियानत-हुसैन कतई बेगुनाह है।

मि: जोज़ेफ़—और बेशक जिस दिन वह कैद हुआ हम समझे बलवा हो जायेगा, हज़ारों आदमी रोता था।

ह्यारिसन्— और बड़ी रानी साहब का रोना देख कर तो मुझे खुद बड़ा रंज हुआ, अच्छा बतलाओ कि यह मुकद्दमा किसने बनाया और असलीयत क्या है?

मि: हावर्ड— अगर मुझसे असली-यत पूछते हो तो मुझे खौफ़ है कि तुमने ज़रूर बेइन्साफ़ी की मुझको तहकीक मालूम है कि यह मुकद्दमा बिलकुल ब-नाया गया और सिवा तुम्हारे फ़ीरोज़-नगर मे कोई दूसरा शख्स नहीं है जो इस मुकद्दमे से पूरा वाकिफ़ न हो—

ह्यारिसन्— लेकिन मुझसे डिप्टी शौकतहुसैन और पर्वनलाल शिरिश्तेदार ने दियानतहुसैन को कुसूरवार बतलाया।

हावर्ड — वह लोग क्यों न कुसूरवार बतलाते उन्हीं के तो विष बोये हुये हैं, उन्ही लोगों ने यह मुकद्दमा बनाया और अगर तुम रामजियावन से यह सब हाल पूछोगे तो शायद वह भी बतलावेगा जिस दिन तुमने दियानतहुसैन को कैद किया था उसीदिन रामजियावन ने खुद मुझसे कहा कि यह बिलकुल बनाया हुआ मुकद्दमा है।

डाकूर मैकेंडी — दियानतहुसैन के मिस्ल कोई तालीमयाफ़्ता और मुत-दैय्यन् हिन्दोस्तानी मेरे नज़र से नहीं गुज़रा।

ह्यारिसन् — मुझको खुद बहुत अफ़सोस है कि मेरे हाथ से एक बहुतही होनहार आदमी को नुकसान पहुंचा, लेकिन इसमें मेरा ज़रा भी कुसूर नहीं। अच्छा मैं रामजियावन को बुलाता हूं। चुनांचे रामजियावन बुलाया गया और और साहब ने उससे पूछा कि "रामजियावन तुमको गङ्गा का कसम है अगर कुछभी छिपाओ,बतलाओ दियानतहुसैन का मुकद्दमा कैसे उठा और कौन बात सच्ची है।

रामजियावन — हुजूर हम का जानें बड़े आदमी की बात कौन कहै।

मिः हावर्ड — तुमने हमसे खुद पूरा हाल बयान किया अब किस लिये छिपाता है?

अलगर्ज़ रामजियावन ने बाद रद्द व कदह! फिसियार पादये अफू तकसीरात् यों बयान करना शुरू किया! "हुजूर! राजा दियानतहुसैन अस लायक और दियानतदार हाकिम मुशकिल है, जे दिन से नौकर भये एक टका घूस नाहीं लिहलें। सब लोग ख्वार ख्वार रहे, और जे दिन से कि तहसीलदार साहब डिप्टी सौकत हुसैन के बेटवा के मुंडन में नाहीं गये सब अमला उनसे अकाय ग्वात रहे और सब की कौंसल से बख्तासिंह देस के उठाई गीर ठाढ़ कर दीन गा। अस अन्धेर फौ-रेजलगर जिला में कभौं नाहीं भा रहा। मुंसी पर्वनलाल ऐसन बेईमान दबायें २ तहसील के बेमानन से गवाही दिवाइन और अब का सर्कार के तहकीकात से कौनो बात छिपल रही"?

रामजियावन ने विलायत के चट्टी वाला किस्सा साफ़ साफ़ बतला दिया और कहा कि यह भी हस्बसलाह पर्वनलाल के उससे तकसीर हुई थी।

ह्यारिसन् साहब ने अपना सर पकड़ लिया और इसकद्र रंजीदा हुये कि शायद

कभी न हुये होंगे। मिः ह्यारिसन् एक आ-ली खानदान और नेकनिहाद आदमी थे लेकिन किसी कद्र जल्दबाज़ और सीधे थे हर शख़्स की बात को बहुत जल्द यक़ीन करलेते थे। जब उनको यह क़िस्सा मालूम हुआ तो वाक़ई उनका इन्क़ियाल बहुतही क़ाबिलख्याल था। मिः ह्यारि-सन् ने इस मामले में पूरी तहक़ीक़ात का मुसम्मम इरादा किया और बचासिंह पर दफ़ा २११ ताज़ीरात हिन्द का मुक़-द्दमा क़ायम करके एक तारीख़ पेशी मुक़-र्रर की।

—⁂—

अट्ठाईसवां बाब।

दियानत हुसैन और मिः ह्यारिसन की फिर मुलाक़ात।

अपील से बरी होनेके बाद सैय्यद दि-यानतहुसैन फिर अपनी तहसीलदारी पर फ़ौरन् बहाल हुये;उनकी इस बहाली की खुशी ऐसी न थी जो क़ाबिल तह-रीर न हो। घर घर बाजे बजते थे औरतें मन्नतें भरती थीं कहीं खुदाई रात का सामान था, कहीं इमामबाड़े में रो-शनी होती थी, कहीं मौलूद शरीफ़ की तैयारियां थी, मस्जिदों में शुक्राने की निमाज़े बहुत शान व शौकत से अदा की गईं। हिन्दू रियाया ने सत्यनारायण की कथा कराई और बहुत से सिक्खों ने बाबा नानक शाह का कढ़ा पर्शाद चढ़ाया। सदहा मुक़ामात से मुबारकबाद के तार आये, हज़ारों जगह से ख़त आये, बहुत से अख़बारों ने बहुतही खुशी के साथ उस मुन्सिफ़मिज़ाज जज के इन्साफ़ की दाद दी और मीर दियानतहुसैन की सब्र को हिदायत की, सबसे ज्यादा पुरअसर तार मिः डिलन् का पहाड़ से आया जो हम जैल में नक़ल करते हैं -

तार।

मेरी दिली मुबारकबाद, अपनी का-बिल इज़्ज़त बरीयत पर क़बूल कीजिये, ख़ुदा हमेशा सचाई की तरफ़ है और मुझे उम्मेद है कि इस आरज़ी मुसीबत से आप अपना दिल न तोड़ेंगे। इस चन्दरोज़ा क़ैद ने हर्गिज़ तुम्हारी इज़्ज़त में कोई कमी नहीं की बल्कि मेरी निगाह में आप और भी अब क़ाबिलइज़्ज़त हो गये। मुल्क को चाहिये कि तुमको शहीदेक़ौम का लक़ब दे। यूसुफ़ के क़ैद होने से उनकी इज़्ज़त और बढ़ गई थी उसी तरह इस क़ैदसे आपकी इज़्ज़त और ज्यादा हो गई।

बाद बहाली के हर्चन्द सब ने समझाया लेकिन दियानतहुसैन कुछ ऐसे अफ़सुर्दखातिर हो गये थे कि कहीं जाने का क़स्द न करते थे और इसी वजह से वह कलेक्टर के यहांभी नहीं गये। मि: हारिसन् उनसे मिलना चाहते थे मगर यहभी उनसे मुनफ़ैल थे कि उनको बुलाने की जुर्रत न कर सकते थे। आख़िरकार मि: हारिसन् एक दिन खुद तहसील की कचहरी में तशरीफ़ ले गये और वहां मीर दियानतहुसैन से मुलाकात की। दियानतहुसैन ने जैसेही हारिसन् साहब को देखा उनका दिल भर आया और उन पिछली बेइतनाइयों को ख्याल करके बेइख़्तियार रोने लगे, मि: हारिसन् को भी उस वक्त सख़्त मलाल हुआ और बड़ी देर तक माज़रत् करते रहे और कुल वजह अपनी नाराज़गी का और लोगों की जोड़बाज़ियां मीर दियानतहुसैन से बयान कीं और अपना दिली अफ़सोस इस नागहानी ग़लतफ़हमी पर ज़ाहिर किया। दियानतहुसैन ने उसके जवाब में तमाम वाक़यात अज़ इब्तिदा ताइन्तिहा बयान किये और कमेटी—तारकुल रिश्वत' क़ायम करना और डिप्टी साहब और लाला पर्वनलाल का हलफ़ न लेना और अपने डिप्टी साहब के यहां जल्से में शरीक न होने को बा-तफ़सील ज़ाहिर किया। उनका तर्ज़ बयान ऐसा पुरअसर था कि मि: हारिसन् बहुतही दिलगिरफ़्त: हुये और आपस में बहुत देर गुफ़्तगू के बाद खुद बखुद सफ़ाई हो गई, आईना दिल पर जो गुबार कदूरत लाला पर्वनलाल और डिप्टी शौकतहुसैन साहब की बदौलत जमा हुआ था यह सब दूर हो गया, और मि: हारिसन् ने जान लिया कि बेशक हक़ का-राज़ी अल्लाह है इस मुलाक़ात के बाद फ़ीरोज़नगर का फिर रंग बदला और मीर दियानतहुसैन का आफ़ताब इक़बाल तुलू होना शुरू हुआ। मि: हारिसन् ने पर्वनलाल से क़तई बात चीत तर्क कर दी और कभी अपनी कोठी पर नहीं आने देते थे और मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर यह बात ज़ाहिर हो गई कि लाला पर्वनलाल और डिप्टी शौकतहुसैन से साफ़ डिप्टी कमिश्नर बहादुर निहायत कशीदा हैं, दो तीन मर्तब: उसी ज़माने में डिप्टी शौकतहुसैन मिलने गये मगर साहब ने मुलाकात भी नहीं की—

अब सुनिये लाला पर्वनलाल की मातूब होतेही हर शख्स उनसे बिगड़ चला, जो लोग उनके यार ग़ार थे उन्होंने अब

काज अदाइयां शुरू कीं जो उनके खास दोस्त अहबाब थे उन्हीं को अब मिलने में आर होने लगा। पण्डित काशीनाथ नायब तहसीलदार ने खुद बखुद हारिसन् साहब से जाकर कुल अह्वीयत बयान कर दी और साफ़ साफ़ कह दिया कि तमाम तहसील के अमलों ने पर्वनलाल के दबाव से दियानतहुसैन के खिलाफ़ गवाही दी थी। डिप्टी ब्रजलाल तो पर्वनलाल के सिरिश्तेदार होते ही गोशानशीन हो गये यानी वह विचारे न पर्वनलाल के शरीक थे न दियानतहुसैन के अकीदे के मुवाफिक रिश्वत लेनाही उन्होंने तर्क कर दिया था। इस वजह से वह किसी मुकद्दमे में ज़राभी खबर न रखते थे, अबभी उनका वही रङ्ग रहा लेकिन डिप्टी शौकतहुसैन पर्वनलाल के मददगार थे। हनोज़ एक हफ़ाभी न गुज़रा था कि दफ़तन् गवर्मेण्ट से तार आया कि मुंशी शौकतहुसैन डिप्टी कलेक्टर की तब्दीली ज़िला काङ्गढ़ को की गई, अन्दर चौबीस घण्टे के यह फ़ीरोज़नगर छोड़ दें। इस तब्दीली से बदस्तसनाये लाला पर्वनलाल आम तौर पर सबलोग खुश हुये, क्योंकि दियानत हुसैन के मामले से डिप्टी शौकतहुसैन हर हलका में निहायत अज़ीज़दिल हो गये थे। पर्वनलाल का बड़ा जुग टूट गया और वाकई यह है कि अब उनकी हालत बहुत ही खतरनाक थी।

—***—

उन्तीसवां बाब।

बद्यासिंह पर मुकद्दमा।

तारीख पेशी पर मिन्जानिब सर्कार हस्ब दर्खास्त मि: हारिसन् मि: फ़ार्बस ब्यारिष्टर ऐट ला पैरवी के लिये कलकत्ते से आये थे और मुलज़िम की तरफ़ से चन्द हिन्दोस्तानी वकील जो पर्वनलालके दोस्त थे पैरोकार थे। मुकद्दमा पेश होते ही पर्वनलाल इजलास से उठादिये गये और उनको भी गवाहों के ज़ुमरे में बैठने का हुक्म दिया गया, जब इजलास से पर्वनलाल उठने लगे तो मि: हारिसन् ने उनकी तरफ़ मुखातिब होकर इतना कह दिया था कि "अभी थोड़ी देर में तुम्हारा इज़हार होगा और अगर तुम एक हर्फ़ भी झूठ बोलोगे तो इस कदर बेंत पड़ेंगे कि मि: पर्वनलाल तुम भी हमेशा याद करोगे"—ये अलफ़ाज़ गो बहुत लम्बे चौड़े न थे मगर पर्वनलाल ऐसे आदमी के डराने को बहुत काफ़ी थे

और ख़ासकर उस हालत में जब पर्वन-लाल कुल मामलात से वाक़िफ़ भी थे। एक हिन्दी मसल है कि "चोर का जी कितना?" यह लतीफ़ा पर्वनलाल पर सादिक़ था, पर्वनलाल जानतेही थे कि सब उन्हीं का किया धरा है वर्ना—

चर्ख़ को कब य सलीका है सितमगारी में
कोई माशूक है इस पर्दये ज़ंगारी में।

उनको बख़ूबी मालूम था कि वह कौन माशूक था और ग़ालिबन् हमारे नाज़रीन भी उनको जानते होंगे। अलक़िस्सा सब से पहिले बखासिंह का इज़हार लिया गया, मि: हारिसन् का तमतमाया हुआ चेहरा, कचहरी का रंग, पर्वनलाल की ज़िल्लत यह सब देखकर वह बहुत घबरा गया। उसके दिल में पर्वनलाल की मौजूदा हालत और दियानतहुसैन की बहाली, सब अमूर ने ऐसा असर किया कि उसने अपने दिल में ठान ली कि मैं कभी झूठ न बोलूंगा चाहे कुछ हो क्यों न हो चुनांचे उसने यों लिखाया—

"हुज़ूर मैं बिलकुल बेक़ुसूर हूं, यह तमाम मुक़द्दमा लाला पर्वनलाल और डिप्टी शौकतहुसैन का उठाया हुआ था। मुझको प्रभूदयाल स्याहानवीस मेरे घर से बुला ले गया, मैंने पर्वनलाल की मर्ज़ी से ख़ुद अपने हाथ से दांत तोड़ लिये, इसके ईनाम में मुझे दो सौ रुपये नक़द दिये गये थे, उन्हीं के कहने से मैंने यह हरकत की थी मैं जानता हूं कि मैं मरने के बाद नरक में जाऊंगा सर्कार मुझको जेलख़ाने भेज दें मैंने एक ऐसे धरममूरत और धरमऔतार अपने देश के राजा और अपने वक़्त के हाकिम पर झूठा दोष लगाया, जिसके बदले अगर परमेश्वर मुझको उच्छिन कर दे तो भी बहुतही कम सज़ा है। तहसीलदार ऐसा अमीर और बेलगाव आदमी ज़िले में कोई नहीं—मैंने उनसे बुराई की, ऐ मेरे जगन्नाथ स्वामी! ऐ अयोध्या महारानी! तुम इसको न याद करो। स्याहानवीस बख़शी जी और पेशकार साहब कोई भी सच नहीं बोला, सबने पर्वनलाल के दबाव से झूठी गवाही दी; आगे सर्कार मालिक हैं"—

स्याहानवीस, मुहर्रिर मुतफ़र्क़ात्, नायब तहसीलदार, रामज़ियावन चपरासी, और मि: हावर्ड डिष्ट्रिक्ट सुपरिंटेंडेंट के बयानात मि: हारिसन् ने तहरीर किये। उन सब लोगों के बयान से मुक़द्दमा साफ़ हो गया और जो असलीयत थी वह खुल गई। पर्वनलाल बहुत घबराये और

कोई शख्स भी उनको ऐसा न दिखलाई दिया जिस पर उनको एतबार होता और जिसको यह अपना गवाह बताते, बहुत ग़ौर के बाद उन्हीं ने कुंजबिहारी लाल कम्पौंडर शफ़ाखाना हारिसन् ऐण्ड कम्पनी को अपना गवाह सफ़ाई करार दिया यह उनका हम्‌मकतब था और उस पर पर्वनलाल का पूरा भरोसा था। पांच रोज़ के लिये मुकदमा मुलतवी हुआ और दो हज़ार रुपये की ज़मानत पर बखासिंह और पर्वनलाल हवालात से बाहर आये। पर्वनलाल की ज़मानत में बहुत मुशकिल पेश आई, कोई शख्स ज़ामिन न खड़ा होता था। आखिरकार शाम को पर्वनलाल के बाप ने दो हज़ार का नोट दाखिल किया जब रिहाई हुई। पर्वनलाल की वह हालत भी एक अजीब हालत थी, न कोई अमला उनके पास फटकता न कोई वकील मुख्तार करीब आता था— यार अग़यार हो गये वल्लाह यह ज़माने का इन्क़िलाब हुआ, रुपया पैसा सब कुछ था लेकिन उनको अपनी रिहाई से मायूसी थी और इस सबब से कुछ भी खर्च करना यह फ़जूल समझते थे और इसी ख्याल से कोई बैरिष्टर भी नहीं बुलाया था। आठ बजे रात को यह कुंजबिहारी के मकान पर गये और उससे मुलाकात हुई—

कुंजबिहारी—मुंशीजी आपने कहां तकलीफ़ की, क्या आज भी कोई ज़हर लेना है?

पर्वनलाल—मैं जिस मुसीबत में हूं परमेश्वर किसी पर न डाले, तुमको ग़मख्वार जानता हूं और हमेशा ज़रूरत के वक्त तुम्हारे सिवा कोई नज़र नहीं आता—

दोस्त आं बाशद कि गीरद दस्त दोस्त
दर परेशां हाल व दर् मांदगी।

मेरी इतनी अर्ज़ है कि आप मेरी सफ़ाई की गवाही दे दीजिये और यह कह दीजिये कि दियानतहुसैन और मुझसे अदावत है—

कुंजबिहारी— अदावत किस बात की?

पर्वनलाल—मुसलमान मुसलमान सब एक हैं, जब से मीर खादिमअली मरे दियानतहुसैन को यह शक हुआ कि मैंने ज़हर देकर मार डाला, हालां कि मैं उनको अपने बापसे बढ़कर जानता था मुझमें ऐसा क्योंकर हो सकता था!

कुंजबिहारी-- मुंशी जी हम तुम्हारे शरीक हैं और हर तरह से मुकद्दमे में मदद करने को मोजूद हैं लेकिन यार यह तो बताओ कि वह ज़हर जो तुमने हमसे लिया था क्या किया। भई सच सच बताना हमारे तुम्हारे कोई पर्दा नहीं ?

पर्वनलाल--(इधर उधर देख कर बहुत आहिस्ते से) उसी मलेच्छ को दिया था मगर भाई बड़ी उम्दा चीज़ थी फ़ौरन् काम तमाम हो गया और किसी ने आजतक कानों कान न जाना।

कुंजबिहारी--(हाथ मिला कर) शाबाश मेरे शेर ! क्यों न हो जिसवक्त तुमने यह शीशी दी थी कोई वहां बैठा तो न था।

पर्वनलाल--यहतो मुझे ख्याल नहीं शायद मौलवी अयूब वहां बैठे हुये थे, मैं उनको वहीं बैठा हुआ छोड़ आया था अजब नहीं कि उनके साम्हनेही मुंशी जी ने खाया हो और रमज़ान उनका नौकर भी था--

कुंजबिहारी---- अच्छा भाई साहब आप अब जाइये, जो कुछ कहोगे कह दूंगा, भला तुम से बाहर हो सकता हूं। जान से माल से ईमान से सिवा तुम मुझको'--

उधर तो लाला पर्वनलाल खुशी खुशी लौटे और वहां कुंजबिहारी के ख्यालात फ़ासिद होने शुरू हुये। एक दिन सिरिश्तेदारी के ज़माने में लाला कुंजबिहारी लाल मुंशी पर्वनलाल साहब की मुलाकात को गये थे, वहीं तहसीलदार साहब हिमामपूर, राय किशोरीलाल, लाला बैजनाथ वग़ैरह बहुत से मुअज़्ज़ीन बैठे हुये थे, बिचारे कुंजबिहारी भी जाके किनारे बैठ गये। आप जानिये बड़े आदमीयों के सामने ग़रीबों को कौन पूछता है पर्वनलाल ने कुंजबिहारी की तरफ़ तवज्जह भी न की और पांच छ मिनट के बाद बहुतही हिकारत से देखकर पूछा कि आप कौन हैं ?

कुंजबिहारी----आप मुझको इतनी जल्दी भूल गये, मैं आप का क़दीमी हम्मकतब और साथी हूं आज आप को खुदा ने अमीर किया है आप चाहे न पहिचानें !

पर्वनलाल-- बहुत अदमी आके झूठ कह दिया करते हैं कि हम हम्मकतब हैं हमको तो आपकी सूरत भी याद नहीं और मुंशी साहब स्कूल में हज़ारहां लड़के पढ़ते हैं सबही हम् म-

कातब हैं उस्से किसी का कुछ हवा नहीं हो जाता, अच्छा अब आप रुखसत हों।

कुंजबिहारी को लाला पर्वनलाल की उस रुखाई ने ऐसा मलूल किया था कि जिसका दाग़ उनके दिल में अब तक बाक़ी था और अबतक यह जख्म आला था। लाला कुंजबिहारी उसी दिन से कभी पर्वनलाल से नहीं मिलते थे और और हमेशा यह इस फ़िक्र में रहते थे कि किसी मौके पर लाला पर्वनलाल से इस्का बदला लेना चाहिये। उसको पहिलेही से शक था कि ख़ादिमअली को पर्वनलाल ने ज़ुरूर वह ज़हर खिलाया है जो उस्से वह ले गया था। अकसर इस्के दिल में आता था कि इस राज़ को अफ़शां करदे मगर इस खौफ़ से कि कोई ज्यादा फ़साद न बढ़े उसने इस मामले को नहीं उभाड़ा था। मीर दियानतहुसैन के इखलाक का यह हमेशा मारिफ़ था और इस नागहां इन्क़लाब में भी वह उनका हमदर्द था। गो कुछ वास्ता न था लेकिन हमेशा उनकी कामयाबी की दुआयें करता था मीर दियानतहुसैन भी हमेशा उससे मिहर्बानी से पेश आते थे और हम्मकतब समझ कर मामूल से ज्या,दा इनायत किया करते थे। यह मौका कसर निकालने का बहुतही उमदा मिला और कुंजबिहारी लाल उसी वक्तसे आमादह हो गया कि मीर ख़ादिमअली की वफ़ात का राज़ भी अपने इज़हार में अफ़शा करना चाहिये। उसने पुराने रजिष्टर भी उसी वक्त तलाश किये और तारीख़ निकाल रक्खी।

जिस तारीख़ में लाला पर्वनलाल के नाम ज़हर की फ़रोख़्त लिखी थी वह ठीक वही दिन था कि जिसकी सुबह को मीर ख़ादिमअली साहब मर्हूम ने इन्तकाल किया था—

खुदा खुदा करके पांच रोज़ खतम हुये और तारीख़ मुआइना पर मुकद्दमा पेश हुआ! उस रोज़ की हालत वाक़ई चश्म इब्रत से देखने के क़ाबिल थी। सैकड़ों आदमी यह खबर सुनने आये थे कि पर्वनलाल ने अपना किया भर पाया। हज़ारों आदमियों का मजमा था! लेकिन अफ़सोस करनेवाला कोई भी न था। पांचही छ रोज़ में पर्वनलाल बिलकुल घुल गये थे आधा जिस्म भी नहीं रह गया था, बहुत मैले कपड़े पहिने निहायत उदास परेशान सूरत बनाये एक दरख़्त के नीचे आकर बैठे, सदहा आदमी गिर्द जमा हो गये—

एक—वल्लाह! बड़ा पाजी था जमीं सर पर उठाई थी।

दूसरा—गेहूं की रोटी हज़म न हो सकी, सच है खुदा कमीने को उरूज न दे।

तीसरा—और लालची कितना था अपने बाप से भी वे लिये न छोड़ा।

चौथा—खुदा करे यह मूज़ी कैद हो और चौक में भरे बाज़ार इसमे कङ्कड़ कुटवाये जांय। है है ग़रीब राजा ने इस का क्या बिगाड़ा था।। वह बिचारे रिश्वत नहीं लेते थे इसके बाप का क्या इजारा था। खाहमखाह को पीछे पड़ गया और कैद करा के छोड़ा; वह तो खुदा जज साहब को लाठ गवर्नर करे बड़ा इन्साफ़ किया नहीं तो ग़ज़ब हो गया था।

पांचवां—देखते ही मूज़ी को गुरूर कितना था, बड़े बड़ों का सलाम हीला दुश्वार था, ओछी लगती थी।

पहिला—अजी जब मैं इसमे हज्जिम बीबी से बेगतनाई की वल्लाह मेरा तो जी छूट गया, जब यह खादिमअली का न हुआ तो और किसी का क्या होगा—

दूसरा—खुदा आपको नेकी दे, ख्याल करने की बात है।

तीसरा—अजी इसको काला पानी होगा, सुना मल्का टूरिया ने तार भेजा है कि उसने इतने बड़े रईस इब्नू रईस को फँसवा दिया था उसको जुरूर काले पानी भेजना चाहिये और मैंने सुना है कि सुलतान रूम ने भी मल्का टूरिया को इस बारे में खास सवार भेजा है।

चौथा—यह क्या आपने चांड़खाने में सुना था, कहां रूम—कहां लन्दन! पांच दिन में तो खाली रेल जाती है, हज़ारहां कोस है, भई सवार कैसे जाता?

पांचवां—जाने मैं क्या हुआ, बादशाहों की सर्कारें हैं क्या, हमारे आपके टटुये घोड़े ही हैं, वहां हज़ारों अर्बी घोड़े मौजूद हैं।

इतने में पुकार हुई और मुल्ज़िमान् मि: ह्यारिसन् के साम्हने लाये गये, पर्वनलाल का गवाह सफ़ाई पेश किया गया।

बयान कुंजबिहारीलाल।

मैं डाक्तर ह्यारिसन् के शफ़ाखाने में कम्पौंडर हूं, मुझ से और पर्वनलाल से बहुत बरसों से दोस्ती है, मैंने और उनने पांच बरस तक एक साथ गवर्मेंट कालेज में तालीम पाई है। मैं इतना ज़रूर जानता हूं कि पर्वनलाल को दियानतहुसैन

से बहुत रंज था और यह बात तमाम शहर में हर शख़स जानता है। इसका सबब यह बतलाया जाता है कि दियानतहुसैन ने कोई रिश्वत की कमेटी क़रार दी थी, उसमें पर्वनलाल ने हलफ़ नहीं लिया था और इसी वजह से पर्वनलाल को यह ख्याल पैदा हुआ था कि यह कमेटी ख़ास उन्हीं के ज़लील करने को की गई थी—

सवाल पर्वनलाल—आप यह बतलाइये कि आपके नज़दीक मेरी चाल चलन कैसी है और आप की राय में इस मुआमले में कौन तक़सीरवार है?।

कुंजबिहारीलाल--चूंकि मैं इस वक़्त अज़रूये गंगा अपना बयान लिखवा रहा हूं लिहाज़ा से बेकमोकास्त अपना बयान लिखाऊंगा—मैं खूब वाकिफ़ हूं कि पर्वनलाल निहायत बदचलन शराबी और ज़ालिम आदमी है, इसने मीर ख़ादिमअली को ज़हर देकर मार डाला।

साहब—क्या? किसको ज़हर देकर मार डाला?

कुंजबिहारी-- हुज़ूर ख़ादिमअली मुहाफ़िजदफ़्तर को, जो हुज़ूर के आने के पेश्तर इन्तक़ाल कर चुके थे जिसकी जगह पर्वनलाल मुहाफ़िज़दफ़्तर हुआ था, उनको इसने ज़हर दिया था—

साहब—तुम इसका सबूत दे सकते हो?

कुंजबिहारी—बेशक हुज़ूर मेरी दूकान का अंगरेज़ी रजिस्टर मंगवाकर देखें उसमें ठीक उसी दिन पर्वनलाल के नाम ज़हर की बिक्री लिखी है, अलावा इसके हुज़ूर मौलवी अयूब मुदर्रिस गवर्मेन्ट कालेज और रमजानी मुलाज़िम मीर ख़ादिमअली मुतवफ़ी साबिक़ मुहाफ़िजदफ़्तर के इज़हार लें सब हाल मालूम हो जायगा।

साहब ने उसी वक़्त सवार भेजकर मौलवी अयूब और रमजान को बुलवाकर इज़हार लिया उन्हों ने यह लिखाया कि आठ बजे शब को एक शीशी किसी दवा की पर्वनलालने ख़ादिमअली को दी थी और यह कहा कि हकीम नब्बू का दिया हुआ जुलाब है, चुनांचे मेरे साम्हने उसी दिन दवा को ठंढे पानी के साथ मीर ख़ादिमअली मरहूम ने नोश किया और अलस्सबाह दूसरे दिन उनके इंतिक़ाल की ख़बर मालूम हुई मुझको यह नहीं मालूम कि वह दवा क्या थी।

अलक़िस्सा हकीम नब्बू भी बाहर

खड़े मुकद्दमे का तमाशा देख रहे थे वह भी धरे गये, उनका भी इज़हार तहरीर किया गया, उन्होंने कृतई इनकार किया कि मैंने कोई अंगरेज़ी इलाज या किसी क़िस्म की दवा आज तक पर्वनलाल को कभी नहीं दी और मैंने कभी पर्वनलाल का इलाज नहीं किया और न कभी मीर खादिमअली ने मेरा इलाज किया। रमज़ान ने शीशी की दवा फेंकने और दो रुपये देने का भी हाल बयान किया।

एक लतीफ़ा इस मुकाम पर यह भी लिखने के काबिल है कि हकीम नब्बू साहब के वालिद ने कोई जुलाहिन घर में डाल ली थी उसी के तन से यह थे—जब वह इज़हार देकर निकले तो बाज़ नावाक़िफ़ों ने बसीन: हमदर्दी यह कहा वल्लाह आपकी तो वही मसल हुई कि—"कर्गह छोड़ तमाशा जाय—नाहक चोट जुलाहा खाय"—इसपर हकीम साहब बहुतही बिगड़े और यह लतीफ़ा इतना मशहूर हुआ कि 'हकीम कर्गह' उनका नाम पड़ गया।

बाद तहरीर बयान हकीम नब्बू साहब मि: ह्यारिसन् ने पर्वनलाल से फिर इस्तिफ़सार किया और उसने एक अजीब मायूसी की हालत में यह समझ कर कि अब कोई छुटकारा नहीं इसब ज़ैल जवाब लिखाया—

"हुजूरआली मैं हरतरह गुनहगार हूं जो मुझसे हुआ शायद किसी ने न किया होगा; मैंने अपनी थोड़ीसी ज़िन्दगी में बहुतसी बद-अफ़ालियां कीं मैंने ज़रूर अपने मुहसन् खादिमअली को ज़हरदिया और बेशक मौलवी अयूब के साम्हने मैंने मीर खादिमअली को मारा। यह उसी का नतीजा था कि मैं आज ग़ज़ब में गिरफ़ार हूं डिप्टी शौकतहुसैन के सिखलाने से मैंने बेशक बचासिंह को मीर दियानत हुसैन पर मुकद्दमा दायर करने की तर्ग़ीब दी और तहसील के अम्माल से गवाही दिलाई; यह भी बहुत बड़ा क़सूर हुआ कि मैंने अपने मालिक के साथ निमकहरामी की। दियानतहुसैन इस शहर के राजा थे और मैं बेशक उनका अदनी रिआया था, दुनिया इसवक्त मेरी आंखों में अँधेरी है। हुजूर की आँख फिरतेही सारा ज़माना मुझसे फिर गया। वह लोग जो मेरे यारग़ार थे अब मेरे तिश्नखूं हो रहे हैं। ग़ौर का मुकाम है कि कुंजबिहारीलाल ऐसा गमख्वार दोस्त खादिमअली के क़त्ल का राज़ अफ़शा करदे, अब हुजूर मालिक हैं जो चाहें हुक्म दें—

अब क्या था पर्वनलाल ने इकबाल कर दिया और सबूत भी पूरा पूरा दस्तयाब हो गया—

मिः ह्यारिसन् ने बचासिंह और पर्वनलाल को हस्ब दफ़ा २११ पीनल्‌कोड एक एक साल कैद की सज़ा दी और वास्ते तजवीज़ जुर्म ज़हरखूरानी मीर खादिम अली मर्हूम पर्वनलाल को सेशन सुपुर्द किया। काशीनाथ नायब तहसीलदार और नीज़ दीगर गवाहान को मिः ह्यारिसन् ने एक्‌कलम मुलाजिमत् मर्कार से बर्खास्त कर दिया।

—***—

तीसवां बाब।

पर्वनलाल की आख़िरी किस्मत।

अदालत सेशन में पर्वनलाल का मुकद्दमा पेश हुआ; चूंकि यहीं पर्वनलाल इकबाल कर चुके थे इसलिये उनके बाप ने कोई पैरवी पर्वनलाल के लिये नहीं की और इसीलिये कोई वकील मुख़्तार भी उनकी तरफ़ से न थे। पर्वनलाल ने सेशन में भी जुर्म से इकबाल किया और अदालत ने सज़ाये मौत का हुक्म दिया।

हुक्म सुनाते वक्त जज साहब ने ये अलफ़ाज़ कहे थे—"पर्वनलाल तुम दुनियां के उन चन्द मशहूर आदमीयों मे हो जिन्होंने अपनी शुहरत् खल्क खुदा के सताने से और खुदा के बन्दों को नुकसान पहुँचाने से पाई। खादिमअली तुम्हारा मुहसिन था, उसने मिस्ल बेटे के तुम्हारी पर्वरिश की और तुमने उसके साथ महज़ एक दुनियवी वहदे की लालच में इतनी अज़ीम बुराई की। इसलिये मेरी राय में जिस कद्र जल्द तुम दुनियासे अलग हो जाओ उतनाहीं ज्यादा मुफ़ीद है और इसलिये मैं तुम्हारे वास्ते सज़ाये मौत तजवीज़ करता हूं। मुझको यकीन है कि तुम खुदा की सर्कार में भी अपने इकबाल के लिये रूसियाह उठोगे"—पर्वनलाल इसको सुनकर रोने लगा और चुप चाप जेल चला गया।

मिः ह्यारिसन् इस फ़ैसले को सुनकर बहुत खुश हुये और हस्ब ख्वाहिश उनके खास फीरोज़नगर कचहरी कलेक्टरी के साम्हने उसको फांसी दीगई। उस दिन भी सदहा आदमीयों का हजूम था लेकिन यह अजीब बात थी कि इस जवान मर्ग के बेवक्त फांसी पर किसी की आंख से एक कतरा आंसू भी न बहा—और किसी की ज़ुबान से ज़रा भी उसकी फांसी पाने पर अफ़सोस न निकला। उस मजमे में अगर कोई रोने की आवाज़ सुनाई देती थी

तो बेशक उसके बुड्ढे बाप की थी, यह भला क्योंकर न रोता—उसका एकलौता बेटा, सपूत बेटा, बा इक़बाल बेटा इसतरह उसके साम्हने फांसी पाये उसके फूले फले घरको उजाड़े, उसको लावल्द का बदनसीब खिताब दे और वह न रोये ? यह क्योंकर मुमकिन था ? वह बुरा था या भला—ईमानदार था या बेईमान, जालि था या फ़रेबी—उसका नूरचश्म था उसका लख़्त जिगर था, उसके घर का चिराग़ था। उस्की नौजवान बहू का बेवा होना उस्की बुड्ढी जोरू का अपने एकलौते बेटे को हमेशा के लिये रुखसत करना, यही सब बातें थी जो बदनसीब छदमी को जिन्दह दर गोर होने के लिये काफ़ी थीं !

— *** —

इकतीसवां बाब।

सैय्यद दियानतहुसैन का फिर उरूज।

इन तमाम वाकियात के बाद मि: हारिसन् पर बखूबी जाहिर हो गया कि सचाई क्या चीज़ है और बनावट क्या शै है, उनको यह पूरा तजरुबा हो गया कि अभी तक पुराने फ़ेशन् के हिन्दोस्तानियों में ऐसी तहज़ीब और रास्तगो बहुतही कम लोगों में आई है कि वह एक मिण्ड भी खुदग़र्ज़ी और जोड़ तोड़ से अपने को अलग रख सकें ग़ोल के ग़ोल मुखबरों का बयान उनको अब मालूम हुआ कि—

"बनावट की थी सारी जादूभरी"

यह भी मि: हारिसन् पर अब साबित हो गया कि कैसाही लायक और मुन्सिफ़ मिज़ाज आदमी क्यों न हो जब हमेशा उसके कानों में तरह तरह की चीज़े पड़ा करेंगी तो वह किसी तरह झूठ और सच में तमीज़ नहीं करसकता, वह यह भी जान गये कि मीर दियानत हुसैन किस लियाक़त और किस एतबार के क़ाबिल आदमी थे जिससे कि ये कुल हालात मि: हारिसन् पर आइना हुये। उनको दियानतहुसैन से बहुतही इनफ़आल था और हमेशा वह इस फ़िक्र में रहते थे कि किसी तरह उनकी तशफ़ी करना चाहिये गो इस में कुछ शक न था।

"गर सद हज़ार लाल व गुहर मि दिही च सूद ? दिल्रा शिकस्तई न कि गौहर शिकस्तई"

मगर बहरहाल मि: हारिसन् जो एक बितब: फ़ैयाज़ और नेकनिहाद अफ़सर थे जैसा कि अमूमन् इङ्गलिशम्यान

हुआ करते हैं। उन्होंने इस इन्क़िलाब की एक खास रिपोर्ट गवर्मेंट में भेजी उस में फ़ीरोज़नगर के लोगों की शरारत और सैय्यद दियानतहुसैन के हालात बितशरीह लिखकर गवर्मेंट से यह ख्वाहिश की कि सैय्यद दियानतहुसैन नेटिव सिविल सर्विस में ले लिये जांय। खानदानी एतबार से यह हर तरह उसके मुस्तहक थे क्योंकि ये बड़े बाप के बेटे थे लियाक़त से भी वह एक उमदा अंगरेज़ीदां थे, मशहूर जहीन और मुतदैय्यन् अफ़सर थे, उम्र भी उनकी कुछ ज़्यादः न थी—मि: ह्यारिसन् ने यह भी सिफ़ारिश की थी कि राजा का खिताब जो उनके बाप राजा सैय्यद लियाक़तहुसैन खां साहब बहादुर का था उनको भी गवर्मेंट से दिया जाय। अलहमदुलिल्लाह कि यह रिपोर्ट मंजूर हुई और दफ़तन् सैय्यद दियानतहुसैन के नाम गवर्मेंट से यह तार आया कि तुमको राजगी का खिताब हीनहयात अता हुआ और तुम असिष्टण्ट कमिश्नर फ़ीरोज़नगर मुकर्रर किये गये—इस तकर्रुर को आम तौर पर हर गरोह ने पसन्द किया और हर क़ौम के लोग मि: ह्यारिसन् की मुनसिफ़मिज़ाजी के अज़हद शुक्रगुज़ार हुये—

ऐ खुदा जिस तरह तू ने सैय्यद दियानतहुसैन की रियासत को बर्क़रार रक्खा जिस तरह तू ने ईमानदारी के ईनाम में उनकी मदद को उनको तमाम मुसीबतों से बचाया उसी तरह तू तमाम मुतदैय्यन् मुलाज़िमान सर्कार के साथ हो और उनके हमक़ौम भाइयों से जो मिस्ल बिरादरान यूसफ़ हैं उनको महफूज़ रख॥

—※※—

बत्तीसवां बाब।

मि: दियानतहुसैन एकष्ट्रा असिस्टण्ट कमिश्नर।

जैसेही सैय्यद दियानतहुसैन असिष्टण्ट कमिश्नर हुये उन्होंने फ़ीरोज़नगर से अपने तब्दिली की ख्वाहिश की। गो मि: ह्यारिसन् ने उन्हें बहुत रोका लेकिन गवर्मेंट ने मि: दियानतहुसैन की दर्ख्वास्त पसन्द की और ज़िला जहानाबाद को उन्हें तब्दील किया।

जहानाबाद एक छोटा स्टेशन था लेकिन दिलचस्प और आब हवा की खूबी में अज़हद मशहूर था। मि. दियानतहुसैन की खुशनसीबी से एक लबेदर्या बंगला मिल गया उसमें उन्होंने क़याम फ़र्माया—

जब वह जहानाबाद आये तो ज़िले में मि जान ब्राउन साहब डिप्टी कमिश्नर

थे और मौलवी हिकमतउल्लाह व राय देबीदयाल एकष्ट्रा असिष्टण्ट कमिश्नर थे, मुंशी रहीमुल्लाह मुन्सिफ़ थे। मि: ब्राउन एक नये फैशन् के ख़ी-इख़लाक़ आदमी थे मगर शिकार का अज़हद शौक था, इस वजह से काम में बहुत तवज्जह न थी, खेल तमाशे में ज़्यादा वक़्त बसर करते थे। मौलवी हिकमततुल्लाह साहब चपरासी के वहदे से मुलाज़मत सर्कारी में दाखिल हुये—मर जान क्यम्बेल जब कमिश्नर हुये उन्होंने जमादार कर दिया, रफ़ा रफ़ा सिरिश्तेदार तहसीलदार और एकष्ट्रा असिष्टण्ट कमिश्नर हुये, उम्र क़रीब ७५ बरस की थी लेकिन सर्कारी काग़ज़ात में सिर्फ़ पैंतालीस बरस दर्ज थे। साहब डिप्टी कमिश्नर मौल्वी साहब की बड़ी खातिर करते थे। मौल्वी साहब की रिश्वतसतानी मशहूर ख़ास व आम थी और ऐसा आम तौर पर उनका दर्वाजा खुला था कि जो जी चाहे दे आये, एक रुपये से लेकर जो कुछ मिले उनको लेने में इन्कार न था। मुरे इज-लास रिश्वत लेते थे लेकिन लिडर ऐसे थे कि चेहरे पर शिकन् तक न आई थी—

चपरासी, अर्दली, खिदमतगार बाव-र्ची भी महरम-राज़ थे और कचहरी में घूमा करते थे, जहां कोई मुकद्दमेवाला मिला फांसकर डिप्टी साहब के साम्हने ले जाते थे और डिप्टी साहब अच्छी तरह मूंड़ लेते थे। डिप्टी साहब के इख़्तियारात ऐसे वसीह थे कि दफ़्तर में उनके तमाम नज़दीकी व रिश्तेदार जमा थे, मुहा-फ़िज़दफ़्तर उनका हक़ीक़ी छोटा भाई, नाज़िर कलेक्टरी उनका साला था—दफ़्तरी डिप्टी साहब का हक़ीक़ी दामाद; अल्गर्ज़ तमाम कुनबा उनका जहानाबाद में जमा था—

राय देबीदयाल साहब अंगरेजी-दां डिप्टी थे और रही इन्-चार्ज ख़जाना थे, बारह बरस से उस ज़िले में थे और राशी भी थे आली दर्जे के थे लेकिन उनका तरीक़ा रिश्वतस्तानी जुदागाना था। यह मुआमलात में रिश्वत कम लेते थे, जब तक हज़ार पांच सौ न मिले हाथ न डालते थे लेकिन रऊसाय और महा-जनों के नाक में दम किये रहते—आज इस बाबू की टमटम मँगनी मँगवाई और फिर लिख भेजा कि बन्दहज़ादे को आपका टमटम बहुत पसन्द है और वह रोता है लिहाज़ा वापसी से मजबूरी है—कल फ़लां राजा से एक हज़ार रुपया कर्ज़ मँगवा भेजा और डकार तक न ली;

यहीं उन नवाब साहब के यहां से खेमा मँगवाया और वापस न किया।

राय साहब गो मुतदैय्यन् न थे लेकिन अपने को ईमानदार जानते थे और इसी घमण्ड पर अकसर हुक्काम से लड़ा करते थे और यही सबब था कि मि: ब्राउन उनसे रज़ामन्द न थे।

लाला छङ्गूलाल सदर तहसील के तहसीलदार थे यह एक होशियार और तेज़ आदमी था मगर इन्तिहा मर्तबः का ज़ालिम और गैर खुदातर्स, गरीब आज़ार और बदद्यानत- मि: ब्राउन इसको बहुतही अच्छा जानते थे और एक मर्तबः कायम मुक़ाम एकष्ट्रा असिष्टन्ट कमिश्नरी भी कर चुका था, उसका हक़ीक़ी छोटा भाई मंगूलाल साहब असिष्टन्ट कमिश्नर के इजलास का सिरिश्तेदार था और वही मि: दियानतहुसैन के हिस्से में पड़ा था-

मि: दियानतहुसैन जहानाबाद में पहुंचकर सब से पहिले मि: ब्राउन से मिलने गये। मि: ब्राउन ने निहायत तपाक से उन्हें लिया और निहायतही मुहब्बत से पेश आये-

ब्राउन—फ़ीरोजनगर के लोग बड़े बेईमान थे आपको बड़ी तकलीफ़ पहुंचाई-

दियानतहुसैन--वहीं पर क्या मुनहसर अभी हिन्दोस्तान में आम तौर पर यही हाल है-

ब्राउन—नहीं दियानतहुसैन, हमारे ज़िले में इससे बहुत पनाह है और सिवा डिप्टी देवीदयाल के और मेरी दानिस्त में कोई अमला भी राशी नहीं है।

दियानतहुसैन-- मैं निहायतही खुश हुआ, खुदा करे आपका अन्दाज़ा सहीह निकले-

ब्राउन—आप ज़रूर इसकी जांच कीजिये और आप जो इन्तिज़ाम ज़िले में मुनासिब समझें कीजिये- मैं पूरा आपको इख़्तियार देता हूं मैंने खास जहानाबाद का आपको मोहतमिम हिस्सा ज़िला किया है और तमाम दफ़्तर आपके तालुक कर दिये हैं और नीज़ आबकारी व स्टाम्प- आपका जी चाहे ख़ज़ाना भी ले लीजिये।

दियानतहुसैन—जी नहीं उससे मुआफ़ कीजिये मेरा जी ख़ज़ाने के काम में न लगेगा।

दियानतहुसैन आठ बजे सुबह से ग्यारह बजे तक ब्राउन साहब के पास रहे और आपस में बड़ी दोस्ती और बे तकल्लुफ़ी हो गई—ग्यारह बजे मि: ब्राउन

दियानतहुसैन को अपनी गाड़ी पर कचहरी लाये और दियानतहुसैन ने काम करना शुरू किया—

तमाम कचहरी के लोग अपने नये असिष्टण्ट कमिश्नर को देखने दौड़े और उनके इजलास पर एक हजूम अम्माल का हो गया—सब लोग आकर उनको सलाम करते थे और दियानतहुसेन हर शख्स से बकमाल खन्दापेशानी नाम और वहदा दर्याफ़ करते थे चार बजे साहब डिप्टी कमिश्नर की गाड़ी में अपने बँगले चले गये । जहानाबाद में उनकी आमद की बड़ी धूम थी और तरह २ की रायें उनकी निस्बत क़ायम की जाती थीं ।

डिप्टी हिकमतउल्ला — कहिये राय साहब आप ने मिष्टर को देखा ?

राय देवीदयाल — जी हां वह तो पूरे साहब लोग हैं ।

नाज़िर--मगर हुजूर हैं बड़े हंसमुख ।

मुहाफ़िज दफ्तर--और जनाब लायक भी हैं, दस्तखत बड़े बांके होते हैं-

अर्दली डिप्टी हिकमतअली--मुझ से बड़े साहब का ख़ानसामा कहता था कि कलेक्टर साहब के बड़े दोस्त हैं और आज खाना भी साथ खाया ।

डिप्टी हिकमतुल्ला--ऐं ! अंग्रेज़ के साथ खाना खाया ! अजी उसी सैय्यद अहमद के पैरो होंगे ।

देवीदयाल--फिर कब मिलने चलियेगा ?

हिकमतुल्ला--हां चलना तो ज़रूर है, कल आठ बजे आइयेगा, हम आप साथ चलेंगे—

दूसरे रोज़ सवेरे मि: दियानतहुसैन के बँगले पर हुजूम हुआ—

दियानतहुसैन--अर्दली देखो गोल कमरे का दर्वाजा खोल दो जो लोग हमारे मिलने को आवें उन्हें बाइज़्ज़त बिठलाओ और हमें ख़बर करो—

अर्दली--बहुत बेहतर हुज़ूर -

दियानतहुसैन--और देखो अगर किसी शख्स से तुम एक पैसा भी ईनाम माँगोगे या किसी को परेशान करोगे तो मैं फ़ौरन् तुमको बर्खास्त कर दूंगा -

अर्दली--नहीं हुजूर जब सर्कार की मर्ज़ी न होगी तो हम कभी ऐसी गुस्ताख़ी न करेंगे ।

दियानतहुसैन--देखो कौन कौन साहब तशरीफ़ लाये हैं ?

अर्दली--दोनों डिप्टी साहब, राजा हरबंसनारायन सिंह आनरेरी मजिस्ट्रेट, बाबू पीताम्बर लाल वकील और बाबू माधोदास बाबू खज़ाना, और तहसीलदार हाज़िर हैं।

दियानतहुसैन--अच्छा सब साहबों को बिठलाओ और राजा साहब को हमारे पास भेज दो।

राजा हरबंशनारायनसिंह की मुलाकात।

जैसेही राजा साहब आये दियानतहुसैन ने दर्वाज़े तक इस्तक़बाल किया, और बड़े तपाक से हाथ मिलाकर बिठलाया।

राजा साहब--आप के पिता से और हमसे बड़ा व्यवहार था।

दियानतहुसैन--बेशक होगा आप और वह हम-उम्र भी मालूम होते हैं।

राजा साहब--आप के आने से हम बहुत खुश हुये और आपको जिस बात की तकलीफ़ हो हमसे कहियेगा--आपकी तलब क्या है?

दियानतहुसैन--आप यह क्यों दर्याफ़ करते हैं, मैं ३६० रुपया पाता हूं।

राजा साहब--माहवारी?

दियानतहुसैन--(हँसकर) जी नहीं शशमाही।

राजा साहब--और ऊपरी आमद कितनी होती है?

दियानतहुसैन--माज़ अल्ला! आप मुझ को राशी जानते हैं मैं रिश्वत नहीं लेता और न कोई शरीफ़ख्याल लेता होगा यह वेही कमीनाख्सलत दुश्मनमुल्क लोग हैं जो क़ौम को ज़लील करते हैं।

राजा साहब--आप खिल्लीबाज़ी करते हैं! क्या ऐसा आदमी भी होता है जो रिश्वत नहीं लेता।

दियानतहुसैन--क्या आपने अपने ज़िले में ऐसा आदमी कोई नहीं देखा जो रिश्वत न लेता हो?

राजा साहब--हमारे ज़िले में तो कोई भी ऐसा नहीं और मौलवी हिकमतुल्लाह तो दमड़ी तक नहीं छोड़ते, कहते हैं कि यह सुरतीही को काफ़ी होगा। डिप्टी देवीदयाल चीज़ मांगकर फेरना जानतेही नहीं, चाहे उसके एवज़ में मुकद्दमा जितवा लो मगर चीज़ न फेरेंगे।

दियानतहुसैन--मुझको आप से यह सुनकर निहायत रंज हुआ और मैं इनशाअल्ला आपके ज़िले को इस बला से बहुत जल्द पनाह दिलवाऊंगा--और मैं बहुत शुक्रगुज़ार हुआ कि आपने

पहिलेही रोज़ मुझको आगाह कर दिया।

(इसके बाद राजा साहब रुखसत हुये)

दियानतहुसैन—चपरासी, दोनों डिप्टी साहबों और तहसीलदार साहब से मेरा सलाम कहो और मेरी तरफ़ से मुआफ़ी मांगो कि मैं उनके मिलने के क़ाबिल नहीं हूं लिहाज़ा मैं उनसे मिलना नहीं चाहता, वकील साहब और खज़ाने के बाबू को भेज दो—

(वकील साहब अन्दर आये)

दियानतहुसैन ने निहायत इखलाक़ से दर्वाजे तक बढ़कर लिया और दोस्ताना बातें शुरू हुईं।

वकील--हमारे ज़िले में यह पहिला मर्तबा है कि आप का सा मुतदैयन् और लायक़ जेन्टलमैन आया है वर्ना यह ज़िला हमेशा पुराने फ़ेशन् के अमलों और हाकिमों का तख़ामश्क़ रहा—

दियानतहुसैन--मुझको उम्मेद है कि आप सब लोग मुझ से राज़ी रहेंगे।

वकील—राज़ी क्यों न रहेंगे—जो लूट मार इस ज़िले में है कहीं दुनिया में न होगी—सब इजलास हाकिम लोग फ़रीक़ैन् से रिश्वत मांगते हैं—एक रोज़ अजीब तमाशा हुआ। मौलवी हिकमतुल्लाह साहब के यहां एक बकाया लगान का मुक़द्दमा पेश था; मुद्दई से २००) ठहरा हुआ था, इतने में मुद्दाले ने चार सौ दिये; डिप्टी साहब ने फ़ौरन् दावा खारिज कर दिया—

मुद्दई--हुज़ूर हमारी बड़ी हक़तलफ़ी हुई हमने दोनों सुबूत दाखिल किये और फिर भी मुक़द्दमा ख़ारिज हो गया।

डिप्टी साहब—'हां भाई तेरी शिकायत सच मगर मुद्दाले ने चारो तर्दीदें पेश करदीं मैं क्या करता'। अजब हाल है कोई पूछनेवाला नहीं हम लोगों को कोई पूछता ही नहीं।

दियानतहुसैन—ओ बेशक! जब हाकिम खुद रिश्वत लेता है तो कोई वकील नहीं करता—बहरहाल मैं यक़ीन करता हूं कि आप मुझे मदद देंगे और मैं उसके इन्सदाद की पूरी फ़िक्र करूंगा—

वकील साहब के बाद बाबू साहब से मुख़्तसर मुलाक़ात हुई और सब लोग अपने २ घर तशरीफ़ ले गये॥

—***—

तैंतीसवां बाब

हर दो डिप्टी साहबान।

नाज़रीन् ग़ालिबन् समझ गये होंगे कि सैय्यद दियानतहुसैन ने डिप्टी हिक-

मततुल्ला और देबीदयाल से क्यों मुलाकात नहीं की, अगर याद न रहा हो तो मैं याद दिलाता हूं कि फ़ीरोजनगर में कमिटी तारकुल रिश्वत के ये बानी थे और ग़ैर मुतदैय्यन् लोगों से मिलने की कसम खा चुके थे—डिप्टी साहबान को सैय्यद दियानतहुसैन की यह कजखुलकी सख़्त नागवार हुई और वाक़ई डिप्टी साहब की यह बरहमी हक़ बजानिब थी। उनकी तमाम उम्र में यह पहिला दिन था कि एक हम बग़र ने उनकी मुलाक़ात से इनकार किया और यह इनकार बज़ाहिर किसी वजह से भी नहीं। दियानतहुसैन खुदा नख्वास्ता बीमार न थे आज़ारी न थे सोते न थे फिर आख़िर न मिलने की क्या वजह? और ग़ज़ब खुदा का एक अदना वकील बुलाया जाय और एक बेहदे राजा से सर्गोशी हो और हम मर्तब: मजिस्ट्रेट वापस हों, यह सब ख्यालात थे जो डिप्टियों के मिजाज को और भी बरहम् कर रहे थे—

तहसीलदार—आख़िर जनाब इस का सबब क्या, वह भी हिन्दोस्तानी हम भी हिन्दोस्तानी, हम तो अब पेशाब करने भी न आयें—

हिकमतुल्ला—क्या जनाब यह हर्कत उनकी शोख़ी छोड़ दी जायगी, अभी अभी चलिये और डिप्टी कमिश्नर के आगे सर दे मारिये—

देबीदयाल—जब तक मियां को पैख़ाना न दिखाया जायगा सीधे न होंगे—

तहसीलदार—इस गुरूर को तो मुलाहिज़ा कीजिये—देखिये असिस्टन्ट कमिश्नर क्या हो गये मिज़ाज नहीं मिलते—अजी इसी से तो हिन्दोस्तानियों को बड़े वहदे नहीं मिलते।

हिकमतुल्ला—भाई की बात—

देबीदयाल—बड़े साहब भी इस हर्कत से देखियेगा निहायत नाराज़ होंगे।

अलगर्ज़, हर दो डिप्टी साहबान् साहब डिप्टी कमिश्नर के बँगले पर उस वक़्त आये और इत्तला कराई, साहब ने फ़ौरन् बुलाया।

साहब—वेल् डिप्टी साहब! आपने नये छोटे साहब को देखा?

हिकमतुल्ला—हुजूर देखा और भर पाया, उन्हीं की फ़र्याद लेकर हम लोग हाज़िर हुये हैं।

देबीदयाल—हुजूर वह भी हिन्दोस्तानी हम भी हिन्दोस्तानी, उनको

लाज़िम था कि पहिले हम लोगों से मिलने आते लेकिन जब उनको यह तौफ़ीक न हुई तो हम लोग खुद गये – इत्तखा, हुई, साफ़ जवाब दिया कि हम मिलना नहीं चाहते।

हिकमतुल्ला--हुजूर ऐसी ज़िल्लत हम लोगों को हुई है कि जाकर पछताये अगर हुजूर इसका इन्तिजाम न फर्मायेंगे तो हमारी बड़ी आबरू ज़लील हुई।

साहब–ओ! मिष्टर दियानतहुसैन बड़ा अच्छा आदमी है उस वक्त कोई काम में होगा वर्ना ज़रूर मिलता –

डिप्टी साहब–नहीं हुजूर कोई काम न था, हम लोगों के रूबरू राजा हरबन्स नरायन और पीताम्बर लाल को बुलाया, मुलाकात की, हँसी दिल्लगी रही। हम्हीं लोगों ने खुदा जाने क्या कुसूर किया था कि काबिल मुलाक़ात नहीं करार पाये –

साहब–अच्छा हम दियानतहुसैन से इसका तज़किरा करके आपसे बतला-येंगे कि साहब किस वास्ते आपसे नहीं मिला – बेशक यह बड़े ताज्जुब का बात है। दियानतहुसैन बड़ा खलीक आदमी है, हम समझता है इसमें ज़रूर कोई बात होगा – अच्छा साहब सलाम॥

—***—

चौंतीसवां बाब।

जहानाबाद में इन्सदाद रिश्वत की तदबीरें।

मि: ब्राउन ने डिप्टी साहबों की फ़र्याद बहुतही ताज्जुब से सुनी, वह बार बार सोचते थे कि इसका क्या सबब है, वह हर चन्द चाहते थे कि इसको भुला दें लेकिन उनके दिल में एक अजब क़िस्म की गड़बड़ी इस रवायत ने पैदा कर दी थी, बार बार इस बात पर मजबूर करती थी कि यह पहेली जल्द बूझना चाहि-ये – उनको इतना भी सब्र न आया कि मुलाक़ात के वक्त तक इन्तज़ार करते – उन्होंने फ़ौरन् गाड़ी तयार कराई और मि: दियानतहुसैन के बँगले पर पहुंचे।

डिप्टी कमिश्नर–कहो दियानत-हुसैन! क्या हाल है, तुम कल लानटेनिस् में नहीं आये? हम सब को बड़ा इन्त-ज़ार रहा—

दियानतहुसैन–कल में ज़रा काम में फँस गया था आज ज़रूर आऊंगा।

डिप्टी कमिश्नर–कहो हमारे हि-न्दोस्तानी डिप्टियों को तुमने देखा?

दियानतहुसैन–खुदा मुझको न दिखलाये—

डिप्टी कमिश्नर—हां जी यह तो बतलाओ तुमने उनसे मुलाकात क्यों नहीं की, वह मेरे पास गये थे और बहुत रंजीदा थे।

दियानतहुसैन—मैं कमबख़ उनसे मिलने के काबिलही नहीं, मैं कमेटी 'तारकुल रिशवत' का मेम्बर हूं और मैं अज़रूये हलफ़ मज़हबी इसका पाबन्द हो चुका हूं कि राशी अशख़ास से क़तई न मिलूंगा और यही सबब था कि मैं आपके डिप्टी साहेबों से नहीं मिला।

डिप्टी कमिश्नर- ऐं! क्या वे राशी हैं?

दियानतहुसैन— मुझे अफ़सोस है – हां वे राशी हैं।

डिप्टी कमिश्नर—तुमको आतिही यह क्योंकर मालूम हो गया?

दियानतहुसैन—मुझसे दो मोअज़्ज़िज़ आदमीयों ने बयान किया और उनका तर्ज़ बयान ऐसा न था कि मैं उसको यक़ीन न करता। राजा हरबंस नरायन मुझसे पूछते थे कि कहीं ऐसेभी हिन्दोस्तानी अफ़सर हैं जो रिशवत नहीं लेते; मुझको उनका फ़िकरा सुनकर बड़ी ग़ैरत आई।

डिप्टी कमिश्नर—मैं बड़े धोखे में था, मुझको हर्गिज़ इसकी ख़बर न थी, लेकिन कोई अफ़सर क्या कर सकता है रिशवत का इन्सदाद बहुत दुश्वार है।

दियानतहुसैन-दुश्वारही नहीं बल्कि क़रीब क़रीब ग़ैरमुमकिन है। लेकिन अगर आप लोग उसके इन्सिदाद पर आमदः हों तो कुछ दुश्वार भी नहीं है। अब तक राशी और मुतदैयन् में हर्गिज़ कोई फ़र्क नहीं और यही सबब है कि बहुत से मुतदैय्यन् भी जो ख़ुदा के ख़ौफ़ से मुतदैय्यन् थे राशी हो गये।

डिप्टी कमिश्नर-हम लोग क्या कर सकते हैं?

दियानतहुसैन — बहुत कुछ, अगर हिन्दोस्तानियों को यह मालूम हो जाय कि आप लोग दरहक़ीक़त राशियों से नफ़रत् करते हैं, उनकी तरक्की नहीं करते, उनसे तर्क मुलाकात करते हैं और बख़िलाफ़ उसके मुतदैय्यन् लोगों से हमदर्दी करते हैं उनकी तरक्की में उनकी दियानत का ख्याल किया जाता है तो आप देखेंगे कि किस क़द्र जल्द हिन्दोस्तानी दुरुस्त हो जाते हैं—हिन्दोस्तानी जितना अंगरेज़ों से डरते हैं ख़ुदा से भी उतना नहीं डरते –

डिप्टी कमिश्नर—लेकिन दियानत हुसैन! हिन्दोस्तानी तो सब एकही तरह के हैं उनमें मुतदैय्यन् मिसला भी तो दुश्वार है—

दियानतहुसैन—नहीं, यह भी आपकी ग़लती है—अगर आप अच्छे ख़ानदान के मुअज्जिज़ तालीमयाफ़्ता नौजवान मुअज्जिज़ ओहदों पर मुकर्रर करें और वह यह समझें कि दियानत भी एक ज़रिया इज्ज़त का है तो हर्गिज़ उनसे बददियानती न होगी। देखिये आजकल के नये फ़ैशन् के डिप्टी कलेक्टर और तहसीलदार हर्गिज़ रिश्वत नहीं लेते—

डिप्टी कमिश्नर—मैं भी तुम से इक़रार करता हूं कि राशियों से हर्गिज़ न मिलूंगा, जब तक वह अपनी आदत तर्क न करें; और जो कुछ तुमसे इसमें इन्तिज़ाम हो सके बेतकल्लुफ़ करो. मैं तुम्हारा शरीक हूं, और जब तुमको किसी की रिश्वतसतानी मालूम हो मुझसे ज़रूर इत्तला करना, उसका पूरा बन्दोबस्त करूंगा।

दियानतहुसैन—मैं निहायत शुक्रगुज़ार हूं कि आप ने ऐसे अच्छे काम में मेरी मदद का वादा फ़र्माया। मि: पिटर्सन् और डिलन् मेरे बड़े हमख़याल हैं और हमेशा वे रिश्वत के इन्सदाद की फ़िक्र में रहते हैं लेकिन मि: ब्राउन्! अगर बुरा न मानो तो एक बात मैं और कहूं जिस तरह वालिदैन् के अफ़आल का औलाद पर असर पड़ता है वैसाही अफ़सरों के अफ़आल का मातहतों पर—

डिप्टी कमिश्नर (घबड़ाकर)—मैं हर्गिज़ रिश्वत नहीं लेता।

दियानतहुसैन—यह मैं जानता हूं कि तुम रिश्वत नहीं लेते लेकिन डालियां लेना, तोहफ़ातहायफ़ क़बूल करना, हाथी घोड़ा मांग मांग भेजना यह सब रिश्वत है—बग़ैर ग़र्ज़ कोई किसी को नहीं देता। देखो पड़ोस में मि: ऐंडर्सन् पिंशनयाफ़्ता सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस रहते हैं कोई उनके यहां जाता है? मेरी राय है कि इससे भी इहतियाज़ ज़रूरी है।

डिप्टी कमिश्नर—मैं भी वादा करता हूँ कि आज से मैं किसी की डाली वग़ैरह न लूँगा—वाक़ई यह बहुतही शर्मनाक आदत हम लोगों में पड़ गई है।

दियानतहुसैन—एक बात और भी ज़रूरी है अगर कहो तो बयान करूं।

डिप्टी कमिश्नर—शौक से कहिये—

दियानतहुसैन--मैंने सुना है कि आप काम में अपने अम्माल का बहुत एतबार करते हैं और अमलों की सिफ़ारिश बहुत सुनते हैं थोड़ी मेहनत आप गवारा कीजिये तो अम्माल का ज़ोर बिलकुल टूट जाय –

डिप्टी कमिश्नर--बहुत काम और खेल कुछ नहीं, आदमी को सुस्त कर देता है हा ! हा ! ह ! ह ! ह !

दियानतहुसैन--मैं खेल को मना नहीं करता काम भी करो और खेल भी।

डिप्टी कमिश्नर--अच्छा, मैं अब सब काम अपने हाथ से करूंगा और तुम बहुत जल्द सुनोगे कि मैंने कैसा उम्दा इन्तिज़ाम किया –

दियानतहुसैन--बहुत बहुत शुक्रिया--

मि: ब्राउन रुखसत होकर अपने बँगले गये और जातेही चपरासी को पुकारा –

साहब--चपरासी देखो जो कोई डिप्टी साहब तहसीलदार ख़्वाह अमला हमारी मुलाकात को आवे उस्से साफ़ कह दो कि पहिले दियानतहुसैन साहब असिस्टण्ट कमिश्नर से मुलाकात कर आवे तब हम मिलेगा, अगर छोटा साहब उनसे नहीं मुलाकात करेगा तो हम भी नहीं करेगा–

उसी दिन से जहानाबाद की हवा बदली और तमाम ज़िले में इसकी तरह २ शुहरत हुई, कोई कहता था कि मि: दियानतहुसैन गवर्मेण्ट से इस ज़िले के इन्तिज़ाम को तैनात हुये हैं कोई कहता था कि ब्राउन् साहब ने खुद उनको इन्तिज़ाम रिश्वत के लिये बुलाया है – किसी का कौल था कि ब्राउन् साहब और दियानतहुसैन फ़क़ीर भेस का बदल कर रात को सब अमलों में घूमते हैं । नाच रङ्ग दावत तवाज़ह सब एक कलम लोगों में बन्द हो गई और हर शख्स बजाय खुद खायफ़ था अगर कोई भी गरोह इस दियानतगर्दी में खुश था तो वकला और ज़िमीदारान्, वर्ना तमाम अम्माल नीम-जान हो रहे थे –

मि: दियाहुसैन ने दोही चार दिन की कचहरी में यह अम्र साबित कर दिया कि वह इस तरह लायक और इस तरह बेरु रेयायत अफ़सर हैं–तमाम अहलमुकद्दमा को उनमें एतबार हो चला और ज़रा भी कोई अहलकार कुछ बदसलूकी करता फ़ौरन् उनतक इत्तला होती थी–उधर साहब डिप्टी कमिश्नर ने भी खुद काम करना शुरू किया और वह अन्धाधुन्ध मौकूफ़ हुआ–अगर कोई जगह

खाली होती उसके इन्तिज़ाम के वास्ते न शिरिश्तेदार से सलाह की जाती न डिप्टी हिकमतुल्ला बुलाये जाते है। दियानतहुसैन जिसको चाहते थे मुकर्रर कर देते थे, लेकिन दियानतहुसैन के आवुर्दे न उनके रिश्तेदार होते न मतवस्सिल--या किसी कालेज के तालीमयाफ़्ता ग्रैजुयेट या अण्डर ग्रैजुयेट होते या किसी मुअज्ज़िज़ ख़ानदान के तालीमयाफ़्ता नौजवान। तमाम अम्लाह में मश्हूरे होते थे कि स्कूल के लौंडे काम कैसे करेंगे, ख़्वाहम् ख़्वाह निकाले जायँगे लेकिन वह इसको भी खूब जानते थे कि यह दियानतहुसैन का राज है उनके अवुर्दे को निकालना टेढ़ी खीर है। उधर साहब ज़िला ने तमाम अफ़सरों से मिलना छोड़ दिया था उसका भी अजहद असर पड़ा--डिप्टी देबीदयाल ने फ़ौरन् अपनी तबदिली करा ली और उनकी जगह बाबू आत्माराम बी० ए० तशरीफ़ लाये और यह भी मि: दियानतहुसैन के गरोह में दाखिल हुये।

—***—

पैतीसवां बाब।

राजा जहानाबाद का मुकद्दमा।

इधर जहानाबाद में दियानत दियानत मची थी उधर एक नया गुल खिला, यानी राजा हर्बंसनरायन ने एक पटवारी को मार डाला--कुञ्जबिहारीलाल नामी पटवारी राजा साहब का क़दीम दुश्मन् था हमेशा उनके खिलाफ़ गवाहियां दिया करता था और राजा साहब उससे सख्त परेशान रहते। हर्बंसनारायन शिकार को जाते थे रास्ते में पटवारी मिला--राजा साहब की आतिश ग़ज़ब तेज़ हुई पटवारी ने खुदा जाने क्या गुस्ताखी की कि राजा साहब ने बन्दूक फ़ायर कर दी और कुञ्जबिहारी का शिकार कर डाला।

राजा साहब की तरफ़ से फ़ौरन् पूरा इन्तिज़ाम किया गया, पुलिस और हाकिम पर्गन: यानी डिप्टी हिकमतुल्ला मुआफ़िक कर लिये गये और बाइत्मीनान तमाम पुलिस ने कार्रवाई शुरू की--

राजा साहब के एक मुलाज़िम ने इकबाल किया कि उसकी बन्दूक इत्तफ़ाकिया फ़ायर हो गई और कुञ्जबिहारी मर गया पुलिस ने उसी मुलाज़िम को चालान किया और डिप्टी हिकमतुल्ला के इजलास में मुक़द्दमा पेश हुआ--राजा साहब से किसी ने पूछा भी नहीं--दो चार रोज़ के बाद मि: दियानतहुसैन को कुल हालात की इत्तला हुई और यह भी खबर पहुंची कि दस हज़ार रुपये डिप्टी साहब

को इस मुकद्दमे में मिलने वाला है वह फ़ौरन् साहब डिप्टी कमिश्नर के पास चले गये—

दियानतहुसैन—ब्राउन ! आज बड़ा भारी शिकार लाया हूं—

मिः ब्राउन—क्या ! दियानतहुसैन खैरियत तो है।

दियानतहुसैन--तुमने कुंजबिहारी पटवारी के क़त्ल का हाल सुना ?

मिः ब्राउन—हां मैंने सुना हरबंश नारायन के किसी सिपाही ने मार डाला और शायद वह इकबाल भी करता है—

दियानतहुसैन—यह महज़ ग़लत खबर है, खुद हरबंश नारायन के हाथ से वह मारा गया और हिकमतुल्ला को दस हज़ार रुपये इस मुकद्दमे में दिये गये हैं या दिये जानेवाले हैं और मब-इंस्पेक्टर ने भी बड़ी भारी रक़म मारी—यह मुकद्दमा फ़ौरन् मेरे इजलास में मुन्तकिल करो मैं असल मुजरिम बरामद कर लूंगा—

मि. ब्राउन ने वह मुकद्दमा उसी वक्त मि: दियानतहुसैन के इजलास में मुन्तक़िल कर दिया और दियानतहुसैन सरगर्म तहक़ीक़ात में मसरूफ़ हुये, उन्होंने खुफ़िया तौर पर तहक़ीक़ात की और मक़्तूल की औरत को तलब करके मुफ़स्सल हाल दर्याफ़्त किया—खुशनसीबी से सैय्यद दियानतहुसैन को दो गवाह चश्मदीद मिल गये। एक मंगनू कुर्मी जो मौके वारदात के क़रीब खेत में धान काट रहा था और जब हरबंशनारायन ने बन्दूक़ चलाई उसने गुल मचाया लेकिन राजा साहब ने उस को रोक दिया—दूसरा गवाह बिपत चमार था यह भी वहीं अपने खेत में था और उसने भी राजा को बन्दूक़ चलाते देखा था—जिस सिपाही ने क़त्ल से इक़बाल किया था पीछे को साबित हुआ कि उस रोज़ जहानाबाद में वह मौजूद भी न था।

अलगर्ज़ राजा हरबंश नारायन मुल्ज़िम करार पाये और सैय्यद दियानतहुसैन के इजलास में मुकद्दमे की पेशियां होने लगीं बैरिष्टर और वकला दूर दूर से बुलाये गये और मिन् जानिब सर्कार भी एक बैरिष्टर आया था।

दौरे के मुकद्दमे में दियानतहुसैन के पास अकसर गुमनाम खतूत आते थे कि अगर तुमने राजा को बरी न कर दिया तो तुम अपनी जान से सब्र करो—मिष्टर

दियानतहुसैन को इन धमकियों की कोई पर्वाह न थी और वह बड़ी मज़बूती से मुकद्दमे की कारवाई में मसरूफ़ थे—

हनोज़ मुकद्दमा खतम न हुआ था कि एक रोज़ आठ बजे शब को दियानतहुसैन के पास उनका अर्दली आया।

अर्दली--अगर जां बख़्शी हो तो मैं कुछ अर्ज़ करूं।

दियानतहुसैन--कहो क्या कहना चाहता है?

अर्दली--हुजूर नाराज़ न हों तो मैं कहूं।

दियानतहुसैन--नहीं हम हर्गिज़ नाराज़ न होंगे।

अर्दली—राजा हरबंश नारायन के बेटे मुझको मिले थे और हुजूर से मिलना चाहते हैं।

दियानतहुसैन—किस वास्ते?

अर्दली--हुजूर, हुजूर, वह—

दियानतहुसैन--बोलो तुम क्या कहना चाहते हो डरो मत—

अर्दली--अगर हुजूर हरबंस नारायन को छोड़ दें और उनकी आबरू बचायें तो वह एक लाख रुपया हुजूर की नज़र करें और ऐसी रकमें तो साहब लोग भी ले लेते हैं।

दियानतहुसैन--हमारे साम्हने से तुम चले जाओ और ऐसी बात फिर मत कहना, एक लाख नहीं वह एक करोड़ मुझको दें तो मैं लात मारूं—मैं ईमानफ़रोशी करने नहीं निकला हूं।

दियानतहुसैन पर वाक़ई यह वक्त बहुत सख़्त था उनकी हालत के आदमी के वास्ते एक लाख रुपया कम न था और उसका वापस करना एक मुश्किल काम था लेकिन अलहम्दुलिल्लाह वे साबितकदम रहे—दूसरे दिन उन्होंने हरबंसनारायन को सेशन सुपुर्द कर दिया और बिल् आख़िर अदालत सेशन से हरबंशनरायन को सज़ाय मौत दी गई दियानतहुसैन की इस लियाक़त और ईमानदारी की अज़हद तारीफ़ हुई और तमाम ज़िले में लोग उनका लोहा मान गये। मि: ब्राउन ने भी अज़हद शुक्रगुज़ारी की—

मौलवी हिकमतुल्लाह वहां से अलहदा किये गये और उनके अज़ीज़ों की भी तबदीलियां हो गईं।

इस मुकद्दमे के बाद दियानतहुसैन के

दुश्मनों की तायदाद जहानाबाद में बहुत बढ़ गई और हज़ारहां आदमी उनके तिश्नाखू थे। कोई दिन ऐसा न होता था कि दो चार खतूत उनके पास न आते हों। उनमें हज़ारहां गालियां लिखी रहती थीं और यह धमकी होती थी कि बहुत जल्द हरबंश नारायन के पास तुम भी भेजे जाओगे — दियानतहुसैन बिल्तबह एक जवांमर्द और हिम्मतवर शख्स थे ऐसी गीदड़ भबकियों को वह ख्याल में भी न लाते थे। मि: ब्राउन ने भी उनको समझाया कि अपनी हिफ़ाज़त का कुछ इन्तिज़ाम करो, लेकिन वह हमेशा हँस कर टाल देते थे —

— ※※※ —

छत्तीसवां बाब।

सैय्यद दियानतहुसैन की शुहरत।

राजा जहानाबाद के मुकद्दमे की शुहरत ऐसी न थी जो मि: दियानतहुसैन की लियाकत और अमानत को पूरी रौनक न देती। तमाम अंगरेज़ी, हिन्दी और उर्दू अखबारात में इसका तज़किरा बकमाल आब व ताब आया हुआ और मुल्क के हर हिस्से से सैय्यद दियानतहुसैन की मदह व सना की सदायें आती थीं —

मि: पिटर्सन् जुडिशियल सेक्रेटरी गवर्मेण्ट जो दियानतहुसैन के बड़े पुराने दोस्त और उनके हालात से पूरे आगाह थे इस कामयाबी को सुनकर निहायत खुश हुये और उन्होंने मीर दियानतहुसैन को यह चिट्ठी लिखी —

मेरे प्यारे दियानत—

मुझको उम्मेद है कि तुम जहानाबाद बहुत पसन्द करते होगे, वह बहुतही अच्छा छोटा ष्टेशन है और शिकार का भी उस ज़िले में बड़ा मौका है —

मैंने दिली मसर्रत् से अख़बारात में जहानाबाद के मुकद्दमे के हालात देखे, जिस कामयाबी से आपने ऐसे मुतमौव्वल और जी इख़्तियार मुलज़िम को सज़ा दिलाई वह बहुत कुछ काबिल तारीफ़ है और मेरी दिली मुबारकबाद कुबूल कीजिये। मैंने तमाम मिस्ल सर जान चार्लस को दिखलाई और लफ्टेनेण्ट गवर्नर ख्वाहिश करते हैं कि मैं उनके लिये इन्तिहा शुक्रगुजारी आप तक पहुंचाऊं — मुझको मालूम हुआ है कि सर जान ने तुम्हारी दियानत और लियाकत की बाबत एक ख़ास रिपोर्ट गवर्मेंट हिन्द को भेजी है और मैं आप को यकीन दिलाता हूं कि बहुत ज़माना न गुज़रेगा कि मैं तुमको ष्टार आफ़ इण्डिया लिखूंगा

मैंने बहुत अफ़सोस के साथ सुना कि जहानाबाद के लोग तुमसे रंज रखते हैं और तुमको तरह तरह की धमकियां देते हैं, मैं तुमको यकीन दिलाता हूं कि ये सब इश्तियाल चन्दरोज़ा हैं और ज्यों ज्यों ज़माना तरक्की करता जायगा ये सब लोग तुम्हारे शुक्रगुज़ार होंगे लेकिन अगर तुमको कुछ वहां की सुसाइटी से ख़ौफ़ हो तो मुझे फ़ौरन् इत्तला दो, मैं तुमको दूसरे ज़िले में तबदील करा दूं। जो कुछ मेरे इमकान में हो मैं हमेशा तुम्हारे लिये करने को मुस्तैद हूं —

मैं शुरू मौसिमे सर्मा में वतन आनेवाला हूं – मिसेज़ पिटर्सन् मुझसे कहती हैं कि क्या अच्छा होता अगर दियानतहुसैन भी हमारे हमसफ़र और वतन में हमारे मिहमान हों –

तुम्हारा दिली दोस्त
पिटर्सन

मि: दियानतहुसैन ने यह ख़त पाकर खुदा का बहुत शुक्र अदा किया कि उनकी मेहनत ठिकाने लगी और लफ़टिनेन्ट गवर्नर साहब ने इज़हार मसर्रत किया। ष्टार आफ़ इण्डिया के खिताब की उनको कोई ऐसी खुशी न थी क्योंकि वह बमुक़ाबिला उन खिताबों और दुनयवी आरज़ी इज़्ज़तों के इस सच्ची इज़्ज़त की जो उनके मुल्कवालों की तरफ़ से हुई बहुत ज़्यादा क़द्र करते थे ! मि: पिटर्सन के इस जुमले को जो उन्होंने फ़ीरोज़नगर से चलते वक़्त कहा था हमेशा याद रखते थे। वह जुमला यह था कि 'मैं सर्कार का नौकर हूं लेकिन पब्लिक मुझ से राज़ी रहे तो गोया मैंने अपनी खिदमात का इनाम पा लिया'।

मि: दियानतहुसैन उस जुमले को पढ़कर बहुत हँसे जो धमकियों के बारे में मि: पिटर्सन् ने अपनी चिट्ठी में लिखा था। यह खुद ऐसे बहादुर और जवांमर्द थे कि इन गीदड़-भभकियों की ज़रा परवाह न करते थे – जिस तरह हमेशा अपने काम को करते थे वैसेही अब भी करते थे उनके चेहरे पर ज़रा भी शिकन् न थी – उस ख़ौफ़ से जहानाबाद की तब्दीली उनको कभी गवारा न थी और इसी वजह से जाना पसन्द न करते थे; मगर पिटर्सन् का पयाम अलबत्ता ऐसा न था कि वह उसको टाल जाते। इङ्गलैण्ड जाने का उनको लड़कपन से शौक था और मि: पिटर्सन् से वह कई मर्तबः अपना इरादा भी कह चुके थे लेकिन दो अम्र माना था – औव्वल तो उनके पास इतना रुपया न था कि सफ़र योरप को काफ़ी होता दूसरे कोई दोस्त साथी न था – माना दोयम् तो जाता रहा यानी मिष्टर व मिसेज़ पिटर्सन् से ज़्यादा मुहब्बती हमसफ़र कौन मिल सकता था, माना अब सिर्फ़ रुपये की ज़रूरत थी और यही सब से औव्वल चीज़ थी – बेरुपये कोई काम नहीं हो सकता, बक़ौल शायर –

ऐ ज़र तू खुदा नहीं वलेकिन् बखुदा
सत्तारे अयूब व क़ाज़ी अलहा जाती

हमारे दियानतहुसैन के पास अगर कमी थी तो रुपये की, बिचारे ३६०) तनख़्वाह पाते थे अंगरेज़ी तरीक़े से रहते

थे, बँगले का किराया, घोड़ा गाड़ी, अंगरेज़ी कपड़े, नौकर चाकर सब उसी में खर्च हो जाता था—साठ रुपये अपनी मां को भेजते थे और तीन सौ रुपये में अपने दिन काटते थे—उनकी मुफ़लिसी और तकलीफ़ात से जो लोग आगाह थे वह उनकी दियानत की और भी ज़्यादा क़द्र करते थे—वाक़ई जो लोग फ़ारिगुल्बाल और मुतमौव्वल हैं और वह रिश्वत न लें तो कोई बड़ा काम नहीं लेकिन वह ग़रीब जो मोहताज़ी में जिन्दगी बसर करते हैं तबाह और परीशान रहते हों और फिर अपनी नीयत डावांडोल न करें बड़े मर्द हैं—

दियानतहुसैन इसी फ़िक्र में थे कि अगर उनके पास काफ़ी रुपया जमा हो जाय तो वह फ़ौरन् इङ्गलैण्ड चले जांय चुनांचे उन्होंने मि: पिटर्सन् को भी यही लिखा गो यह शेखचिल्ली के से मन्सूबे थे लेकिन—

उसे फ़ज़्ल करते नहीं लगती बार
न हो उससे मायूस उम्मेदवार।

इस अर्से में मि: दियानतहुसैन ने और भी बहुत अच्छे २ काम किये और डिप्टी कमिश्नर को निहायत राज़ी रक्खा। जहानाबाद में या तो पुरानी किता के कायथों और मुसलमानों का मजमा था या अब दियानतहुसैन की बदौलत आज़ुएट और अण्डर-ग्राजुएट के सिवाय ज़िले के अमलों में दूसरा दिखाई न देता था। जो लूट मार और नोच खसोट कचहरी में मची थी वह बिलकुल मिट गई, और तमाम अहल मामले ज़िमींदार और रैयाया खुश २ आते हँसते खेलते वापस जाते—सोहबत का असर वाक़ई जल्द पड़ता है जो पुराने वज़ा के दो चार अमले ज़िले में रह गये थे उन्होंने भी रिश्वत लेनी छोड़ दी—जहानाबाद की जो आज कल हालत थी वह अमेल के हाल से बखूबी साबित हो सक्ती है।

एक रोज़ मुहाफ़िज़दफ़्तर कलेक्टरी जो पुराने किता के एक अहलकार थे अपने घर में बैठे थे ये बिचारे हमेशः जब कचहरी से लौटते दो चार रुपया अपने बीबी के हाथ धरते थे। और अब ज़माने का रंग देखकर उन्होंने भी रिश्वत का लेना तर्क कर दिया था, कचहरी से खाली हाथ आते और खाना खाकर सो रहते थे। उनकी बीबी ने उनसे यों गुफ़्तगू की:—

बीबी—भला यह तो बतलाओ कि आज दो तीन रोज़ से तुम किसका मुंह सो उठते देखते हो?

मियां— क्यों ? यह तुमने किस वजह से पूछा– ?

बीबी — आज चौथा रोज़ है कि तुम खाली हाथ कचहरी से आते हो एक पैसा भी नहीं मिलता लड़के आसरा लगाये रहते हैं कि अब्बा कचहरी से लौट कर मिठाई खाने को कुछ देंगे, और बिचारे अपना सा मुंह लेकर रहजाते हैं।

मियां--मुंह तो मैं तुम्हाराही देखता हूं:—

बीबी—नौज मेरा मुंह ऐसा। मनहूस होता यह तुम तोहमत रखते हो—

मियां — मैंने तुम्हारे मुंह को मनहूस नहीं बताया तुम ख़फ़ा क्यों होती हो ?

बीबी—फिर आखिर क्या सबब है ?

मियां — मैंने अब रिश्वत लेनी तर्क करदी.।

बीबी--कोई सबब तो बतलाओ।

मियां--हमारे यहां मुसलमान डिप्टी जो छोटे साहब कहलाते हैं इससे बहुत चिढ़ते है और बड़े साहब बिलकुल उनके पंजे में हैं-तमाम ज़िलेमें मदरसे से बुलवा कर लौंड़े भरती कर दिये हैं, वह लोग एक छदाम भी किसी से नहीं लेते,—मसल मशहूर है कि "जैसा देश वैसा भेष" इसी वजह से हम सब लोगों ने अपना हक़हकूक लेना बन्दकर दिया।

बीबी—तुमको इस की चाल चलने की कोई ज़रूरत नहीं उन निगोड़ों के आगे पीछे कोई न होगा। तुम्हारे अल्लाह रक्खे दो २ बेटियां ब्याहने को बैठी हैं प्यारे नवाब मिर्ज़ाका ब्याह दरपेश है और अल्लाह रक्खे मुन्नी बेगम की छोकरी की निसबतभी होनेवाली है अगर न लोगे तो काम कैसे चलेगा—

मियां—खुदा तनख़्वाही में बरकत देगा—

बीबी—देखुका। वही हाल घर का होगा जो पड़ोस के मीर साहब का है। बीबी के साबूत दुपट्टा भी न देखा। ना बीबी मुझसे अब घर का धन्दा नहीं होने का तुम जानो और तुम्हारा काम—तुमतो अब मौलवी बनके बैठे जो हराम से तोबा की, मै घर बार कैसे चलाऊंगी ?।

मियां—क्या रिश्वत के हराम होने में भी कुछ शक है ?

बीबी—क्या निगोंडी रिश्वत ही ने क़ुसूर किया है ? दुनिया भर का झूठ सच हर वक़्त ज़ुबान पर रहता है, वो हराम नहीं, ?

मियां--फिर क्या किया जाय ! अब कोई अपनी आबरू मिटा दे तब आप खुश होंगी !

बीबी--जी हां हमतो आप की दुश्मन हैं, हम न आपकी आबरूअ़ेज़ी पर खुश होंगे तो क्या दूसरा होने आयेगा?।

मियां--तुमतो बात २ में फ़ी निकालती, हो समझती हो नहीं ज़माना पुर आशोब है ज़रा २ सी शिकायत पर अमले बराबर मौक़ूफ़ होते जाते हैं, इस वक्त में फूंक फूंक कर कदम रखना चाहिये ले मैं अब बाहर जाता हूं, वहीं सो रहूंगा,—

सैंतीसवां बाब।

दियानतहुसैन ष्टार. आफ. इण्डिया।

जैसे मि: पिटर्सन ने सैय्यद दियानतहुसैन के सितारे हिंद होने की पेशीनगोई की, हर तरफ़ से अफ़वाहें मशहूर होनी शुरू हुईं। तमाम युरोपियन हल्कों में इसकी शुहरत थी कि अनक़रीब मि: दियानतहुसैन को स्टार आफ़ इण्डिया का खिताब मिलनेवाला है। बहुत से अहबाब ने उनको पेशगी मुबारक बाद की चिट्ठीयां लिखीं, बहुतों ने विलायत अपने दोस्तों और अज़ीज़ों के नाम उनकी सिफ़ारिश में खतूत भेजे। एक रोज़ साहब डिपुटी कमिश्नर के यहां खाने में यों बातचीत हुई।

डिप्टी कमिश्नर– दियानतहुसैन अभी तक कुछ हाल नहीं मालूम हुआ कि तुमको खिताब कब मिलेगा—

डाक्टर--यह तो तहक़ीक है कि इनका नाम जा चुका है। बर्थडे आनर्स जो इस मर्तबा तक़सीम होंगे मुझको कामिल यक़ीन है कि उसमें तुम्हारा नाम ज़रूर होगा।

दियानतहुसैन– लेकिन मुझको उसका बहुत शौक नहीं है और मैंने कोई काम ऐसा नहीं किया जिसका मुझे सिला मिलनेवाला हो।

डिप्टी कमिश्नर–देखो दियानतहुसैन ! यह कोई छोटा काम न था कि तुमने राजा जहानाबाद से रिश्वत नहीं ली इतनी बड़ी रकम का वापस करना बड़े मर्द का काम है।

दियानतहुसैन—आपने यह किस्सा क्योंकर सुना ?

डिप्टी कमिश्नर--भला कोई बात छिपी रहती है ! मैंने यह हाल लफ़टेनन्ट गवर्नर से भी बयान किया था—

दियानतहुसैन--यह कोई बात ऐसी न थी जिसकी शुहरत की जाय-- यह आप खूब याद रखिये कि जो शख्स दियानत की क़द्र जानता है वह करोड़ रुपये पर भी निगाह न डालेगा।

डिप्टी कमिश्नर--नहीं, ताज्जुब यह है कि तुम ऐसी तकलीफ़ में ज़िन्दगी बसर करते हो और बावजूद इसके अपनी ईमानदारी में धब्बा नहीं लगने देते--

दियानतहुसैन--मैं समझता हूं कि आप लोग मुझ से सब आगाह हैं इस वास्ते पर्दे की एहतियाज नहीं। वाकई मैं जिस मुसीबत में रहता हूं उस का आलम वो दाना खुदाये करीम है-- चार चार रोज़ गुज़र जाते हैं कि मैं सिर्फ़ दाल और चावल खाकर रह जाता हूं लेकिन मैं इस पर भी खुदा का शुक्रगुजार हूं कि वह मुझे किसी का दस्त निगर तो नहीं किये है।

डाकृर--दियानतहुसैन! तुम अपनी शादी क्यों नहीं करते?

दियानतहुसैन--अजब आदमी हो--अरे क्यों सुनते जाते हो कि तनहा तो बसरही नहीं होती व्याह करके क्या करेंगे।

डिप्टी कमिश्नर--नहीं जी तुम व्याह न करना इङ्गलैंड हो आओ तब व्याह करना।

डाकृर--कब तक जाओगे?

दियानतहुसैन--सरीह सुनते जाते हो कि कौड़ी पास नहीं, अभी मैं कैसे बताऊँ कि कब जाऊंगा-- राज मुनीश्वर-अलीखां की बेटी से मेरी शादी ठहरती है लेकिन मैं हर्गिज़ इसको पसन्द नहीं करता कि रुपये की लालच से एक ग़ैर-तालीमयाफ़ा औरत से ज़िन्दगी भर का साथ इख़्तियार करूं। मैंने चन्दरनगर लाटरी में कुछ टिकट खरीद किये हैं अगर मुझे रुपया मिल गया तो फ़ौरन् विलायत चला जाऊंगा। मि: पिटर्सन् से मैंने वादा किया है कि मैं उन्हीं का हम्सफ़र होऊंगा।

डाकृर--लेकिन वह तो जल्द, जानेवाले हैं।

दियानतहुसैन--हां मुझे मालूम है।

इस डिनर के दूसरे दिन साहब डिप्टी कमिश्नर ने बराहरास्त लफ़टेनेण्ट गवर्नर को यह चिट्ठी लिखी :

माइ डियर सर्जान।

दियानतहुसैन के पूरे हालत से मैं आप को वक्तन् फवक्तन् इत्तला दे चुका हूं लेकिन वह

हालात सिर्फ़ उनकी दियानत और लियाकत के मुतल्लिक थे जिन मुसीबतों में वे अपनी ज़िन्दगी बसर करते है वह आपको इत्तला देना ज़रूरी समझता हू—वह गरीब अभी तक ३६०) रु० तनख्वाह पाता है—अंग्रेजी सोसाइटी मे शरीक है और यूरोपियन् की तरह जिन्दगी बसर करता है उस्की मेज़ अकसर बे आलू और उसका मुंह अकसर बे चुरुट के रहता है—उस गरीब की मुसीबते जब से मुझ को मालूम हुई है मुझ को निहायत रज है और वाकई यह अम्र है कि तीन सौ साठ उस के वास्ते क्या काफी हो सकता है? जो शखस अपनी तरक्की खुद न कर लेता हो मेरी राय मे गवर्मेण्ट को उस्की तरक्की करनी चाहिये—दियानतहुसैन ने अपनी माली हालत मुझ से छिपाई लेकिन इत्तिफाक से मुझको उन के खानगी हालात मालूम हो गये और इसी वजह से मैं इस मामले में आप की मदद की ख्वाहिश करता हू—

आप का खादिम

जे० ब्राउन।

सर्कारी रिपोर्ट ख्वाह कैसीही बे-असर हो लेकिन यह मुमकिन नहीं कि डेमी आफिशियल सिफारिश बेकार हो। सर जान चार्लस ने इस सिफ़ारिश की बड़ी कद्र की और मि: दियानतहुसैन को कायम मुकाम जण्ट मजिष्ट्रेट दर्जा औव्वल मुकर्रर फ़र्माया और अपने हाथ से दियानतहुसैन के नाम यह चिट्ठी भेजी—

माइ डियर राजा,

आप को मैं खुशी से इत्तला देता हूं कि मैंने आज आप को कायममुकाम जण्ट मजिष्ट्रेट दर्जा औव्वल मुकर्रर किया। मुझ को उम्मेद है कि यह मुकर्ररी आप की मौजूदा तकलीफ़ात में मदद देगी"।

आप का वफ़ादार

जान चार्लस।

गजट में छपने के पहिले उनको खुद लफटेनेंट गवर्नर की तहरीर से अपनी तरक्की का हाल मालूम हुआ, फ़ौरन् वह चिट्ठी लियेहुये डिप्टी कमिश्नर के पास गये और उनका शुक्रिया अदा किया और लफ़टेनेण्ट गवर्नर के नाम शुक्रिये की चिट्ठी रवाना की—तमाम ष्टेशन के लोग इस तरक्की से निहायत खुश हुये।

इस इज़ाफ़ये तनख्वाह से वाकई दियानतहुसैन की हालत में बड़ा फ़र्क आ गया अफ़लास दूर हुआ और वह आराम से ज़िन्दगी बसर करने लगे। गवर्मेण्ट की इस बर्महल पर्वरिश ने तमाम मुलाज़िमान् सर्कार पर बहुतही अच्छा असर डाला और यह बात सबको पूरे तौरपर मालूम हो गई कि अगर कोई शखस अपनी खिदमात को लियाकत और दियानत के साथ अञ्जाम दे तो गवर्मेण्ट उसकी दस्तगीरी करने को तैयार है।

हमारे दोस्त मि: दियानतहुसैन को ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट हुये बहुत ज़माना न गुज़रा था कि पायनियर ने दफ़तन् उनके स्टार आफ इण्डिया की खुशखबरी सुनाई आनर्ज़ गजट जो लण्डन में आया हुआ उसकी नकल बज़रिये तार पायोनियर में आया हुई। मिन्जुमला और लोगों के राजा दियानतहुसैन सी० यस० का भी उन्हें नाम था इस खबर के मशहूर होते ही ज़िले में बड़ी मसर्रत हुई। बहुत से जलसों को तरफ़ से गवर्मेंट में शुक्रिये अदा किये गये और खुद दियानतहुसैन को मुबारकबाद दी गई—दो महीने बाद लफ़टेनेण्ट गवर्नर ने खास दर्बार किया और तगमा सितारेहिन्द सैय्यद दियानतहुसैन को अता करते वक्त जो अलफ़ाज कहे हम ज़ैल में दर्ज करते हैं—

मुझको अपनी तमाम आफिशियल जिन्दगी में ऐसी मसर्रत बहुत शाज हुई जैसी आज आप को तगमा स्टार आफ इण्डिया देने में हुई—हुज़ूर कैसरहिन्द ने बराह मराहम खुसरुआना आप को यह इज्ज़त अता फ़र्माई जिस्के आप हर तरह मुस्तहक हैं। हुज़ूर वाइसराय निहायत अफ़सोस करते है कि वे इस मौके पर ग़ैरहाजिर हैं और मै उनकी कायममुकामी कर रहा हूं—मि: दियानतहुसैन! जो शख्श आप के हालात से आगाह है वाकई समझता है कि दुनियां में अपनी आप मदद इस तरह हो सकती है। जब आप के वालिद नामदार ने इन्तिकाल किया आप बिलकुल बे सरो सामान हो गये और कोई शख्स यह नहीं समझ सकता था कि यह कदीम खानदान फिर भी कुछ नाम पैदा करैगा, लेकिन मि: पार्कर ने ऐसा अच्छा बीज बोया था कि वह अब खुदा की मेहर्बानी से ऐसा खुशनुमा दरख्त है—आप ने अपनी लियाकत दियानत व सचाई से हिन्दोस्तान मे एक उमदा मिसाल पैदा कर दी है और यह साबित कर दिखाया कि इस मुल्क में भी ऐसे बहादुर लोग मौजूद हैं। जहानाबाद के मुकद्दमे में आपने जो सर्गर्मी और ईमानदारी सर्फ़ की वह ऐसी न थी कि हुज़ूर कैसरहिन्द की इत्तिला तक न पहुंचाई जाती—आप ने शुरु उम्र में जो मुसीबतें बर्दाश्त कीं उसका मुझको निहायत अफ़सोस है लेकिन मैं यकीन करता हूं कि उस्से आप का वकार दो गुना हो गया—

मैं फिर अपनी दिली मसर्रत ज़ाहिर करके आप को मुबारकबाद देता हूं और दुआ करता हूं कि मै अपने नौजवान दोस्त को बाइकबाल और खुशहाल देखूं—

सर चार्लस ने जिन अलफ़ाज में मि: दियानतहुसैन के हालात बयान किये वह गो बहुत मुख़्तसर थे लेकिन बहुतही असरपज़ीर थे। इसमें कुछ शक नहीं कि सैय्यद दियानतहुसैन की इबतिदा और उनकी तकलीफें ख्याल करने से यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि हिम्मत और इस्तकलाल अजब चीज़ है और इन्सान अगर

चाहे तो अपनी हालत बहुत कुछ सम्भाल
कता है—

सितारेहिन्द होने के बाद सैय्यद दियानतहुसैन का इरादा सफ़र इङ्गलेण्ड और भी ज़ियादा पुख़्ता हो गया। बार बार वह यही तमन्ना करते थे कि ऐ काश चन्दरनगर लाटरी में पहिला इनाम उन्हें मिल जाता और वह फ़ौरन् रुख़सत लेकर विलायत जाते—

१६ वीं सितम्बर तारीख़ लाटरी मुकर्रर थी। वह दिनभी दियानतहुसैन के ख़याल से जाता रहा—इत्तफ़ाक से उस रोज़ शाम को साहब सुपरिन्टेण्डेन्ट पुलिस के यहां लानटेनिस् था और दियानतहुसैन भी वहां गये थे—खेल में मसरूफ़ थे इतने में टेलीग्राफ़ आफ़िस से एक चपरासी आया और मिः दियानतहुसैन को एक लिफ़ाफ़ा दिया। खोलतेही दियानतहुसैन फ़र्तेमसर्रत से उछल पड़े और करीब था कि शादीमर्ग हो जाते, बार २ ख़ुदा का शुक्रिया अदा करने लगे—

डिप्टी कमिश्नर—दियानतहुसैन! क्या है जो बहुत ख़ुश हो रहे हो?

दियानतहुसैन—ख़ुदा का शुक्र है कि मुझे लाटरी में पहिला इनाम मिला—

सुपरिण्टेण्डेण्ट—हां! ख़ुदा का शुक्र है!

डाकृर—दियानतहुसैन! ख़ुदा ने ऐन वक्त पर तुम्हारी मदद की और वाकई ख़ुदा ने भी तुम्हारी दियानत का इनाम दिया—

डिप्टी कमिश्नर—ले अब बताओ क्या इरादा है?

दियानतहुसैन—इरादा क्या है मैं ज़रूर नवम्बर में मिः पिटर्सन् के साथ इङ्गलैण्ड जाऊँगा—

डिप्टी कमिश्नर—मगर यार, हो बड़े ख़ुशनसीब! हमने तमाम उम्र में सदहा मर्तबः लाटरियां ख़रीद कीं मगर एक पैसा कभी न पाया—

डाकृर—अजी मुझे तो तमाम उम्र इसकी अर्मानही रही कि चिट्ठी में कुछ मिले लेकिन एक दमड़ी भी न मिली—

उस वक्त ऐसी ख़ुशी मच गई कि सबने खेल बन्द कर दिया और उसी की बातें होने लगीं—सब मेम और अंगरेज़ बार बार दियानतहुसैन को मुबारकबाद देते थे मिठाई के एवज़ दावत मांगते थे, दियानतहुसैन भी बेहद मसरूर थे और बार बार ख़ुदा का शुक्र करते थे—

अढ़तीसवां बाब।

राजा मुनौअरअली खां की बेटी।

इस किस्से में राजा मुनौअरअली खां का नाम इतनी मर्तबः आ चुका है कि नाज़रीन् को उनसे दोबारा इन्ट्रोड्यूस करने की ज़रूरत नहीं है—राजा मुनौअरअली खां उन आली खान्दान, बाहिम्मत और रोशन-ज़मीर रऊसा में से थे जिनकी ज़ात से मुल्क की रौनक और कौम का बहुत कुछ फायदा था—उनका दारुल रियासत मग़रबी तरक्कियात का नमूना हो रहा था। स्कूल, शफ़ाखाना, तारघर, ज़नाना मदर्सा, ज़नाना अस्पताल, मदर्सा सनअत व हिर्फ़त, वाटरवर्कस, अलगर्ज़ कोई चीज़ ऐसी न थी जो उस छोटे कस्बे में मौजूद न हो—

राजा साहब के पास बड़ी भारी जिमीदारी और काफ़ी दौलत थी और तीन लाख रुपया सालियाना आमदनी तो सिर्फ़ इलाके से थी, इसके अलावा नील की तिजारत से बहुत रुपया आता था और जब का यह तज़किरा किया जाता है राजा साहब के पास आठ लाख रुपये के प्रामिसरी नोट जमा थे—राजा साहब अपनी राय के बड़े मज़बूत थे—इल्वर्ट बिल के ज़माने में गो बहुत कुछ उन पर ज़ोर डाला गया मगर कौंसिल में जो उन्होंने राय कायम की थी उससे न हटे। कानून लगान में जो तर्मीम रिआया के लिये ग़ैरमुज़िर और ज़िमींदारान के लिये मुफ़ीद थे उनको बग़ैर मंजूर कराये न छोड़ा—उनमें एक बड़ी सिफ़त यह थी कि किसी गरोह या पार्टी में अपने को कभी नहीं डालते थे। मज़हबी झगड़ों और कौमी तनाज़आत से हमेशा अपनेको अलग रखते थे और इस वजह से हिन्दू मुसलमान सभी उनसे राज़ी रहते थे, वह अगर किसी अम्र में बेनसीब थे तो औलाद के बारे में—यह भी एक अजब बात देखी जाती है कि जिसके घर खाने को नहीं वहां तो हरसाल आमद लगी रहती है और जिनको ज़रूरत और तमन्ना होती है वहां औलाद का बीज ही मारा जाता है—

सिर्फ़ एक साहबज़ादी हमारे राजा साहब को थी वह भी बदनसीबी से गूंगी—राजा साहब और मीर दियानतहुसैन के वालिद से बहुत ज्यादा मरासिम थे और सिर्फ़ मरासिमही नहीं बल्कि कुछ क़राबत् भी थी—दियानतहुसैन के मुसीबतों में राजा मुनौअरअली खां ने

[illegible] इसी मुहब्बत था [illegible]। फ़ौजदारी की [illegible]की और ऐसी पैरवी की कि अगर दियानतहुसैन के वालिद ज़िन्दा होते तो वह भी उससे ज़्यादा क्या करते। राजा साहब को यह दिली तमन्ना थी कि उनकी लड़की जिसका नाम साबिरह् था दियानतहुसैन को ब्याही जाय — यह तमन्ना उनको कुछ इस ख़्याल से थी कि उनके बाद उनका इलाका सर्सब्ज़ रहै और उनका नाम और वकार क़ायम रहै — और कुछ इस ख़्याल से कि दियानतहुसैन को फ़ायदा पहुंचे मगर दियानतहुसैन को यह बात कभी मंज़ूर न हुई। दोस्त अहबाब ने हरचन्द समझाया अज़ीज़ों अकारिब ने यहां तक कि खुद दियानतहुसैन की वालिदा माजिदा ने इसरार किया मगर न माना — एक रोज़ राजा साहब ने खुद दर्पर्दह दियानतहुसैन से इस बारे में गुफ़्गू की मगर कुछ फ़ायदेमन्द न हुई। आखिरकार हसब मख़्शिा मीर दियानतहुसैन, सैय्यद हिकमतअली खां के साथ राजा मुनौअर अली खां ने अपनी साहबज़ादी का अक़द कर दिया। सैय्यद हिकमतअली खां राजा साहब के दूर के रिश्तेदारों में से थे — बीस बाईस बरस की उम्र थी — कलकत्ते यूनिवर्सिटी के एम० ए० थे और निहायत नेकमिज़ाज और मुतमौव्वल शख़्स थे — मीर दियानतहुसैन ने उनकी बहुत कुछ तारीफ़ और सिफ़ारिश राजा साहब से की और आखिरकार साबिरः का ब्याह उन्ही से हुआ — शादी में राजा मुनौअरअली खां ने कोई धूम धाम न की — सिर्फ़ क़रीबी रिश्तेदार और तखसीसी अहबाब शरीक थे और शरई तौर से अक़द हो गया। जो कुछ राजा साहब ने खर्च किया वह कारे खैर में। इस शादी के यादगार में एक खैरातखाना क़ायम किया और बहुत से मदर्सों में चन्दा भेजा। मीर दियानतहुसैन भी इस तकरीब से तशरीफ़ लाये थे और आठ रोज़ बराबर मुक़ीम रहे — जब शादी ब्याह से फ़राग़त हुई और कुल रसूम ज़रूरी अदा हो गये मीर दियानतहुसैन जहानाबाद वापस आये॥

—***—

उनतालीसवां बाब

राजा मुनौअरअली खां की वसीयत।

शादी के चन्द रोज़ बाद राजा साहब ने अपना वसीयतनामा लिखा और सर बमुहर दफ़्र रजिष्ट्रार में भेज दिया उसके

मज़ामीन की इत्तला सिवा राजा साहब के दूसरे को न थी और सच यह है कि किसी को यह भी खबर न थी कि राजा साहब अपना वसीअतनामा दाख़िल कर चुके—एक रोज़ राजा साहब सुबह घोड़े पर सवार हवा खाने गये, रास्ते में एक हाथी मिला, घोड़ा चौंका और राजा साहब गिर पड़े सर फट गया और बेहोश हो गये—साईस और राही सब ने मिल कर राजा साहब को उठाया और महल सरा में लाये—उनकी हालत देखकर कुल शहर में कुहराम मच गया। सिविल सर्जन मसरूरनगर और असिष्टण्ट सर्जन फौरन् बुलाये गये, जहां तक मुमकिन था कोशिश की गई कोई इलाज कारगर न हुआ—डाक्टर साहब ने देखतेही कह दिया कि उम्मेद शफ़ा फ़जूल है दिमाग़ में सख़ चोट आई है—चन्द घंटे के राजा साहब दुनिया में मेहमान हैं। डाक्टर का बयान सच हुआ और आफ़ताब गुरूब होते होते राजा साहब का आफ़ताब हयात भी गुरूब होने लगा दफ़तन् राजा साहब ने सब मुलाज़मीन को बुलाया—

राजा साहब—भाइयो मैं तुमसे रुखसत होता हूं तुम सब मेरे दोस्त और अजीज थे, तुमने निहायत वफ़ादारी और ख़ुलूस से मेरे [illegible] मेरे फ़ायदे को अ[illegible] रंज को अपना रं[illegible] शुक्रिया अदा करता हूं—अफ़सोस मैं अब ज्यादा दुनिया में नहीं रह सकता, और न तुम्हारी वफ़ादारी और खैरख्वाही का कोई ईनाम दे सकता हूं—हिकमत-अली खां! देखो साबिरः को और अपने मुलाज़मीन और अपनी रियासत को तुम्हारे सुपुर्द करता हूं—मेरी पूरी ख्वाहिश वसीअतनामे में दर्ज है उसको आज ही दफ़र रजिष्टरी से मँगवाकर देखना और जहां तक हो सके उसकी तामील करना, मेरी रूह तुम्हारी निगरां रहेगी। ऐ दोस्तो और ऐ भाइयो मैं तुम से फिर एक मर्तबः रुखसत होता हूं मेरी तकसीरात और खताओं को मुआफ़ करो, अस्सलाम अलेकम अलविदा, अलविदा, लाइला अल्लाहः—

बस इस कद्र कहने पाये थे कि "महम्मदअर्रसूलअल्लाह" आहिस्ताः २ कहते हुए तामये अजल हो गये। उस वक्त की हालत एक अजीब हालत थी—कुल ज़मीन व आस्मान में सिवा आह आह के दूसरा सुनाई न देता था तमाम शहर मातम सरा हो रहा था—हर फ़र्द बशर

[illegible] –आली-
[illegible] की हाथमें
[illegible] अक्सर
[illegible] अपना [illegible] तमाम कर रहा
थी, [illegible] और [illegible] की बेकसी और
मुलाज़मीन रियासत की हालत, [illegible]
सामर: की बेज़ुबान अर्थात् क़यामत बर्पा
कर रही थी।

सैय्यद हिकमतअली ने उस वक्त तजहीज़ व तकफ़ीन का सामान किया, उलमा और मुज़व्वहदीन जमा हुये, गुसल मैय्यत होकर निहायत आलीशान जमाअत से नमाज़ जनाज़ा अदा हुई और दस बजे रात को सुपुर्द ज़मीन किये गये।

दूसरे रोज सुबह को रजिष्टरी के दफ़्तर से वसीअतनामा निकलवाया गया मज़मून हसब ज़ैल था–

वसीअतनामा।

मैं मुनीअरअलीखां अपनी खुशी व रजामन्दी से यह वसीअत करता हूं–बाद मेरे वफ़ात के इसी के मुताबिक अमल किया जाय –

(१) मैं अपना कुल इलाका और जायदाद ग़ैर मनकूला अपनी बेटी साबिर: और उस के शौहर हिकमतअलीखां को देता हूं, सिवाय उन के दूसरा कोई हकदार न होगा।

(२) इन्तिज़ाम रियासत बजरिये एक कौंसिल के होगा जिस में चार मेम्बर शरीक होंगे और एक मीर मजलिस – हिकमतअली खां मीर मजलिस रहेंगे और दो हिन्दू और दो मुसल्मान जिनको मेरी रिआया के सर्गना मुन्तखब करें मेम्बर होंगे – कुल इख्तियारात रियासत व हुकूमत कौंसिल को हासिल रहेंगे।

(३) मेरे जांनशीन का फ़र्ज़ होगा कि हमेशा वृटिश गवर्मेण्ट और उस के हुकाम की खैरख्वाही और अतायत को मुकद्दम समझें, कुल अमूर में हुकाम वक्त से मश्विरा लेकर कारबन्द हो – बेहतरी रिआया और सर्सब्ज़ी रियासत को अपने जाती ऐश व आराम पर मुकद्दम रखे, रिआया से ठीक वही वर्ताव करें जैसा कि अपनी खास औलाद से – अगर कोई शख्स मेरी रिआया को सतायेगा तो मेरी रूह को सदमा पहुंचेगा।

(४) मेरे मुलाज़िम जो इस वक्त हैं बदस्तूर रहेंगे, बहालत ज़ईफ़ी वह निस्फ तनख्वाह बतौर पेन्शन् के पायेंगे और बहालत सर्ज़द होने किसी सख्त खता के कौंसिल के हुक्म से बर्खास्त हो सकेंगे। मेरे मुलाज़मीन को लाज़िम है कि मेरे जांनशिन की अतायत और फर्माबर्दारी वैसीही करें जैसी मेरी करते थे –

(५) मेरी रियासत में हिन्दू मुसल्मानों का झगड़ा कभी नहीं हुआ और मुझ को उम्मेद है कि आइन्दा भी कभी न होगा मगर मैं अपने जानशीन को वसीअत करता हूं कि वह हमेशा बाहमी मेल हिन्दू और मुसलमानों का बढ़ाने की कोशिश करे, मज़हबी ताअस्सुबात से बिलकुल अलग रहे और सब से इन्साफ और मुलायमीयत का वर्ताव करे – जब तक मुअज़्ज़िन और सर्गना लोगों की शह नहीं होती अवाम किसी हंगामे की जुर्रत नहीं करते –

(६) तकरीबात में फ़ज़ूलखर्ची हर्गिज़ न की जाय, कौंसिल खजाने की हालत देखकर हमेशा

हर तकरीब के लिये एक रक़म् तजवीज कर दिया करैगी और उसी के अन्दर इखराजात होंगे इस्में अगर मेरी अदूलहुक्मी होगी तो मैं कयामत में दामनगीर हूंगा –

(७) अगर कौंसिल नालायक साबित हो और रिआया को तकलीफ़ दे, रिआसत को बर्बाद करे, या हिकमतअली लायक मीरमजलिस के न निकले तो रिआया कसरत राय से हुक्काम वक्त को दर्खास्त देकर दूसरी कौंसिल मुकर्रर करे, और हिकमतअली को ताअल्लुक इन्तिजाम से अलग करदे, उन को सिर्फ ५ हजार रुपया माहवार और अलाउन्स मिला करैगा और कुल इन्तिजाम मेरी रियासत का मुताबिक राय रिआया के होगा –

(८) डिप्टी कमिश्नर जिला वक्तन् फ़वक्तन् मेरी रियासत के निगरां रहैंगे और कौंसिल को ज़ुरूरी मश्विरा और मदद से महरूम न रक्खेंगे।

(९) मेरे जारी किये हुये स्कूल, शफ़ाखाना, खैरातखाना, मदर्सांजात सनअत व हिर्फ़त व दस्तूर कायम रहेंगे और उनको रौनक देना कौंसिल का फ़र्ज होगा – जो सालियाना चन्दा कि महमदन कालेज और यतीमखाना बरैली और रामजे हास्पिटल के लिये मैंने मुकर्र किया है वह बन्द या कम न किया जायगा –

(१०) जो अखबारात रियासत में इस वक्त ख़रीदे जाते हैं वह बन्द न किये जायंगे ।

(११) आठ लाख रुपये के प्रामेसरी नोट मेरी रियासत में है उसमें से चार लाख के नोट ब दस्तूर रियासत में रहेंगे – चार लाख रुपये में राजा दियानतहुसैनें असिस्टण्ट कमिश्नर जहानाबाद को (जिनको मैं दिल से अज़ीज़ रखता हूं) मैं आखिरी तोहफ़ा देता [illegible] न कर सकें तो मैं [illegible] होऊंगा –

इस वसीअतनामे [illegible] लत के डरसे उसकी पूरी नक़ल के रूबरू पेश नहीं करते—ग्यार[illegible] दफ़ा के मुलाहिज़े से मालूम होगा कि मरने वाले को दियानतहुसैन के साथ किस क़द्र मुहब्बत थी— हिकमतअली ने राजा दियानतहुसैन को उस वक्त तार दिया जिस में राजा मुनौअरअलीखां के इन्तकाल और वसीअत का तज़किरा दर्ज था ॥

—***—

चालीसवां बाब।

दियानतहुसैन की वे शान व कमान अमीरी।

स्टार आफ़ इण्डिया के ख़िताब पाने के बाद जहानाबाद में हमारे दोस्त मि: दियानतहुसैन के मुतअल्लिक ऐसे उमूर बहुत नहीं हुये जो इस किताब में दर्ज करने के लायक होते—सर्कारी दफ़्तरों और महकमों की ज़ुरूरी इस्लाह के बाद मीर दियानतहुसैन ने सोशियल इस्लाहों की तरफ़ तवज्जह की और तमाम रऊसाय व तालीमयाफ़्ता हज़रात की मदद से तखफ़ीफ़ मसारिफ़ शादी व इन्सदाद शादी कमसिनी की कमेटियां क़ायम कीं

इत्तिफ़ाक़ उम ... के सबब से सिवा ज... दूसरा फ़ायदा न था खुशी खुशी तर्क कर दिया, अलावा इसके दियानतहुसैन की कोशिश से एक ज़नाना अस्पताल क़ायम हुआ जो लेडी डफरिन् के नाम से मुकर्रर किया गया — पर्दनशीन औरतों का उसमें इलाज होता था, और सद्हा शरीफ़ज़ादियां जो पहिले बवजह न होने किसी ज़नाना अस्पताल के बेवक़्त मर जाती थीं हंसी खुशी इलाज करातीं और सेहत पाती थीं।

एक क्लब भी दियानतहुसैन ने क़ायम किया जिसमें हर रोज़ शाम को हिन्दोस्तानी शुर्फ़ा और अंगरेज़ जमा होकर बेतकल्लुफ़ाना हँसते खेलते थे—और दोस्ताना मरासिम बढ़ाते थे—इस क्लब का नाम हमारे दोस्त ने ब्राउनक्लब रक्खा था, मि: ब्राउन डिप्टी कमिश्नर ने उसके क़ायम करने में बहुत दिलचस्पी ज़ाहिर की थी और क़रार वाक़ई मदद दी थी—इस क्लब में एक रोज़ शाम को सबलोग जमा थे क्रिकेट हो रहा था इतने में एक तारघर का चपरासी आया और दियानतहुसैन को लिफ़ाफ़ा दिया—

दियानतहुसैन—यह बेवक़्त तार कहां से आया?

डिप्टी कमिश्नर—कोई सर्कारी तार होगा खेल के बाद खोलना—

सुपरिण्टेण्डेण्ट—नहीं तार अभी देख लो शायद कोई ज़रूरी बात हो।

डिप्टी कमिश्नर—मैं तो तार से ऐसा घबराता हूं जैसे कोई जँगली कुत्ते से डरता हो—

इतने में दियानतहुसैन ने लिफ़ाफ़ा खोला, तार पढ़ा और सर पकड़कर आह करके ज़मीन पर बैठ गये और तार डिप्टी कमिश्नर की तरफ़ फेंक दिया कि वह पढ़ लें— "Raja Munaur Ali Khan died yesterday and left a legay of four lacs for you. All state and property left for his daughter and myself. यानी "राजा मुनौअरअली खां ने कल इन्तिक़ाल किया और चार लाख रुपया वसीअतनामे में आपके लिये हिदायतकर गये हैं, बाक़ी तमाम रियासत और माल अपनी दुख़्तर व मेरे नाम लिख गये"।

डिप्टी कमिश्नर—अफ़सोस! राजा मुनौअरअली ख़ां मर गये, बहुत उमदा आदमी थे—

सुपरिण्टेण्डण्ट—हा [illegible] अफ़सोस ! [illegible] हुत बड़ा शख़्स उठ गया—

डाक्टर—उनकी रियासत [illegible] बहुत [illegible] और निहायत उमदा इन्तिज़ाम था, मैं एक मर्तबा उनका मेहमान रह चुका हूं।

बाबू जैप्रकाश—मुझको भी एक मर्तबा उनसे मिलने का इत्तिफ़ाक़ हुआ था, बहुतही अच्छे ख़्यालात के आदमी थे, मज़हबी ताअस्सुफ़ तो उन्हें नाम को भी न था—देखिये मुहर्रम दशहरा के सब जगह झगड़े हुये, न हुये तो राजा मुनौअरअली खां की रिआसत में—

डिप्टी कमिश्नर—क्या दियानतहुसैन से उनसे कुछ क़राबत् थी ? चार लाख रुपया मरते वक़्त दे गये ! यह अजब मौक़ा था; दियानतहुसैन के दौलत पाने से तो सब लोग खुश थे और बेइख़्तियार मुबारकबाद देते थे, मगर राजा साहब की वफ़ात से सब को रंज था और दियानतहुसैन को मग़मूम देखकर किसी को जुरत न होती थी कि उस वक़्त कुछ भी इज़हार मसर्रत किया जाय दियानतहुसैन देर तक मग़मूम बैठे रहे और बेइख़्तियार रोते रहे। उनको इस [illegible] रंज हुआ [illegible] [illegible]

डिप्टी कमिश्नर—[illegible] दियानतहुसैन [illegible] [illegible] ज़िन्दगी कोई अख़्तियारी बात नहीं है फिर उसके लिये इतना रंज क्या? जो खुदा की मर्ज़ी हो उसकी तामील करना चाहिये।

बाबू जैप्रकाश— राजा साहब ! देखिये अपने को सम्हालिये, बेशक आपको बहुत सदमा है लेकिन मर्द की तरह इस रंजको बर्दाश्त कीजिये।

दियानतहुसैन— मैं सच कहता हूं कि आज तक मैंने कभी अपने को तनहा नहीं जाना। मुनौअरअली खां मर्हूम की इमदाद पर मुझको हमेशा क़ूवत रही, अफ़सोस !

बाबू जैप्रकाश—यह सब दुरुस्त है मगर खुदाकी मर्ज़ी में किसी का क्या चारा? —जो उसकी मशीअत हो; हमेशा कोई नहीं रहेगा।

अलगर्ज़ मीर दियानतहुसैन को उस रोज़ सभोंने समझाया और देरतक तस्कीन की बातें करते रहे—पांच रोज़ में जब दियानतहुसैन का रंज किसी क़द्र कम

...ख़सत ...ज़ीत ...ाभाला कौंसिल ... निगरानी में मुन्तख़ब कराई और रियासत का कुल कारोबार बख़ूबी चलने लगा — सैय्यद हिकमतअली खां भी आदमी फ़हमीदा और लायक थे दियानतहुसैन को उन पर पूरा भरोसा था और इसकी पूरी उम्मेद थी कि राजा मुनौअरअली खां का घर उनकी हिकमत और अक़ल के सबब से हमेशा मुनौअर रहेगा—

यहां से लौट कर दियानतहुसैन ने विलायत जाने के इरादे को बिलकुल मज़बूत कर लिया।

—***—

इकतालीसवां बाब।

...फ़र ...तन्द मुबारकबाद।

बसलामत रवी व बाज़ आई॥

हम यह पहिले अर्ज़ कर चुके हैं कि मि: दियानतहुसैन विलायत जाने को बिलकुल तयार थे—सिर्फ़ रुपये की कसर थी। अलहम्दुलिल्लाह यह माना भी अब न रहा और उन्होंने फ़ौरन् दो साल की दर्ख़ास्त रुख़सत करदी, और मि: पिटर्सन् को इत्तला दी कि जिस तारीख़ को यह रवाना होनेवाले हों उसी तारीख़ से उनकी भी रुख़सत मंज़ूर की जाये। डिप्टी कमिश्नर जहानाबाद को उनकी जुदाई अज़हद शाक़ थी लेकिन मजबूरी थी। दियानतहुसैन अपने इरादे में ऐसे पक्के थे कि यह किसी तरह टाल न सकते थे। गवर्मेण्ट ने फ़ौरन् रुख़सत मंज़ूर की और मि: दियानतहुसैन ने सफ़र की तैय्यारियां करनी शुरू कीं। १२ नवम्बर को बम्बई से रवानगी करार पाई और यह तै हुआ कि बम्बई में मि: पिटर्सन् उनको मिलें। मेसर्ज़ हैनेस किङ्ग ऐण्ड को की मार्फ़त स्टीमर वग़ैरह सब तै हो गया और एकुम् नवम्बर तारीख़ रवानगी जहानाबाद में मुकर्रर हुई। तमाम यूरोपियन अफ़सरों ने मि: दियानतहुसैन का रुख़सती डिनर दिया और बाशिन्दगान ज़िला जहानाबाद ने २१ अक्टोबर को सैयद दियानतहुसैन का जल्सा अलविदा और डिलर किया उस जल्से में तमाम रऊसाय वकला अम्माल और हुक्काम शरीक थे और एक सोने की किश्ती में ज़ेल की इबारत का एड्रस पेश किया गया।

बहुज़ूर राजा दियानतहुसैन सी. यस. आई. ज्यायेंट मजिष्ट्रेट जहानाबाद—

हम लोग बकमाल रंज आपको अल्विदा कहते

है और आपको [illegible] रुखसत करने जमा हुये हैं। आप [illegible] बरस तक हमारे जिले में कलक्टरी रहे और जिस वक्त आप तशरीफ लाये थे [illegible] नहीं कि जिला एक अजीब हालत में था, रिश्वत का बाजार गर्म था और कोई अहल [illegible] जिमीदार ऐसा न था, जो कचहरी आते वक्त मग़मूम और परेशान न होता था—

आपने अपने इखलाक़, इन्साफ़ और बेदारमग़ज़ी से वह सब कबाहतें दूर कीं और हम लोगों में अपना ऐसा एतबार जमा लिया कि अब किसी को जरा भी कचहरी आने में पशोपेश नहीं था॥

दफा २—आपके इन्तिजाम ने सिर्फ़ यही नहीं किया कि आपकी खुद कचहरी में सब को आराम मिला बल्कि आपकी खुशइन्तिजामी और निगरानी से तमाम जिले में रिश्वत का इन्स दाद हो गया, और अब तमाम अदालतों में हर शख़्स ब इत्मीनान तमाम आता है और हँसी खुशी वापस जाता है न मुद्दई को यह खौफ है कि मुद्दाला अमीर है आर न मुद्दाले को यह खुशी है कि मुद्दई गरीब है। यह सब इन्तिजाम आपकी लियाकत और बेदारमगजी से हुआ।

आपने अपनी कोशिश और शौक से ब्राउन क्लब और जनाना अस्पताल जो इस शहर में कायम किये हैं वह हमशा के लिये आपके यादगार रहेंगे। उनसे जो फायदा पहुँच रहा है हम सब आपके दिली एहसानमन्द हैं।

लोगों क[illegible]

कि हम लो[illegible]

हम लोगों को आपसे एक दिली [illegible] हो गई और हम इल्तिमास करते हैं कि आप हमलोगों को हमशा याद रखेंगे।

हम लोगों को उम्मेद है कि आप बाद सफ़र विलायत किसी और मुअज़िज़ वहदे पर लौटेंगे और उस वक्त हमारी तमन्ना है कि आप इस जिले को न भलेंगे।

इस ऐड्रेस पर क़रीब क़रीब हज़ारों आदमीयों के दस्तख़त थे और जिस जोश के साथ लोग सैय्यद दियानतहुसैन को रुख़सत करने जमा हुये थे, उस्की कभी तवक्क़ः न थी। आम तौर पर यह मालूम था कि ख़िलक़त दियानतहुसैन के ख़िलाफ़ है लेकिन अब साबित हुआ कि सिर्फ़ वेही चन्द लोग जिनको उनसे नुक़सान पहुँचा था उनके दुश्मन थे और आम रिआया उनकी क़द्र करती थी और दिल से ख़ैरख़ाह थी—

मि: दियानतहुसैन ने इस ऐड्रेस का यह जबाब दिया—

बकला, जिमीदारान् व रऊसाय ज़िला जहानाबाद।

[illegible] का-
[illegible] आज
[illegible] हुआ । मैं
तहेदिल से [illegible] शुक्रगुज़ार हूं कि
मेरे रुखसत करने की तकलीफ़ आपने गवारा फ़र्माई —

आपने मेहर्बानी से मेरी उन नाचीज़ ख़िदमात् का तज़किरा किया है जो मैंने जहानाबाद में अंजाम दी । जेण्टिलमैन ! वह खिदमात हर्गिज़ इस काबिल न थीं कि उनका तज़किरा किया जाता — मैंने जो कुछ किया वह अपनी कौम और अपने मुल्क की फ़ायदारसानी की गर्ज़ से किया आपलोग हमारे भाई हैं और हिन्दोस्तान हमारा घर है इसवास्ते मेरा दिल कभी इस बात को गवारा नही करता कि मैं एक भाई का बर दूसरे जाबिर भाई के हाथों बर्बाद होने दूं—मुझको खौफ़ था कि राजा जहानाबाद के मुकद्दमे ने [illegible] को मुझसे बद्दम् कर दिया होगा, लेकिन आज वह शुबहा मेरा रफ़ा हुआ और मैं खुदा का शुक्रगुजार हूं कि जिस्तरह गवर्मेण्ट ने मेरी खिदमात पसन्द फर्माई उस्तरह आपलोग भी मुझसे राज़ी रहे —

आप यकीन कीजिये कि अगर राजा साहब बेजुर्म होते तो मैं उनकी पूरी मदद करने को तयार था लेकिन उनकी मुजरिमी ने मुझको मजबूर किया और इसी वजह से मैं कोई मदद उनकी न कर सका । हमारी आदिल गवर्मेण्ट का यह उसूल नहीं है कि अमीर आदमी गरीबों को शिकार किया करे । इस राज में और कानून के सामने अमीर और गरीब सब बराबर हैं और यही सबब है कि बृटिश गवर्मेण्ट में इस कद्र अमन है जो आजतक हिन्दोस्तानियों को [illegible] न हुआ था —

जेण्टिलमेन, आपने जो ब्राउनक्लब और डफ़रिन अस्पताल का तजकिरा फ़र्माया उस्की निस्बत भी मुझे चन्द अलफ़ाज़ कहने हैं—अंग्रेज़ और हिन्दोस्तानियों में से सोशियल मेल जोल की ज़रुरत रोज़ बरोज़ बढ़ती जाती है । मेरे नज़दीक हर तालीमयाफ्ता हिन्दोस्तानी का यह फ़र्ज होता जाता है कि यह उस्की तरक्की में कोशिश करे—जबतक इंगलिश कोम से हमारी पूरी और बेतकल्लुफ़ दोस्ती न होगी हम कभी अपने इरादों में कामयाब नहीं हो सकते । मुझको उमेद है कि आपलोग इस क्लब को हमारे हरदिलअज़ीज़ डिप्टी कमिश्नर की निशानी समझ कर ज़रूर अज़ीज रक्खेंगे — डफ़रिन् अस्पताल उस मुबारक लेडी के यादगार में कायम हुआ है कि जिसने पांच बरस में वह एहसानात हिन्दोस्तानी औरतों पर किये कि जिनकी नज़ीर तावारीखों में मिलना दुश्वार है, उस्से जो फायदे पहुँच रहे हैं उस की काफ़ी शहादत है कि यह इंस्टिट्यूशन मह[illegible] दिलखुशकुन् नहीं है बल्कि अज़बस ज़रूरी [illegible] मुफ़ीद है ।

जेण्टिलमैन, मैं अभी नही कह सकता कि विलायत से वापसी के बाद में कहा जाऊंगा और क्या करूंगा। मेरा इरादा है कि मैं इंगल्याण्ड में बैरिष्टरी का इम्तिहान दूं-हुजूर कैसरेहिन्द और सेक्रटरी आफ ष्टेट से मिलूं-हिन्दोस्तान के एजाज जहां तक मुमकिन हों अदब के साथ उसके मालिक के सामने पेश करूं और इस ज़रिये से अपने मुल्क को फायदा पहुंचाऊं। बहर हाल जो कुछ मेरे नाचीज हाथों मे है हमेशा आपलोगों के वास्ते करने को तैयार हूं और अब मैं आप से रुख़सत होता हूं और खुदा हाफ़िज़ कहता हूं।

दो बजे शब तक यह जल्सा रहा और हज़ारहा आदमीयों का मजमा था रोशनी और आराइशात का बहुत उमदा,

इ[illegible]

हिन्द। [illegible]

या गया [illegible]

लोग रुखसत हु[illegible] [illegible] दियानतहुसैन वहां से रुखसत हो कर गाडी पर सवार होने लगी बे इख़्तियार उनकी आंखों से आंसू गिर पड़े—

की छेड़ इस कदर ग़मे फ़ुर्क़त की ख़ार ने
घवरा के रो दिया दिले बेइख़्तियार ने—

दूसरे रोज़ मेल ट्रेन मे राज दियानत-हुसैन खां बहादुर जहानाबाद से रवाना हो गये और बम्बई में मिसेज़ व मि: पिटर्सन् से मिले और वहां से रवाना इङ्गिलस्तान हो गये॥

—○✻○—

इति।

सूचीपत्र ।

[illegible] बनारस के भारतजीवन छापेखाने में मिलेगी ।

—○*○—

कलिकालकौतुकरूपक – अहा हा ! हा ! क्या कहना है, देखनेही लायक चीज़ है, हंसी और शिक्षा की शिक्षा ! दाम बहुतसी थोड़ा केवल ≋) क्या इसी को सभ्यता कहते है ? यह नवीन शिक्षादायक नाटक है इसके पढ़ने से विदित होगा कि आज कल के कोई २ नवीन उभड़े हुये किसे सभ्यता कहते हैं और उनके कैसे निकृष्ट आचरण हैं अब तो ≋) खर्चो यदि अब भी न लोगे हम कहैंगे कि क्या इसी को सभ्यता कहते हैं ? कृष्णाकुमारी नाटक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा लिखित (यह अपूर्व नाटक भी देखनेही योग्य है शृङ्गार और करुणा दोनों रसों का मानों आदर्श [illegible] है । इसके पढ़ने से पाठकों को जान पड़ेगा कि आर्य्यकुल की स्त्रियां किस प्रकार प्राण समर्पण करके धर्म्मरक्षा करती थीं । शिक्षा और नीति इसके प्रत्येक अङ्ग से झलकती है विशेष कहना व्यर्थ है । दाम केवल ॥)

ग्रामपाठशाला और निकृष्ट नौकरी नाटक ≋)

जयनारसिंहकी (इस पुस्तक के छपने से ओझों और नौतिओं का रोजगार मारा गया । हमारा क्या गया थोड़ा काग़ज़ थोड़ी स्याही आप का क्या गया ? दो आने पैसे ! लीजिये न फिर) ≋)

ठग्गी की चपेट बग्गी रपेट (नाटकाभास) /)

धनंजयबिजय नाटक (बाबू हरिश्चन्द्र कृत) ≋)

नाटक (नाटकों के रचना के भेद) ।≋

नरेन्द्रमोहनी उपन्यास (बाबू देवकीनन्दन कृत) ॥)

वृद्धावस्था विवाह नाटक (बड़ी दिल्लगी है) /)

बाल्यविवाह नाटक (नामही से समझ लीजिये) /)॥

बूढ़े मुंहमुंहासे लोग देखें तमासे, प्रहसन (यह ग्रंथ हास्य रस का है यदि देखने की इच्छा हो तो ≋)॥ महसूल समेत भेककर लीजिये । ग्रन्थ की प्रशंसा क्या करैं यदि पसन्द न हो और हास्यरस का अंकुर पाठकों के मन में न जगे और शिक्षा भी न मिले तो दाम लौटा दें) मूल्य केवल ≋)

प्रबोध चन्द्रोदय नाटक (प्रसिद्ध है) ॥)

पद्मावती नाटक (बाबू रामकृष्ण वर्म्मा लिखित यह अत्यन्तही मनोहर नाटक प्रत्येक अंगों से पूरित बस देखनेही योग्य है) ।=)

प्रद्युम्न विजय वियोग (हालही में छपा है) ।)

महाअन्धेर नगरी नाटक (न लेसो पछताय) ।)

वीरनारी (ऐतिहासिक नाटक) बाबू रामकृष्ण वर्म्मा लिखित शृङ्गार, करुणा और हास्यरस के तो अनेक नाटक देखे होंगे, एक बेर इस बीर रस के नाटक को तो लीजिये, जिस के पढ़तेही तबीयत फड़क उठे) ।=)

सती नाटक लाला उदित नारा[illegible] लाल वर्म्मा [illegible] लिखित (यह नवीन और उत्तम ना[illegible]टक स्त्रियों की शिक्षा योग्य है) ॥)

स्वर्णलता उपन्यास (यह गृहस्थी का उपन्यास है इस में देवरानी जेठानी का आत्मस्वार्थ और भाई भाई में विद्वेष गृहस्थी के तैसनैस का ऐसा उत्तम चित्र लिखा है कि आंखें खुल जाती हैं इस के पढ़ने से एक प्रकार की शिक्षा भी प्राप्त होती है) ॥)

रामकृ[illegible] करना व्यर्थ है

है कि इस की मांग चारो ओर से आ रही है ॥)

कमलिनी उपन्यास ।)

ठगवृत्तान्तमाला चारो भाग बाबू रामकृष्ण वर्म्मा लिखित (जिस में अमीर अली नामक प्रसिद्ध ठग का वृत्तान्त बड़ी उत्तमता से छापा गया है इस ठग का वृत्तान्त अंग्रेजी तवारीखों में भी पाया जाता है बहुत प्रशंसा करना व्यर्थ है एक बार मँगाकर देख तो लीजिये ३)

दीपनिर्वाण प्रथम भाग (दिल बहलाने का बहाना, सच्चे [illegible] इतिहास [illegible]ना खजाना, आर्य्य वंशधारियों का शिथिल हो जाना और महाराज पृथ्वीराज के समय भारत पर मुसल्मानों का दांत लगाना तथा आर्य्यवंशियों के भाग्य के चिराग़ का बुझ जाना इस दीपनिर्वाण का बताना है मूल्य प्रथम भाग ।=)

" " द्वितीय भाग ।=)

नीतिकुसुम (प्रथम खण्ड गुलिस्तां का भाषानुवाद) =)

प्रणयिनी परिणय उपन्यास =)